शिक्षा सूक्ति मुक्तावली

ŚIKṢĀ SŪKTI MUKTĀVALĪ

डॉ. नोद नाथ मिश्र

अमर ग्रन्थ पब्लिकेशन्स
दिल्ली-9

शिक्षा सूक्ति मुक्तावली

ŚIKṢĀ SŪKTI MUKTĀVALĪ

डॉ. मोद नाथ मिश्र

शिक्षा सूक्ति मुक्तावली

ŚIKṢĀ SŪKTI MUKTĀVALĪ

डॉ. नोद नाथ मिश्र
पूर्व उपशिक्षा सलाहकार (संस्कृत)
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
उच्चतर शिक्षा विभाग
भारत सरकार

अमर ग्रन्थ पब्लिकेशन्स
दिल्ली-9

अमर ग्रन्थ पब्लिकेशन्स
8/25-ए, विजय नगर, दिल्ली - 110009
फोन - 9871699565

© सर्वाधिकार लेखकाधीन

प्राप्ति स्थान :

डॉ. नोद नाथ मिश्र
सी-180, द्वितीय तल, हरि नगर, नई दिल्ली-110064
M : 9899110375
email : mishranodnath@yahoomail.com

प्रथम संस्करण : 2014

ISBN : 81-87322-78-0

मूल्य : ₹ 300/-

मुद्रक :

नील एडवर्टाइज़िंग, दिल्ली-93
8802451208

FOREWORD

Sanskrit literature is rich with profound thoughts and practical wisdom pertaining to the different aspects of our everyday life. Vedas, Upaniṣads, Purāṇas, Itihāsas of our Smṛities as also the rich literary work of great scholars contain a large number of significant statements setting out manyuseful and universally valid principles and messages. We have to only present the statements in a manner which would be appealing to the modern readership. It is only when the knowledge and the insights available in the classical Sanskrit literature is communicated to the modern society that Sanskrit can be brought back to its centre stage of glory and mass acceptance.

The field of education has always been one of most crucial features of our heritage. The main message of our philosophical thoughts has been that it is only through the path of knowledge and learning that one can realise the status of peace and bliss. It is also stated that if one is not endowed with education then one is supposed to be leading a life of an animal. Even in the modern world, while emphasising the importance of rapid economic develpments, the role of education and knowledge has been recognised as the most strategic factor. It is also recognised in theory and practice that any country or society which is not endowed with a large educated population cannot achieve rapid economic development. Education is an asset for each individual enabling him to realise a peaceful and blissful life.

It is in this background of importance of education recognised both in our traditional Sanskrit literature and also in the context of modern world that this compilation of quotations on education, takes out from sanskrit literature, done by Dr. Nod Nath Mishra deserves great commendation. I was greatly impressed by the diversity and the richness of the compilation dealing with the different aspects of the field of education. Dr. Nod Nath Mishra has put in a lot of efforts in picking out the relevant quotations from the various sources such as Vedas, Upaniṣads, Pañcatantra, Nītiśataka, Subhāsitasangraha, Mahābhārata, Caṇakyanīti, Kālidāsagrathas etc. He has arranged quotations in different parts as Jnānakhaṇḍa, Ācaryakhaṇḍa etc. He has provided the translation of the quotaions in chaste Hindi and in simple English. I feel that this compilation would be of great use to the students and teachers of Sanskrit. This book provides ready material to scholars and public leaders who would like to use relevant quotations from the Sanskrit literature when they are delivering their lectures on different occasions.

The classical wisdom recognises education and learning as a great asset and embellishment for each individual. Realisation of truth was advocated as the main purpose of learning. Every member of the society was prompted to take to the path of learning. It is only through the benevolence of the divinity that every individual can acquire knowledge and through the path of knowledge the status of bliss. There are many impediments to the pursuit to the path of knowledge. Greed, anger, poverty, impurity of thought, arrogance, are all factors that take an individual away from the path of knowledge. It is only when a student surrenders himself at the feet of a guru that he becomes eligible for acquiring knowledge. Taittiriya

Upaniṣad prescribes to the students a set of values that they should pursue through out their lives after leaving the university. It is almost like a convocation address delivered by the chancellor of a University. The student is mandated to always speak the truth, pursue the righteous path, continue his studies, to be thankful to his elders and gurus, respect the mother, father, preceptors and the guests and to avoid all prohibited actions in life. What a profound assertion of values of life which are extremely relevant even today! The teacher is projected as the most important asset of the society. The education policy of the goverment should be such as to provide the education facilities to one and all. The rules and the values that should govern both the students and the teachers constitute an important part of the education policy to be pursued by any institution.

I have just put together in the previous paragraphs some of the important messages that are important messages that are contained in the various quotations that are compiled by Dr. Nod Nath Mishra in this extremely valuable book on quotation. I am sure that the readers would find many more interesting and useful inferences of values that can be drawn from this book. I strongly commend this book to all those who are concerned with the field of education and Sanskrit.

V.R. Panchamukhi
Chancellor
Rashtriya Sanskrit Vidyapeetha, Tirupati

प्रस्तावना

संस्कृत वाङ्मय की प्रमुख विशेषताओं में इसकी काव्य-माधुरी सर्वप्रमुख है, इसका एक कारण यह भी है कि यह मानव के हृदय-पटल का सहजता से स्पर्श करती है । अनिवार्य रूप से इसमें एक लय विद्यमान होता है जो संस्कृत भाषा की अपनी विशेषता है । छन्दोमय काव्य में तो गणों या मात्राओं की गणना के आधार पर विराम आदि पर विशेष ध्यान होता है तथा छन्दोमुक्त या गद्यात्मक काव्य में भी जिसमें गण या मात्राओं के परिसीमन का नियम नहीं होता है, में भी एक लय होता है जो मानव की प्रकृति के अनुसार वैचित्र्य पैदा करता है । वस्तुतः संसार की प्रत्येक वस्तु का अपना एक लय होता है, उपवन की शीतल समीर, नदी का नीर, सूर्योदय-सूर्यास्त की छटा, पक्षियों का कूजन, भौरों का गुंजन, सर्वत्र लय ही लय है । लय सम्पूर्ण संसार में व्याप्त है । इसलिए मानव हृदय ही नहीं, पशु-पक्षी भी लय में अपने आपको सहजता से विलय कर लेते हैं ।

सुभाषित किसी भी प्रकार से और किसी भी भाषा में कहे जायें वे अत्यन्त प्रभावोत्पादक होते हैं । संस्कृत के सुभाषितों की तो प्रभावोत्पादकता सबसे बढ़-चढ़कर होती है, इसके कई कारण हैं । संस्कृत भाषा स्वयं में अत्यन्त वैज्ञानिक भाषा है, इसकी दिव्य ध्वनि मात्र सुनकर अर्थ विशेष से अपरिचित व्यक्ति भी प्रसन्न हो उठता है । जिसे संस्कृत भाषा का अभ्यास नहीं होता है, वह भी अपनी मातृभाषा के संस्कार से संस्कृत के सुभाषितों की अर्थच्छटा का आनन्द लेता है । प्रायः संस्कृत के सुभाषित अति सरल पदावली में निबद्ध होते हैं । भाषा की सरलता, वर्णों की कोमलता, पदों की मनोहरता एवं वाक्य की लयात्मकता समवेत रूप से संस्कृत के सुभाषितों में दृष्टिगोचर होती हैं । यही कारण है कि आबालवृद्ध एवं आगोपालकन्यकाविपश्चिद् सभी सुभाषितों से प्रसन्न होते हैं । निम्नलिखित, से भी जो इस संग्रह का प्रथम सुभाषित है, यही तथ्य प्रमाणित होता है --

सुभाषितेन गीतेन युवतीनां च लीलया ।
मनो न भिद्यते यस्य स वै मुक्तोऽथवा पशुः ॥

अर्थात् सुभाषित का प्रभाव सभी मानवों पर पड़ता ही है ।

संस्कृत वाङ्मय में सुभाषितों के संग्रह की परम्परा भी अति प्राचीन है । प्राय: विद्वज्जन संस्कृत के विभिन्न काव्यों से उत्कृष्ट पद्यों को अपने आनन्द के लिए चुनते हैं, जिसे बाद में लोककल्याण की कामना से प्रकाशित भी कर देते हैं । इसी परम्परा में अनेक सुभाषित संग्रह प्राचीन काव्य से तैयार किये जाते रहे हैं ।

डॉ. नोदनाथ मिश्र जी द्वारा संकलित एवं अनूदित इस शिक्षासूक्ति मुक्तावली की रचना का मूल उद्देश्य संस्कृत वाङ्मय में कवियों द्वारा ललित पदावली में वर्णित स्वानुभवों को हिन्दी-अंग्रेजी भाषा के माध्यम से अधिक व्यापक स्तर तक पाठक को पहुंचाना है, जिसे उन्होंने बड़ी सहजता से किया है । इस मुक्तावली को ज्ञानखण्ड, आचार्यखण्ड, शिक्षानीतिखण्ड एवं प्रकीर्णखण्ड नाम से चार खण्डों में विभाजित कर विषयविशेष की अपेक्षा से अध्ययन करने वाले जिज्ञासुओं के लिए सहज बोधगम्य बनाया गया है । सूक्तियों का चुनाव करते समय डॉ. मिश्र ने मानव जीवन की व्यावहारिक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करने वाली सूक्तियों पर दृष्टि रखी है, परिणामत: अत्यन्त उपादेय सूक्तियाँ ही इस संग्रह में चयनित हैं । इनमें सुभाषित के रूप में विभिन्न पाठ्य-पुस्तकों एवं व्यवहार में प्रचलित तथा वेद, उपनिषद्, पुराण, महाकाव्य, नीतिकाव्य, स्मृति, शिक्षा आदि प्रमुख स्रोतों से सूक्तियों का संग्रह किया गया है । अंत में प्रदत्त सूक्तियों की सूची इस संग्रह को और उपादेय बनाती है । मुझे आशा ही नहीं विश्वास है कि यह शिक्षासूक्ति-मुक्तावली सामान्य पाठक समूह के साथ-साथ संस्कृत के पाठकवर्ग के लिए भी अत्यन्त उपकारी सिद्ध होगी । मैं इसके संग्रहकर्त्ता डॉ. नोदनाथ मिश्र के सुख एवं उत्तम स्वास्थ्य की कामना करता हूँ और भगवान् से प्रार्थना करता हूँ कि उन्हें इसी प्रकार सारस्वत सवन में निरत रहने की असीम शक्ति प्रदान करें।

प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय
अध्यक्ष, शोध एवं प्रकाशन विभाग,
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ,
नई दिल्ली-110016

आत्मनिवेदन

वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ।।

संस्कृत वाङ्मय के कवियों और मनीषियों ने अनेक विषयों पर लेखनी चलाकर प्रखर कल्पना का प्रदर्शन किया है, जिनमें नीति-विषयक विशेष ग्रन्थ भी उपलब्ध होते हैं। इन नीति-ग्रन्थों में जीवन को सुखमय तथा लाभप्रद बनाने के लिए उपयोगी तथ्यों का उल्लेख किया गया है। नीतिशास्त्र हित-अहित विवेचन का शास्त्र है। इसका अध्ययन करने से अच्छे-बुरे का ज्ञान होता है। मानव जब दुर्नीति का आश्रय लेता है, तब समाज में नाना प्रकार की विकृतियाँ एवं विशृंखलाएं उत्पन्न होती हैं। अतः समाज की सुव्यवस्था, शांति और सुख के लिए सब का नीतिपरायण होना आवश्यक है। नीतिशास्त्र के ज्ञान से राष्ट्र के शासक (राजा) में प्रजा-पालन की बुद्धि उत्पन्न होती है और प्रजा (नागरिक) अपने कर्त्तव्यों में प्रवृत्त होकर सफलता प्राप्त करती है। नीतिशास्त्र के ग्रन्थों की अपनी एक विशिष्ट सुबोध शैली है। अपनी स्वाभाविकता के कारण नीति के कथन श्रोताओं के अन्तस्तल में पहुँचकर तुरन्त अपना प्रभाव जमाने मे समर्थ होते हैं।

नीतिशास्त्र के ग्रन्थों में महाभारत, मनुस्मृति, शुक्रनीति, चाणक्यनीति, विदुरनीति, विष्णुस्मृति, याज्ञवल्क्यस्मृति, नीतिशतक, नीतिसार आदि प्रमुखरूप से उल्लेखनीय हैं। उपदेशात्मक पशु-कथाएँ 'पञ्चतत्र' तथा 'हितोपदेश' जैसे ग्रन्थों में संकलित की गयी हैं, जिनमें व्यावहारिक राजनीति, मनुष्य के कर्त्तव्य, दैनिक जीवन तथा पारस्परिक संपर्क में होने वाली सामान्य बातों का वर्णन अत्यन्त मनोरंजक शैली में प्रस्तुत किया गया है।

भारतीय संस्कृति और चिन्तन की धारा में लोककल्याण की भावना समाहित रही है। अतएव नीतिग्रन्थों में चमत्कारपूर्ण सरस उक्तियों का पूर्ण समावेश है। ये उक्तियां जीवन के एक या अनेक पक्षों से सम्बद्ध हैं तथा व्यक्ति और समाज के निर्माण में महत्त्वपूर्ण मार्गदर्शन करती हैं। उनके लिए 'सदुक्ति' और 'सूक्ति'-ये दो शब्द प्रचलित है।। इन दोनों शब्दों के पर्याय के रूप में 'सुभाषित' संस्कृतभाषा के रत्न हैं, जो भारतीयों की ज्ञानपरम्परा की निधि हैं।

संस्कृत के कवियों, मनीषियों, रचनाकारों ने महाकाव्य, नाटक तथा अन्य शास्त्रीय कृतियों की रचना में अनेक सुभाषितों का प्रयोग किया है।

यद्यपि सुभाषित एक वर्णनात्मक प्रबन्ध, महाकाव्य या नाटक के अंग के रूप में सम्बद्ध हैं तथापि ये स्वयं में इतने स्वतंत्र और पूर्ण सार्थक हैं कि इनका प्रयोग, सम्बंधित रचना के सन्दर्भ की अपेक्षा किये बिना ही, होता आया है। यह निर्विवाद कहा जा सकता है कि 'सुभाषित' भारतीय साहित्य-निधि के महत्त्वपूर्ण अंश हैं। महाकाव्यों, लघुकाव्यों तथा मुक्तक रचनाओं के अतिरिक्त संस्कृत काव्य-परंपरा में असंख्य सुभाषित हजारों वर्षों तक वाचिक परम्परा में ही सुरक्षित रहे। सुभाषित या सूक्ति का आशय ऐसी रमणीय उक्ति से है जो एक पद्य में सम्पूर्ण हो और जिसका विषय कुछ भी हो सकता है। संस्कृतवाङ्मय में सुभाषित साहित्य ने विलुप्तप्राय संस्कृत काव्य की अमूल्य धरोहर को संरक्षित और अक्षुण्ण रखने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है।

वस्तुतः सुभाषितों की रचना की परम्परा संस्कृतवाङ्मय के आरम्भकाल से चली आ रही है, किन्तु इनके संकलनात्मक ग्रन्थों की रचना प्रायः 10वीं शताब्दी से प्रारंभ हुई। दसवीं शताब्दी से अब तक छोटे बड़े लगभग एक हजार से भी अधिक सुभाषित-संग्रह तैयार किये गये, जिनमें कुछ अप्रकाशित और अनुपलब्ध हैं। ''सुभाषितरत्नकोष'' संस्कृत साहित्य का सबसे प्राचीन उपलब्ध सुभाषित ग्रंथ है। बंगला के लब्धप्रतिष्ठ आचार्य पंडित विद्याकर कवि ने लगभग 1100 ई. में इस ग्रंथ का प्रथम संकलन किया। बाद में इसकी अपूर्ण प्रति महामहोपाध्याय

हरप्रसादशास्त्री को 1800 ई. के आस पास प्राप्त हुई, जिसका प्रकाशन 'कवीन्द्र-वचन-समुच्चय' नाम से डॉ. एफ.डब्लू. टामस के सम्पादनत्व में कलकत्ता से 1912 ई. में हुआ।

''सुभाषितरत्नभाण्डागार'' को सुभाषित ग्रंथों में अन्तिम माना जाता है। प्राचीन ग्रंथों के आधार पर संकलित सुभाषितों के इस ग्रंथ में दस हजार से भी अधिक सूक्तियों का संकलन किया गया है, जो संख्या की दृष्टि से सब सूक्ति-संग्रहों में विशाल है। इस ग्रंथ में अनेक विषयों की सूक्तियाँ, जिनके कवियों का नाम नहीं दिया गया है, विभिन्न रुचि वाले पाठकों के मनोरंजन के लिए पर्याप्त सामग्री प्रस्तुत करती है।

समान्यतः संस्कृत साहित्य कीं विभिन्न शास्त्र से सम्बन्धित ग्रंथों में उनके प्रतिपाद्य विषय के साथ-साथ रचनाकारों ने सूक्तियों का समावेश भी यत्र-तत्र किया है। संभवतः प्रारंभ में सूक्ति साहित्य के स्वतंत्र रूप से सृजन की विचारधारा विकसित नहीं हुई होगी। कालान्तर में एक ऐसा समय भी आया जब यह विचारधारा उभरी और भर्तृहरि के नीतिकशतक जैसे विशिष्ट विषय से सम्बन्धित सुभाषित संग्रहों की रचना होने लगी। भर्तृहरि के द्वारा नीतिशतक में नीति, श्रृंगार और वैराग्य सम्बन्धी सूक्तियों की रचना की गयी। सुभाषित साहित्य की विधा का आगे चलकर क्रमशः विकास होता रहा। संस्कृत साहित्य के अनेक ऐसे मान्य कवि हैं, जिनके कोई काव्य ग्रंथ तो उपलब्ध नहीं होते, किन्तु सुभाषितग्रंथों में उनके द्वारा प्रणीत सुभाषित मिलते हैं।

सूक्ति, सदुक्ति या सुभाषित साहित्य की ऐसी अनोखी विधा है, जिसमें शिक्षित, अशिक्षित सबकी सत्प्रवृत्ति के लिए उपदेशात्मक सरस उक्तियाँ (वाक्य या श्लोक के रूप में) निहित रहती हैं। ये सूक्तियाँ मानव के जीवन में व्यावहारिकता और बौद्धिक निपुणता लाती हैं। वस्तुतः काव्य रचना के चार प्रयोजनों (काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये) में से 'व्यवहारविदे' (लोकाचार और व्यवहार के ज्ञान के लिए) तथा 'शिवेतरक्षतये' (अमंगल/अशुभ के क्षय के लिए) इन दो प्रयोजनों की पूर्ति सूक्तिविधा के काव्य से सहज ही होती है।

सूक्तियों की यह विशेषता होती है कि लघुकाय होती हुई भी ये अपने में महाप्राण संजोये रहती हैं, जिसके प्रभाव से मानवमस्तिष्क सजग हो उठता है और निष्क्रिय व्यक्ति क्रियाशील, अनुत्साहित व्यक्ति उत्साहसम्पन्न, निराश व्यक्ति आशान्वित, निर्दयी व्यक्ति सदय में परिवर्तित हो जाते हैं। सूक्तियाँ मानवता, एकता, विश्वबन्धुत्व, सहयोग, सहानुभूति, सामरस्य, सामाजिकता, सौहार्द, प्रेम, राष्ट्रियता आदि मानवमूल्यों का सृजन कर मनुष्यमात्र को अनुपम आनन्द और ज्ञान प्रदान करती हैं।

यद्यपि विश्व की समस्त भाषाओं में सूक्तियाँ उपलब्ध होती हैं, किन्तु अत्यन्त समृद्ध सांस्कृतिक इतिहास के कारण संस्कृत भाषा का सूक्ति-साहित्य अनुपम और विशाल है। प्राचीन मनीषियों ने संस्कृत-वाङ्मय में विद्यामान असंख्य सूक्तियों का संकलन कर इन सुभाषितसंग्रहों की रचना की है। उपलब्ध विवरण के अनुसार 10वीं शताब्दी से अब तक के सूक्तिग्रंथों में अमितगति का 'सुभाषितरत्नसंदोहः' (10वीं शताब्दी) विद्याकर का 'कवीन्द्रवचनसमुच्चयः' (11वीं शताब्दी) श्रीधरदास का 'सदुक्तिकर्णामृतम्' (12वीं शताब्दी) जल्हण का 'सूक्तिमुक्तावली' (13वीं शताब्दी) सायण का 'सुभाषितसुधानिधिः' (14वीं शताब्दी) कलिंगराय का 'सूक्तिरत्नहारः' (15वीं शताब्दी) अप्पयदीक्षित का 'वैराग्यशतकम्' (16वीं शताब्दी) सुन्दरदेव का 'सूक्तिसुन्दरम्' (17वीं शताब्दी) मातृप्रसाद का 'समयोचितपद्यरत्नमालिका' (1938 ई.) शिवदत्त एवं नारायणरामाचार्य का 'सुभाषितरत्नभाण्डागारः' (1952 ई.) रामजी उपाध्याय का 'संस्कृतसूक्तिरत्नाकरः' (1965 ई.) आदि विशेषरूप से उल्लेखनीय हैं। पालि, प्राकृत तथा अपभ्रंश भाषाओं में रचित प्रमुख सूक्तिग्रंथों के नाम हैं-धम्मप (पालि), गाहासत्तसई (प्राकृत), प्रबन्ध चिन्तमणि और प्रबन्धकोश (अपभ्रंश)। इधर वर्ष 1999 ई. में दिल्ली संस्कृत अकादमी के द्वारा भी संस्कृत सूक्ति संग्रह प्रकाशन की अभिनव योजना प्रारम्भ की गयी है। इसके अन्तर्गत संस्कृतवाङ्मय के विशाल भण्डार से विभिन्न शास्त्रों और विषयों से सम्बन्धित सूक्तियों का संकलन तीस खंडों में 'संस्कृतसूक्तिसमुच्चयः' नाम से प्रकाशित करने का संकल्प है। इस शृंखला में अब तक वैदिक, ब्राह्मण, उपनिषद्,

आरण्यक, सांख्ययोग और वेदान्त इन छह खण्डों का प्रकाशन हो चुका है। आज के परिप्रेक्ष्य में विशिष्ट विषय से सम्बन्धित सुभाषितों के संकलन का महत्त्व अधिक है। अतः वर्गीकृत संग्रहों की उपादेयता को देखते हुए शिक्षा-जगत् के लिए उपयोगी सूक्तियों का संग्रह प्रस्तुत करने का विचार मेरे मन भी में आया। आज जब शिक्षा की सर्वव्यापकता को प्राथमिक माना जा रहा है। और 'सर्वशिक्षा अभियान' जैसी योजनाओं द्वारा मानवमात्र को शिक्षित करने का संकल्प लिया जा रहा है तो ऐसे में शिक्षा सम्बन्धी सूक्तियों का योगदान प्रभावी होगा।

यों तो संसार में धन, बन्धु-बान्धव, दीर्घायु, कर्म तथा विद्या ये सभी वस्तुएँ अभीष्ट होती हैं, परन्तु इनमें क्रमशः एक के बाद दूसरे का महत्त्व अधिक माना जाता है और इसीलिए विद्या (शिक्षा) ही सबसे अधिक श्रेष्ठ और उपयोगी होती है–

वित्तं बन्धुर्वयः, कर्म, विद्या भवति पञ्चमी।
एतानि मान्यस्थनानि, गरीयो यद्यदुत्तरम्।। (मनुस्मृति)

केवल शिक्षा (ज्ञान) ऐसा तत्त्व है जो मनुष्य को विवेकशील बनाकर उसे पशुओं से अलग करता है[1] और सच्चे अर्थों में ऋग्वेद की उक्ति 'मनुर्भव' (मानव बनो) का तात्पर्य विकसित करता है। शिक्षा अनेक भ्रमों, संदेहों और संशयों को दूर करती है और कई बार परोक्ष अर्थ को भी दिखती है।[2] शिक्षा तो प्राणियों के तृतीय नेत्र को समान है। जिसके पास यह तृतीय नेत्र नहीं है, वह एक प्रकार से अंधा है।[3]

शिक्षा के बिना मनुष्य का जीवन कुत्ते की पूंछ के समान व्यर्थ होता है।[4] शिक्षा के बल पर ही मनुष्य देश-विदेश सर्वत्र आदर पाता है।[5]

1. ''ज्ञानेन हीनाः पशुभिः समानाः''- पंचतंत्र
2. अनेकसंशयोच्छेदि परोक्षार्थस्य दर्शकम्। (हितोपदेश)
3. सर्वस्य लोचनं शास्त्रं, यस्य नास्त्यन्ध एव सः।। (हितोपदेश)
4. शुनः पुच्छमिव व्यर्थं जीवितं विद्यया विना।
   न गुह्यगोपने शक्तं न च दंशनिवारणे।। (चाणक्यशतक)
5. विद्वत्त्वं च नृपत्त्वं च नैव तुल्यं कदाचन।
   स्वदेशे पूज्यते राजा, विद्वान् सर्वत्र पूज्यते।। (सुभाषितरत्नभाण्डागार)

सांसारिक सभी द्रव्यों में शिक्षा ही सर्वोत्तम-धन है, क्योंकि इसे न कोई चुरा सकता है, न मूल्य देकर खरीद सकता है और न ही इसका नाश हो सकता है।[6]

इन्द्रियों को वश में करने की क्षमता में वृद्धि और ईर्ष्या-द्वेष, लोभ, मोह, शोक आदि में बंधने से मानव को मुक्त करना शिक्षा का प्रयोजन है (''सा विद्या या विमुक्तये'')। इससे शिक्षा के चरम उद्देश्य (सुख की प्राप्ति) की पूर्ति होती है।

संपूर्ण भारतीय वाङ्मय में शिक्षा के साथ 'धर्म' का अन्योन्याश्रय सम्बंध माना गया है। 'धर्म' शब्द की व्याख्या तो अनेक रूपों में की जाती है, किन्तु ''धारणात् धर्म इत्याहुः धर्मो धारयते प्रजाः'' इस उक्ति के अनुसार जीवन में आचार 'व्यवहार' कर्त्तव्यों आदि के पालन की ओर अग्रसर करने वाला धर्म है और धर्म का मूल ज्ञान है। ज्ञानी ही ध र्मज्ञ (आचार व्यवहार के ज्ञाता) माने गये हैं और उनके आचरण को उनके द्वारा अपनाई गई परम्परा को शिष्टाचार माना जाता है। धैर्य, शान्ति, अहिंसा, दया, करुणा, सहानुभूति, सौजन्य, प्रेम, इन्द्रियों का निग्रह, सत्य आदि शाश्वत नैतिक (मानवीय) गुण समाज को राष्ट्र को, विकसित करते हैं। ''आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्'' जो व्यवहार स्वयं को अच्छा न लगे, वह दूसरों के लिए भी नहीं करना चाहिए। धर्म और ज्ञान सबको आपस में जोड़ते हैं तोड़ते नहीं। अपने कर्त्तव्य के प्रति निष्ठावान् होना ही धर्मपालन है, जैसे एक सैनिक कर्तव्यबोध की भावना से प्रेरित होकर मातृभूमि की रक्षा के लिए मर मिटता है। उचित-अनुचित का विवेक खो देने से मनुष्य में पशुता न आ जाय और वह मानव सुलभ स्वभाव अपनाये रहे, इसलिए धर्म को शिक्षा का अंग माना गया है।

विद्यार्थी के जीवन में माता-पिता और आचार्य (शिक्षक) इन तीन उत्तम शिक्षकों का जब योगदान होता है तो उसका जीवन

---

6. सर्वद्रव्येषु विद्यैव द्रव्यमाहुरनुत्तमम्
अहार्यत्वादनर्घ्यत्वादक्षयत्वाच्च सर्वदा।। (मत्स्यपुराण)

ज्ञान-ज्योति से प्रदीप्त हो उठता है। सन्तान को ज्ञान-पथ की ओर अग्रसर करने वाले माता-पिता ही उसके मित्र माने गये हैं, अन्यथा वे शत्रुवत् हैं।[7] यम, वरुण, सोम, औषधि के गुणों वाले सदाचार की शिक्षा देने वाले आचार्य (शिक्षक) का वह स्वरूप उदात्त माना जाता है, जिसमें वह स्वयं कहता है कि "यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि नो इतराणि"। (जो हमारे सत् आचरण हैं उन्हीं का अनुसरण करो दूसरों का नहीं) और अच्छे-बुरे आचारभ्रष्ट हो तो समाज के लिए दूषित (अपवित्र) माना जाता है। उसे शास्त्र (वेद) भी पवित्र नहीं कर सकते।[8]

शिक्षा प्राप्ति में शिक्षक, वातावरण आदि सभी का योगदान होता है। अतः परिवार, कुटुम्ब, पड़ोसी सबका वातावरण शुद्ध और सदाचारमय होना चाहिए। बच्चे में पड़ोसियों की अच्छाइयाँ और बुराइयाँ घर कर लेती हैं। जैसे हवा में समीपस्थ स्थान की गंध मिलकर चारों ओर फैल जाती है।[9]

उपर्युक्त तथ्यों से मानव-जीवन के लिए शिक्षा की अनिवार्यता स्वतः स्पष्ट है। एक तो मानव जन्म प्राप्त करना दुर्लभ है, उस पर विद्या प्राप्ति और भी कठिन है।[10] अतः लोकजीवन को शिक्षा द्वारा सजाने-संवारने, सुखमय बनाने के लिए व्यावहारिक अनुभव के लिए मार्गदर्शक के रूप में प्रयुक्त होने वाले सुभाषितों का संग्रहकर यह संकलन प्रस्तुत किया जा रहा है। इस संकलन को ज्ञानखण्ड, आचार्यखण्ड, शिक्षानीतिखण्ड, प्रकीर्णखण्ड इन चार खण्डों में बांटा गया है। इनके अन्तर्गत ज्ञान (शिक्षा), शिक्षक-शिष्य और शिक्षानीति से सम्बन्धित सूक्तियों को वर्गीकृत किया गया है। व्यापक उपयोगिता की दृष्टि से संस्कृत भाषा की इन सूक्तियों का अनुवाद हिन्दी के साथ-साथ अंग्रजी में भी दिया गया

---

7. माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठितः।
   न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा।। (हितोपेदश)
8. "आचारहीनं न पुनन्ति वेदाः"।
9. शिशौ प्रविशतः प्रायः प्रतिवेशिगुणागुणौ।
   गन्धोऽन्यसन्निधेरेव सङ्क्रामति समीरणे।।
10. "नरत्वं दुर्लभं लोके विद्या तत्र सुदुर्लभा।" (अग्निपुराण)

है ताकि इतर भाषाभाषी भी संस्कृतवाङ्मय की निधि से परिचित हो सकें। जिन कृतियों से इन सूक्तियों का संकलन किया गया है, उनके नाम हैं–वेद, उपनिषद् ब्राह्मणग्रन्थ, पुराण, वाल्मीकिरामायण, महाभारत, नीतिशतक, मनुस्मृति, शुक्रनीति, चाणक्यनीति, भगवद्गीता, किरातार्जुनीय, पञ्चतंत्र, हितोपदेश, मालविकाग्निमित्र, उत्तररामचरित, याज्ञवल्क्यशिक्षा, नारदीयशिक्षा आदि गैरसरकारी क्षेत्रों में, संस्थाओं में, विभागों में सर्वत्र आदर्शवाक्य के रूप में इन्हीं में से चुन कर सुभाषितों या उसके अंश का प्रयोग होता आ रहा है। जैसे ''सत्यमेव जयते'' ''योगक्षेमं वहाम्यहम्'' ''विद्ययाऽमृतमश्नुते'' ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' ''सरस्वती श्रुतिमहती महीयताम्'' ''गुरुर्गुरुतमो धाम'' ''यतोधर्मस्ततो जयः'' ''विद्या सर्वस्य भूषणम्'' ''शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्'' ''सर्वे भवन्तु सुखिनः'' ''बहुजनहिताय बहुजनसुखाय'' आदि-आदि। इस संकलन की सूक्तियाँ और उनका अनुवाद प्रस्तुत करने में प्रमादवश त्रुटि हुई हो तो विद्वज्जन क्षमा करेंगे। 'गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः'।

मैं यहाँ कृतज्ञता भाव से यह उल्लेख करना चाहता हूँ, शिक्षा विभाग (भारत सरकार) के संयुक्त सचिव माननीय श्री चम्पक चटर्जी आई.ए.एस. के मन में एक कल्पना बीजरूप में थी कि शिक्षा जगत् के लिए उपयोगी जो भी सुभाषित संस्कृत-वाङ्मय में हों उन्हें एकत्रित कर एक संग्रह प्रस्तुत किया जाय, जो अपेक्षा पड़ने पर सन्दर्भ के रूप में सहजतया उपलब्ध हो सकें। उन्हीं की प्रेरणा से ''शिक्षा सूक्ति मुक्तावली'' का लघुसंस्करण विद्वानों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार आनन्द का अनुभव हो रहा है।

यद्यपि शिक्षा जगत् से सम्बन्धित असंख्य बोधात्मक सुभाषित संस्कृत साहित्य के ग्रन्थों में विद्यमान हैं किन्तु इस संग्रह में सरलता से उपलब्ध सीमित संख्या में ही सूक्तियों का संकलन किया गया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह सूक्तिमुक्तावली शिक्षाजगत् के लिए उपादेय सिद्ध होगी।

हर्ष का विषय है कि भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शिक्षा विभाग ने वर्तमान वर्ष 1999-2000 (कलियुगाब्द

5101) को "संस्कृतवर्ष" के रूप मे घोषित कर राष्ट्रिय स्तर पर संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार तथा इसमें निहित चिन्तन ज्ञान-विज्ञान से लाभ प्राप्त करने के लिए विभिन्न संस्थाओं, विश्वविद्यालयों के माध्यम से जन-चेतना जागृत की है। इस दिशा में विभाग द्वारा किये जा रहे प्रयास निश्चय ही अभिनन्दनीय हैं।

केन्द्रीय संस्कृत मंडल के अध्यक्ष माननीय न्यायविद् उच्चतम न्यायालय, भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश श्री रंगनाथ मिश्र जी के प्रति मैं साभार कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ जिनकी अध्यक्षता में संस्कृत वर्ष समारोह समिति ने विचार-विमर्श करके अनेक कार्यक्रमों, आयोजनों को आर्थिक अनुदान अनुमोदित कर संस्कृतवर्ष को सफल बनाने में यथेष्ट प्रोत्साहन दिया है। उल्लेखनीय है कि संस्कृत वर्ष आयोजन का प्रारूप तैयार कर उसके क्रियान्वयन में श्रीयुत सुमितबोस आई.ए.एस. संयुक्त सचिव ने जो योगदान दिया वह चिरस्मरणीय रहेगा।

मैं संस्कृत के प्रख्यात विद्वान् और अर्थशास्त्री डॉ. वी.आर. पञ्चमुखी, कुलाधिपति राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति के प्रति श्रद्धावनत हूँ, जिन्होंने अपने परामर्श से तथा इस मुक्तावली की प्रस्तावना लिखकर अपने आशीर्वचन से मुझे कृतार्थ किया है। डॉ. पी.एच. सेतुमाधव राव, संयुक्त शिक्षा सलाहकार (भाषा) तथा प्रो. विधाता मिश्र (पूर्वकुलपति दरभंगा सं.वि.वि.) का मैं अभारी हूँ, जिनका प्रेरणापूर्ण आशीर्वचन मुझे सदा मिलता रहा है।

पुनश्च सुधी पाठकों की शिक्षा संबंधी सूक्तियों में रुचि और जिज्ञासा को देखते हुए 'शिक्षा सूक्ति मुक्तावली' का यह संशोधित और परिवर्धित रूप प्रस्तुत करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है। इस में सूक्तियों की संख्या में वृद्धि की गयी है। आशा है, व्यावहारिक जीवन में ये सूक्तियाँ सामाजिकों के लिए उपयोगी सिद्ध होंगी।

हर्ष का विषय है कि प्रोफेसर रमेश कुमार पाण्डेय अध्यक्ष अनुसंधान एवं प्रकाशन विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली ने पुस्तक की विवेचनपूर्ण प्रस्तावना लिखकर मुझे

गौरवान्वित और अनुगृहीत किया है। तदर्थ मैं उनके सौजन्यपूर्ण कृपा के लिए कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

पुस्तक के मुद्रण में अमर ग्रन्थ प्रकाशन, के श्री हीरा लाल जी ने जो तत्परता दिखाई है उसके लिए वे साधुवाद के पात्र हैं। यद्यपि पुस्तक के संकलन, अनुवाद, मुख्यतः मुद्रण और प्रकाशन में अनेक त्रुटियाँ हो सकती हैं तथापि सदसद्विवेकी सुधीजन क्षमापूर्वक मुझे कृतार्थ करने की कृपा करेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

विनीत

विजयादशमी
(आश्विन शुक्ल दशमी)
संवत् 2071
दि. 3-10-2014

डॉ. नोद नाथ मिश्र
पूर्व उपशिक्षासलाहकार (संस्कृत)
भारत सरकार
मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली

अनुक्रमणिका

1.	ज्ञानखण्ड:	1
2.	आचार्यखण्ड:	61
3.	शिक्षानीतिखण्ड:	76
4.	प्रकीर्णखण्ड:	102
5.	सूक्ति-अनुक्रमणिका	131

ज्ञानखण्डः

सुभाषितेन गीतेन युवतीनां च लीलया।
मनो न भिद्यते यस्य, स वै मुक्तोऽथवा पशुः॥ १॥

(सुभाषित०)

सुभाषित गीत से तथा युवतियों की लीला (प्रीति विषयक मनोविनोद) और लावण्य (सौन्दर्य) से जिसका मन विचलित नहीं होता वह सहृदय मानव नहीं। वह या तो मुक्त योगी होगा या पशु।

The person whose heart is not moved by an eloquent and funful plays of young women, is supposed to be an ascetic or a beast.

विषादप्यमृतं ग्राह्यं बालादपि सुभाषितम्।
अमित्रादपि सद्वृत्तम्, अमेध्यापि काञ्चनम्॥ २॥

(सुभाषित)

विष से भी अमृत ले लेना चाहिए, (यदि दोनों मिले हों), सुभाषित (सुन्दर वचन) यदि छोटा बालक भी कहे तो उसे स्वीकार कर लेना चाहिए, सद्व्यवहार यदि शत्रु से भी मिले तो उसे सीखकर अपना लेना चाहिए और सुवर्ण यदि अपवित्र स्थान पर भी मिले तो ले लेना चाहिए। ऐसा करना कोई अनुचित या अशोभनीय नहीं होता।

Nector may be taken even from poison (if they are mixed) good advice even from a child, good behaviour even from enemy and gold even from something impure may be taken (accepted).

संसारकटुवृक्षस्य द्वे फले ह्यमृतोपमे।
सुभाषितरसास्वादः संगतिः सुजने जने॥ ३॥

(सुभाषित०)

संसाररूप कडुवे वृक्ष के अमृत के समान दो मीठे फल हैं–

सुभाषित (सुन्दर कथन) का रसास्वद और सज्जन व्यक्ति की संगति।

There are two fruits, full of nector, of this bitter world tree. One is the flavour of eloquents and other is company of gentle person.

अनेकसंशयोच्छेदि परोक्षार्थस्य दर्शकम्।
सर्वस्य लोचनं शास्त्रं यस्य नास्त्यन्ध एव सः॥ ४॥

(पंचतन्त्र)

(शास्त्रों का) ज्ञान सबके लिए नेत्र के समान होता है, जिसके सहारे व्यक्ति अनेक सन्देहों से छूटकर परोक्ष विषयों का ज्ञान भी प्राप्त कर लेता है। जिसके पास शास्त्रज्ञान रूपी नेत्र नहीं होते वह अन्धे व्यक्ति के समान कुछ भी नहीं देख सकता।

Knowledge is the eye for every body, it removes all the doubts (suspicion) and uncertainty of one's mind. It is one's exhibitor of invisible sense. One, who does not have the knowledge, is only a blind, (or is supposed to be a blind).

सद्विद्या यदि का चिन्ता वराकोदरपूरणे।
शुकोऽप्यशनमाप्नोति राम रामेति च ब्रुवन्॥ ५॥

(शार्ङ्गधरपद्धति)

यदि सद्ज्ञान हो तो विद्वान को अपने उदरपूर्ति की क्या चिन्ता? क्योंकि केवल राम-राम आदि सीमित शब्दों के उच्चारण मात्र से तोता भी भोजन कर लेता है (या पेट भर लेता है) फिर विद्वज्जन अपने विद्या के बल पर वुभुक्षित कैसे रह सकते हैं।

If a scholar has sufficient good learning then why to worry for filling up his stomach, since a parrot also fulfills his stomach by pronouncing the mere word Rama-Rama. Likewise learned persons are able to satisfy their appetite through the strength of their knowledge.

विप्राणां भूषणं ज्ञानं सर्वेषां भूषणं धर्मः।
भूषणानां भूषणं सविनया विद्या॥ ६॥

(चाणक्य-अर्थशास्त्र)

विद्वानों का आभूषण ज्ञान है, सब लोगों का आभूषण धर्म है

तथा सभी भूषणों का भूषण सविनय विद्या है।

Vedas and their knowledge is the ornament or decoration of a priest (learned person), Virtue (religion) is the ornament of human-being and the best decoration of all ornaments is learning with modesty.

दुःखस्य मूलमज्ञानं दुर्गतेः गूढकारणम्।
विना ज्ञानमयीं शक्तिं न सिध्येदिह किञ्चन॥ ७॥

(सुभाषित)

दुःख का मूल कारण अज्ञान ही है। उसे केवल ज्ञान के मार्ग द्वारा ही दूर किया जा सकता है। ज्ञान के बिना कुछ भी प्राप्य नहीं है।

Ignorance is the basic cause of distress. It can be removed by knowlededge (clear perception). Nothing can be achieved without the power of knowledge.

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनम्।
विद्या भोगकरी यशः सुखकरी विद्या गुरूणां गुरुः॥

विद्या बन्धुजनो विदेशगमने, विद्या परं दैवतम्।
विद्या राजसु पूज्यते नहि धनं विद्याविहीनः पशुः॥ ८॥

(नीतिशतक)

विद्या (ज्ञान) मनुष्य का सबसे श्रेष्ठ सौन्दर्य है, विद्या मनुष्य के पास छिपा हुआ धन है विद्या गुरुओं का भी (श्रेष्ठ) गुरु है, विद्या सभी भोगों के साधन उपलब्ध कराने वाली, यश और सुख देने वाली, परदेश में विद्या भाई-बन्धु की तरह (ज्ञान के सहारे) मदद करती है, परिचय कराती है, विद्या ही सर्वश्रेष्ठ देवता है, राजदरबार में तथा शासकों के बीच विद्या (ज्ञान) का आदर होता है, धन का नहीं। अतः विद्या से रहित मनुष्य अपने अज्ञान के कारण अपने आचरण में सुधार नहीं कर पाता और पशु के समान जीवन व्यतीत करता है।

Education is the greatest beauty of a person. Education is a hidden assest. It gives enjoyment, fame and pleasure, Knowledge is the great teacher of teachers. It helps, It is helpful like one's relative in strange places. Knowledge is the greatest divinity. It is Knowledge not wealth which is reverred among rulers and kingdoms.

Therefore the human being without knowledge is unable to reform his conduct and such a person spends his life like a beast.

मातेव रक्षति पितेव हिते नियुङ्क्ते,
कान्तेव चाभिरमयत्यपनीय खेदम्।
लक्ष्मीं तनोति वितनोति च दिक्षु कीर्तिम्।
किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या॥ ९॥

(सुभाषित०)

विद्या माता की तरह रक्षा करती है, पिता की भाँति भलाई के कामों में लगाती है, स्त्री की तरह मनोविनोद करती है और दु:ख दूर करती है। अच्छाइयों को फैलाती है और सब ओर यश फैलाती है - इस प्रकार विद्या मनुष्य को ज्ञान देकर मनचाही सभी सिद्धियाँ, सफलताएँ प्रदान करती है मानो यह कल्पलता की तरह सभी कामनाएं पूरी करती हो।

Learning (education) nourishes us like the mother] directs us to our well-being, gives us delight and comfort by removing our sorrow like the wife. It increases our fame and wealth destroying our difficulties. It is thus like a veritable desire - yielding tree which performs all the desires.

श्रियः प्रदुग्धे विपदो रुणद्धि,
यशांसि सूते मलिनं प्रमार्ष्टि।
संस्कारशौचेन परं पुनाति,
शुद्धा हि बुद्धिः किल कामधेनुः॥ १०॥

(सुभाषित०)

शुद्ध ज्ञान (बुद्धि) कामधेनु के समान है जो सभी इच्छाओं को प्राप्त कराती है। धन और चाही हुई सम्पत्ति दिलाती है, दुर्भाग्य का नाश करती है, यश फैलाती है, मलिनता (दुर्गुणों) को दूर कराती है और अच्छे संस्कारों (गुणों) से व्यक्ति को पवित्र करती है।

Knowledge (intelligence) is supposed to be kamdhenu (the cow which fulfills all the desires) which provides glory and wealth, avoids hardships (misfortune), brings reputations and washes (removes away) the ills (filthness), Thus the intelligence makes a man well purified and reformed.

संयोजयति विद्यैव नीचगापि नरं सरित्।
समुद्रमिव दुर्धर्षं नृपं भाग्यमतः परम्॥ ११॥ (पंचतंत्र)

विद्या (ज्ञान) ही अधम कोटि के व्यक्ति को महान् राजा जैसे व्यक्तियों से मिलाती है आगे उसका भाग्य साथ देता है। जैसे नीचे की ओर बहने वाली नदी महान् समुद्र में मिलकर विलीन हो जाती है और समुद्र का सम्मान उसे मिलता है।

Learning (study of knowledge) unites also an inferior person with unapproachable king like a low flowing river, which becomes united with the sea. After meeting with the king it is his destiny which helps him for any gain. (But knowledge is the only means which assists him primarily to approach a monarch)

माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठितः।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा॥ १२॥
(हितोपदेश)

अपनी संतान को शिक्षा प्राप्त नहीं कराने वाले माता-पिता उसके शत्रु हैं। उनकी वह अशिक्षित सन्तान विद्वानों की सभा में उसी प्रकार दुःखी होती है जैसे हंसों के बीच में बगुले की सुन्दरता क्षीण हो जाती है।

The mother and father, both who have not provided the chance of education to (or has not educated) their children, are enemies of their children. such uneducated child is never adorned among learned persons like a heron among swans.

किं कुलेन विशालेन विद्याहीनस्य देहिनः।
अकुलीनोऽपि विद्यावान् देवैरपि सम्पूज्यते॥१३॥
(नीति)

विद्या (ज्ञान) से रहित व्यक्ति यदि विशाल कुल में जन्मा है तो उससे क्या? जो अच्छे कुल में नहीं जन्मा है किन्तु विद्या (ज्ञान) से युक्त है तो उसका सम्मान देवता और श्रेष्ठ मनुष्य भी करते हैं।

The person, who is born in a high/prosperous family or caste and has no learning (knowledge) is worthless. A person having

born also in a low caste if learned, is honoured by gods and highly positioned persons.

सत्यं ज्ञानमहिंसता च, विद्वत्
प्रमाणं च सुशीलता च।
एतानि यो धारयते स विद्वान्,
न केवलं यः पठते स विद्वान्॥ १४॥

(सुभाषित०)

सत्य, ज्ञान, अहिंसा विद्वानों का आदर और सदाचार ये गुण जिस व्यक्ति में होते हैं वह विद्वान् माना जाता है, न कि वह व्यक्ति जो केवल शास्त्रों को पढ़ता है।

He is the real Scholar (learned person) who holds truth, knowledge, non-violence respects for scholars and courtesy. The person, who only reads can not be a learned scholar.

शास्त्राण्यधीत्यापि भवन्ति मूर्खाः
यस्तु क्रियावान् पुरुषः स विद्वान्।
सुचिन्तितं चौषधमातुराणाम्,
न नाममात्रेण करोत्यरोगम्॥ १५॥

(पंचतंत्र)

शास्त्रों का अध्ययन करने के बाद भी लोग मूर्ख ही रह जाते हैं। किन्तु जो शास्त्र पढ़कर तदनुसार आचरण करता है वहीं विद्वान् माना जाता है। जैसे रोगियों के लिए खूब सोच-विचार कर निर्धारित की गई औषधि नाम ले लेने से ही रोगी को स्वस्थ नहीं कर देती बल्कि औषधि खाने से करती है।

The persons having read scriptures become ignorant and unwise. He who is active and full of actions as per scriptures, is supposed to be a wise man. Only going through the scriptures one can not be wise, as a well diagnosed and prescribed medicine can not remove the illness by its name only.

पाठकः पाठकश्चैव ये चान्ये शास्त्रपाठकाः।
सर्वे व्यसनिनो ज्ञेयाः, यः क्रियावान् स पण्डितः॥ १६॥

(महाभारत)

विभिन्न शास्त्रों का ज्ञान होने पर भी यदि व्यक्ति में अन्तर्दृष्टि का विकास और आत्मज्योति की उपलब्धि नहीं हुई है तो वह व्यक्ति मूर्ख ही है, क्योंकि क्रियावान् अर्थात् व्यावहारिक ज्ञान से युक्त व्यक्ति ही सच्चे अर्थों में शिक्षित है।

If a person, even having the knowledge of scriptures, does not have th insight and entellingence, he is only a stupid. Actually the person who has applied commonsense is a real learned person.

यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा शास्त्रं तस्य करोति किम्।
लोचनाभ्यां विहीनस्य दर्पणः किं करिष्यति॥ १७॥

(हितोपदेश)

यदि किसी के पास नैसर्गिक प्रज्ञा नहीं है तो शास्त्र उसकी क्या सहायता करेगा? जैसे कोई व्यक्ति यदि नेत्रहीन हो तो दर्पण उसको वस्तुओ को प्रत्यक्षीकरण नहीं करा सकता।

The person having no natural wisdom can never be helped by scriptures only. As a blind man can never look the things with the help of a mirror (without eyes).

अन्तः सारविहीनस्य सहायः किं करिष्यति।
मलयेऽपि स्थितो वेणुर्वेणुरेव न चन्दनः॥ १८॥

(सुभाषितरत्नः)

नैसर्गिक गुणों और उपयुक्त वातावरण के अभाव में शास्त्र क्या सहायता कर सकता है? जैसे मलयगिरि पर रोपित वेणु (बांस का वृक्ष) उचित खाद और जल से सिंचित होने पर भी चन्दन नहीं बन सकता, क्योंकि उसमें चन्दन के नैसर्गिक गुणों का मूलतः अभाव है।

scriptures can't a person without natura; qualities and proper environment.A bamboo tree planted on Malaya hills, though well manured and irrigated, can never be Sandal tree since it has'nt the natural qualities of Sandal tree.

अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः।
ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापि नरं न रञ्जयति॥ १९॥

(भर्तृहरिशतक)

अज्ञानी (मूर्ख) को आसानी से प्रसन्न किया जा सकता है, विशेषज्ञ (विद्वान्) को और अधिक सरलता से प्रसन्न किया जा सकता है, किन्तु मन्दबुद्धि अनाड़ी को ब्रह्मा भी प्रसन्न नहीं कर सकते।

An ignorant person can be appeased easily, an expert can be conciliated comfortably, but a person having less knowledge/ intelligence can never be appeased even by the creator of this wirld.

पुस्तकस्था तु या विद्या परहस्तगतं धनम्।
कार्यकाले समुत्पन्ने न सा विद्या न तद् धनम्॥ २०॥

(नीतिशतक)

मुनष्य की स्मृति में सुरक्षित ज्ञान (विद्या) ही समय पर विद्वानों के सामने प्रकट करने पर यश और आदर दिलवाता है, न कि पुस्तक में लिखा ज्ञान। अतएव कहा जात है कि पुस्तक में लिखा ज्ञान और दूसरे के पास रखा गया धन समय पड़ने पर काम नहीं देते। अपनी स्मृति में स्थापित ज्ञान ही लोगों के सामने प्रकट होता है और याद किये हुए विषय से विद्यार्थी की विजय होती है।

The original wisdom, attained by a person, brings fame and honour for him but not the knowledge inscripted in books. Thereforce it is said that the knowledge written in books and money (riches) kept with some other person are not available (useful) when required. The knowledge well accupied in mind appears before the persons and the student gets victory through his learned subject.

येषां न विद्या न तपो न दानं
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मृत्युलोके भुवि भारभूताः
मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति॥ २१॥

(नीति)

जिन व्यक्तियों के पास विद्या (शिक्षा), तप, दान, ज्ञान, शील (सदाचार) गुण और धर्म इनमें से कुछ भी नहीं होता, वे मनुष्य पृथ्वी के भार बने रहते हैं और मनुष्य के रूप में पशुओं की तरह इस संसार में व्यर्थ ही जीवन गंवाते है।

The person, who don't have knowledge, devotion, charity, perception, modesty, skills, and righteousness, are burden of this earth and are aupposed to be loitering animals in th form of human being, in this mortal world.

शास्त्रप्रयोजनं तत्त्वदर्शनम्। २२॥

(ऋग्वेद)

ज्ञान का उद्देश्य सत्य को जानना है।

The aim of learning the Shastras, is to know the truth.

अपि मानुष्यकं लब्ध्वा भवन्ति ज्ञानिनो न ये।
पशुतैव वरं तेषां प्रत्यवायाप्रवर्तनात्॥ २३॥

मनुष्य जन्म लेकर भी जो ज्ञान नहीं प्राप्त कर पाते उनसे अच्छे वे पशु हैं जो पापकर्म में प्रवत्त नहीं होते।

As they commit no sin, animals themselves are better than those who, though having obtained a human birth, do not acquire knowledge.

गतेऽपि वयसि ग्राह्या विद्या सर्वात्मना बुधैः।
यद्यपि स्यान्न फलदा सुलभा साऽन्यजन्मनि॥२४॥

(ऋग्वेद)

बुद्धिमान् व्यक्तियों को चाहिए कि वे अधिक अवस्था हो जाने पर भी लगन से विद्या ग्रहण करें। यद्यपि तत्काल उन्हें विद्या प्राप्ति में सफलता नहीं मिल सकती है किन्तु दूसरे जन्म में यह सुलभ होगी।

Knowledge should be acquired by the wise persons with dedication, though they may be old. Though it may not be fruitful now, it will be easy to acquire in another birth.

उद्वयं तमसस् परिज्योतिःपश्यन्त उत्तरम्।
देवं देवत्रा सूर्यम् अगन्म ज्योतिरुत्तमम्॥ २५॥

(ऋग्वेद)

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर मैं अज्ञानान्धकार में निमग्न हूँ, मुझे विवेक की ज्योति से प्रकाशित कीजिए।

O God Almighty, I am steeped into the darkness of ignorance. I need to be moved into the light of your wisdom.

सा विद्या या मदं हन्ति, सा श्रीर्याऽर्थिषु वर्षति।
धर्मानुसारिणी या च, सा बुद्धिरभिधीयते।। २६।।

(सुभाषित)

वास्तविक विद्या (ज्ञान) वही है जो अहंकार का नाश करती हैए धन वहीं है जो याचकों को मिलकर सन्तुष्ट करे और जो धर्म का अनुसरण करे वही वास्तविक बुद्धि मानी जाती है।

That indeed is learning which quells pride. Thar is wealth which rains on suppliants, thats is regarded as understanding, which is in consonance with Dharma.

अजरामरवत् प्राज्ञो विद्यामर्थं च चिन्तयेत्।
गृहीत इव केशेषु मृत्युना धर्ममाचरेत्।। २७।।

(पंचतंत्र)

विद्या और अर्थ (धन) प्राप्त करने के सम्बन्ध में विवेकी व्यक्ति अपने को अजर-अमर समझकर (निश्चिन्त होकर) इन दोनों का संचय करे। परन्तु धर्म के आचरण के सम्बन्ध में वह अपने को क्षणभंगुर मानकर ऐसा समझ ले कि यमराज ने उसके केश पकड़ लिए हों और उसका प्राणान्त होने वाला है, इसी धारणा से अल्प समय में अधिक धर्माचरण कर लेने का प्रयास करे।

When learning of earning, the wise one should strive as if one were free from old age and death. However when practising Dharma, one must act promptly as if one's hair has been grasped by death (that is as if death is imminent).

सम्पूर्णं कुम्भो न करोति शब्दम्
अर्धो घटो घोषमुपैति नित्यम्।
विद्वान् कुलीनो न करोति गर्वम्,
अल्पो जनो जल्पति साट्टहासम्।। २८।।

(सुभाषित)

तरल पदार्थ से भरा घड़ा शब्द नहीं करता जबकि आधा भरा

घड़ा प्रायः शब्द करता है। इसी प्रकार कुलीन विद्वान तो अहंकार नहीं करता परन्तु अल्पज्ञ व्यक्ति व्यर्थ में हँसता हुआ बड़बडाता रहता है।

A post full of liquid does not make noise while a half filled pot always makes soun. A well-bred scholar does not give room to pride, while petty person laughs loudly and prattles.

उद्यन्तु शतमादित्या उद्यन्तु शतमिन्दवः।
न विना विदुषां वाक्यैर्नश्यत्याभ्यन्तरं तमः॥ २९॥

(सुभाषित)

सैकड़ों सूर्य और सैकड़ो चन्द्रमा उदित होकर प्रकाश देते रहें किन्तु विद्वानों की शिक्षा के बिना व्यक्ति का आन्तरिक (अज्ञान) अन्धकार नष्ट नहीं होता।

Let hundred suns and a hundred moons rise. Howerver without the teachings of the knowledgeable person the darkness of ignorance, within a person, will not cease.

विद्वान् ऋजुरभिगम्यो विदुषि शठे चाप्रमादिना भाव्यम्।
मूर्खर्जवोऽनुकम्प्या मूर्खशठाः सर्वदा वर्ज्याः॥ ३०॥

(सुभाषित)

सत्यनिष्ठ विद्वान का अन्वेषण कर उसके सत्संग का लाभ प्राप्त करना चाहिए, शठ (धूर्त) विद्वान् के साथ सचेत होकर व्यवहार करना चाहिए। ईमानदार मूर्खो के प्रति सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार अपेक्षित है और भ्रष्ट मूर्खो से (बचकर) दूर रहना चाहिए।

A scholar. Who is straight forward, should be sought, the scholar who is dishonest should be regarded with caution. Fools, who are depraved, ever be avoided.

नान्यः पन्थाः विद्यतेऽयनाय॥ ३१॥

(ऋग्वेद)

मनुष्य के कल्याण के लिए मार्ग के अतिरिक्त कोई मार्ग नहीं है।

There is no way of welfare for humanbeing except the way of knowledge

स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव।
पुनर्ददताघ्नता जानता सं गमेमहि॥ ३२॥ (ऋग्वेद)

सूर्य और चन्द्र की तरह हम कल्याण मार्ग का अनुसरण करें और फिर दानशील, अहिंसक, मन, वचन और कर्म से किसी को पीड़ा न पहुँचाने वाले ज्ञानी पुरुष के साथ संगति करें।

May we follow the virtuous path steadfastly like the sun and the moon follow their paths. We should associate with the generous, the kind and the learned.

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदुसुप्तस्य तथैवैति।
दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥ ३३॥
(यजुर्वेद)

दिव्य-शक्ति से युक्त मेरा मन जागरित अवस्था में बहुत दूर तक घूमता है फिर वापस आ जाता है, मेरी सुप्तावस्था में भी वह उसी प्रकार दूर-दूर तक जाता है। स्वभाववश दूर-दूर वाला इन्द्रियरूप ज्योतियों में अद्वितीय ज्योति वह मेरा मन सदा शुभ संकल्पों से युक्त हो। ज्ञानवाला हो।

My intellect, full of divine power, loiters while I am in wakefulness and returns back. It goes to distant places also while I am in sleep. Naturally wandering to distant places, in the form of sense The unique light of all the lights, my intellect may be full of good resolves (determinations).

यथा नद्यस्स्यन्दमानास्समुद्रेऽस्तं
गच्छन्ति नामरूपे विहाय।
तथा विद्वान नामरूपाद् विमुक्तः
परात्परं पुरुषमुपैति दिव्यम्॥ ३४॥
(सुभाषित)

जैसे नदियां बहती हुई समुद्र में मिल जाती हैं और उनका नाम रूप सागर में लीन हो जाता है वैसे ही विद्वान् (ज्ञानी) व्यक्ति नाम रूप से मुक्त होकर अपनी आत्मा को परमेश्वर से जोड़ लेते हैं।

Just as rivers flow into the ocean and give up their name and form so do wise persons. They lead their soul into the Supreme Being and merge their identity with Him forgetting their separateness.

ईशावास्यमिदं सर्वं यत् किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मा गृधः कस्यस्विद्धनम्॥ ३५॥

(उपनिषद्)

इस विश्व में जो कुछ दृष्टिगोचर हो रहा है, उस सबमें ईश्वर व्याप्त है। अतः संसार का यह सब धन हममें से किसी का नहीं है अपितु ईश्वर का ही है। अतः किसी दूसरे की वस्तु या धन की आकांक्षा या तृष्णा न कर उस का त्याग करते हुए भोग करना चाहिए।

All that there is, is formed and enveloped by The Lord. Whatever that moving thing that is in this moving world, tho should only enjoy it by giving it up. Can not be in possessions of any man.

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः
भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः
स्थिरैरंगैस्तुष्टुवाँसस्तनूभिर्
व्यशेम देवहितं यदायुः।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ ३६॥

(ऋग्वेद)

हे देवगुण, हम अपने कानो से शुभ कल्याणकारी वचन ही सुनें (निन्दा, चुगली, गाली या अशुभ बातें हमारे कानों में न पड़े)। हमारा जीवन यजन परायण हो, हम सदा सर्वशक्तिमान की अराधना में लगे रहें, न केवल कानों से सुनें नेत्रों से भी हम सदा कल्याण का ही दर्शन करें। किसी अमंगलकारी या पतन की ओर ले जाने वाले दृश्यों की ओर हमारी दृष्टि न जाय। हमारा शरीर और अवयव सुदृढ़ एवं पुष्ट हो, ताकि ईश्वर की स्तुति कर सकें। हमें ऐसी आयु मिले जो भोग विलास में या प्रमाद में न बीते, अपितु ईश्वर की आराधना में लगे। देवता हमारी इन्द्रियों में व्याप्त रहकर संरक्षण करते रहें ताकि सन्मार्ग पर इन्द्रियां लगी रहें।

O Gods, may we hear with our ears what is auspicious. O ye adorable ones, may we see with our eyes what is auspicious. May we sing praises to ye and enjoy with strong links and body the life allotted to us by The Gods. peace, peace (Let there be peace every where)

ॐ सह नाववतु सह नौ भुनक्तु
सह वीर्यं करवावहै
तेजस्वि नावधीतमस्तु
मा विद्विषावहै।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ ३७॥

(उपनिषद्)

हे ईश्वर, आप हम गुरु शिष्य दोनों की साथ-साथ रक्षा करें और बल प्रदान करें। हम दोनों का साथ-साथ पोषण करें। हम दोनों साथ-साथ सहयोग और शक्ति से काम करें। हम दोनों की अध्ययन की हुई विद्या (ज्ञान) तेजपूर्ण हो, कहीं किसी से विद्या में पराजय न हो। हम दोनों जीवन भर परस्पर स्नेह-सूत्र में बंधे रहें और हमारे अन्दर परस्पर कभी द्वेष न हो।

May He (The Lord) protect us both together.
May He nourish us both together.
may we work together with great vigour.
May our studies shine and be effective.
May we not hate others.
Om
Let there be peace and peace and peace.

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।
क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्ग
पथस्तत् कवयो वदन्ति॥ ३८॥

(कठोपनिषद् १-३)

अरे अज्ञान से घिरे लोगो! उठो, अज्ञान-निद्रा से जागो और श्रेष्ठ

(ज्ञानी) लोगों के पास जाकर प्राप्त करो। ज्ञान का पथ बड़ा ही कठिन है, जिस प्रकार छुरे की धार तेज और दुस्तर होती है, ज्ञानी लोग उस मार्ग को वैसा ही दुर्गम बताते है। अतः योग्य अचार्यो (शिक्षकों) से मिलकर ज्ञान के रहस्य को प्राप्त करो।

O ignorant persons (diffused with ignorance) rise from the sleep of ignorance and approach wise men for acquiring the knowledge. The way of attaining knowledge is very hard. Learned persons communicate the path of knowledge as inaccessable as a razor's impassable sharp edge. Therefore meet the worthy preceptors and procure the secret of knowledge.

शान्ता द्यौः शान्ता पृथिवी शान्तमिदमुर्वन्तरिक्षम्।
शान्ता उदन्वतीरापः शान्ता नस्सन्त्वौषधीः॥ ३९॥

(अथर्ववेद)

स्वर्ग, पृथ्वी, आकश, जल, ओषधियाँ, वनस्पतियाँ ये सभी हमारे लिए सुखशान्तिदायक और मंगलकारक हों। सद्भाव और एकता तथा विचारों में सामंजस्यपूर्वक लक्ष्यप्राप्ति के लिए यह आवश्यक है।

To Promote mutual interest and to avoid clash and conflict, unity of mind and unity of purpose are essential. May the heaven, earth, sky (atmosphere), water and medicinal herbs be peaceful and auspicious for us.

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते
समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति॥४०॥

(ऋग्वेद)

सभी परस्पर मिलकर चलें सभी मिलकर परस्पर प्रेम से वार्तालाप करें, सबका मन समान विचार से ज्ञान प्राप्त करें सब एक जैसे विचार रखें, सबका परस्पर साहचर्य हो, सबके मन एक जैसा सोचें और सबके हृदय एक हो, मन समान हों, सह-अस्तित्व की भावना विश्व में प्रवहमान हो।

To achieve unity of thought and unity of purpose a strong feeling of equality and brotherhood is the basis.

Congregate, speak with one another, Bring your minds into accord. Pray together as the sages did in the past always.

May our assembly be common, may our minds be common, may our prayers be common and may our purpose be common.

United be our resolves. united be our spirits. May we live together in a nation in unity and brotherhood.

अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते
संभ्रातरो वाहधुः सौभगाय॥ ४१॥

(ऋग्वेद)

मानवमात्र संसार में न कोई बड़ा है और न कोई अधम। सभी आपस में बन्धु हैं और सौहार्दभाव से समृद्धि की ओर अग्रसर हैं।

None is superior, none is inferior. All are brothers marching forward to prosperity.

यं मातापितरौ क्लेशं सहेते संभवे नृणाम्।
न तस्य निष्कृतिः शक्त्या कर्तुं वर्षशतैरपि॥४२॥

(नीति)

माता और पिता सन्तान को जन्म देकर पालन-पोषण में जिस क्लेश को सहते हैं, उसका बदला सैंकड़ों वर्षो में भी नही चुकाया जा सकता।

The difficulties which the mother and father put up in begetting and upbringing children can not be repaid even in hundreds of years.

तयोर्नित्यं प्रियं कुर्यादाचार्यस्य च सर्वदा।
तेष्वेव त्रिषु तुष्टेषु तपः सर्वं समाप्यते॥ ४३॥

(नीति)

माता, पिता और ज्ञान देने वाले पदार्थ (गुरु) को प्रसन्न करने वाले कार्य ही सदा करने चाहिए। उन तीनो के प्रसन्न रहने पर सभी तपों का फल प्राप्त होता है।

One must ever do that what is pleasing to the parents and to the Guru. When these three are pleased, the fruit of all penance is attained.

चोदितो गुरुणा नित्यमप्रचोदित एव वा।
कुर्यादध्ययने यत्नमाचार्यस्य हितेषु च॥ ४४॥

(सुभाषित)

गुरु (शिक्षक) के द्वारा प्रेरणा मिले या बारम्बार स्मरण न भी दिलाया जाय तो भी शिक्षार्थी अध्ययन में रत रहें और शिक्षक तथा अपने हित का आचरण करे।

Whether prompted by the Guru or not everyday one must strive to learn and to do what is in the interests of the Guru.

पूजयेदशनं नित्यमद्याच्चैतदकुत्सयन्।
दृष्ट्वा हृष्येत्प्रसीदेच्च प्रतिनन्देच्च सर्वशः॥ ४५॥

(नीति)

प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि सामने में रखे भोजन को सादर और श्रद्धा से बिना किसी दोष निकाले उसको खाये। भोजन देखकर हर्ष से प्रसन्न होवे और ईश्वर को निवेदन कर ग्रहण करे। (इस भावना से खाया अन्न शरीर और मन को पुष्ट बनाता है)।

One should always reverence food and should eat it without finding fault with it. On seeing it, one should feel happy and pleased and should accept it with prayer and salutation.

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः॥ ४६॥

(सुभाषित)

जिस समाज में नारियों का सम्मान होता है वहाँ देवताओं (शुभशक्तियों) का वास होता है। जहाँ नारियों का सम्मान नहीं होता वहाँ समस्त क्रियाएँ (प्रयास) निष्फल होती है।

Where women are honoured, there the Devas rejoice. Where women are not honoured there all rites are fruitless.

वेदाभ्यासस्ततो ज्ञानमिन्द्रियाणां च संयमः।
अहिंसा गुरुसेवा च निःश्रेयसकरं परम्।।४७।।

(सुभाषित)

शास्त्रों का अध्ययन और अभ्यास, ज्ञान, इन्द्रियों को वश में रखना, अहिंसा, गुरु सेवा इन सभी से कल्याण होता है।

Scriptural study, penance, knowledge, control of the senses, and service of the Guru, conduce to the highest good.

सर्वेषामपि चैतेषामात्मज्ञानं परं स्मृतम्।
तद्ध्यग्रं सर्वविद्यानां प्राप्यते ह्यमृतं ततः।। ४८।।

(नीति)

इन सभी (उपर्युक्त) में आत्मज्ञानं सर्वश्रेष्ठ माना गया है। यह ज्ञानों में सर्वश्रेष्ठ ज्ञान है। आत्मज्ञान के द्वारा अमरता की प्राप्ति होती है।

Among all of these, knowledge of the Atma, is regarded as the best. It is the foremost of all knowledge. Through it one attains immortality.

सम्यग् दर्शनसंपन्नः कर्मभिर्न निबध्यते।
दर्शनेन विहीनस्तु संसारं प्रतिपद्यते।। ४९।।

(नीति)

सत्य ज्ञान वाला व्यक्ति कर्मों के बंधन में नहीं पड़ता। परन्तु जो ज्ञान हीन है वह सांसारिक बंधनों में उलझ जाता है।

He, who has true knowledge, is unfiltered bu action. But he who lacks the knowledge is subject to transmigration.

यो बन्धनवधक्लेशान्प्राणिनां न चिकीर्षति।
स सर्वस्य हितप्रेप्सुः सुखमत्यन्तमश्नुते।। ५०।।

(नीति)

जो व्यक्ति प्राणियों को बंधन, हिंसा और क्लेश (दुःख) देना नहीं चाहता और सबका हितैषी बनकर रहता है, वह अनन्त सुख पाता है।

He who does not have any inclination to blind, hurt or kill creatures and who is desirous of the good of all, attains endless happiness.

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयान्न ब्रूयात्सत्यमप्रियम्।
प्रियं च नानृतं ब्रूयादेष धर्मः सनातनः॥ ५१॥

(नीति)

सत्य बोलना चाहिए, प्रिय बोलना चाहिए किन्तु अप्रिय सत्य नहीं बोलना चाहिए। इसी प्रकार प्रिय लगने वाली झूठ बात भी नही कहनी चाहिए, यह व्यावहारिक (सनातन) धर्म है।

Speak the truth, utter that which is pleasant. Do not utter an unpleasant truth. Do not also speak that, which is false but pleasant. That is the eternal (applied) Dharma.

न तथैतानि शक्यन्ते संनियन्तुमसेवया।
विषयेषु प्रजुष्टानि यथा ज्ञानेन नित्यशः॥ ५२॥

(नीति)

विषयों में उलझी इन्द्रियों को विषयों से हटाकर आसानी से वश में नहीं किया जा सकता, अपितु विषयों की आसक्ति में होने वाले दोषों के निरंतर ज्ञान से वश में किया जा सकता है।

The senses attached to objects, cannot be so restrained by non-enjoyment, brought out by running away from sense objects, as by constant knowledge or awareness of the faults in sense objects.

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम्॥ ५३॥

(महाभारत)

अपने से ज्येष्ठों (बड़ों) का सदा आदर, अभिवादन और उनकी संगति करने से मनुष्य की चार चीजें-आयु, विद्या, यश और बल की बूद्धि होती है और वह प्रसन्न रहता है।

Four factors namely life span, wisdom, fame and strength increase for the one, who ever salutes and serves elders.

असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय
मृत्योर्माऽमृतं गमय॥ ५४॥

(वृहदारण्यक उपनिषद्)

हे परमेश्वर मुझे असत् (बुरे) से हटाकर सत् (अच्छे) मार्ग की ओर ले चलो। मुझे अंधकार से हटाकर प्रकाश की ओर ले चलो। मुझे मृत्यु नहीं अमरता की प्राप्ति कराओ।

O Lord, From unreal lead me to the real, from darkness lead me to light (knowledge), from death lead me to immortality.

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥ ५५॥

(ईशावास्योपनिषद्)

मनुष्य को अपने कर्त्तव्य कर्म की ओर और तत्पर रहना चाहिए और कर्त्तव्य पालन करता हुआ व्यक्ति सैकड़ों वर्ष जीवित रहने की कामना कर सकता है। कर्तव्य पालन के अतिरिक्त जीवनयापन का कोई उचित मार्ग नहीं है। और उस स्थिति में कर्मफल के भोग में भी कोई दोष नहीं।

Always one must carry our his duties. If he does so, he may be entitled to pray to live a hundred years. There is no path other than the performance of duty. Yet one should get attached to the fruits of his actions.

यस्तु सर्वाणि भूतानि आत्मन्येवानुपश्यति।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते॥ ५६॥

(ईशावास्योपनिषत्)

जो प्राणी सभी प्राणियों को अपने आप में (आत्मा में) आत्मवत् अनुभव करता है (देखता है) और स्वयं को सभी प्राणियों में अनुभव करता है, वह किसी के प्रति कोई दुर्भाव (ईर्ष्या आदि) नहीं रखता।

He, who sees all beings in himself and his own self in all beings, harbors no ill-will against any one.

विद्यां चाविद्यां च यस्तद् वेदोभयं सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते॥ ५७॥

(उपनिषद्)

विद्या (आध्यात्मिक ज्ञान) और अविद्या (सांसारिक माया, बंधन) ये दोनों विभिन्न प्रकार के प्रभाव देते हैं। जिनके पास अविद्या का प्रभाव है और आध्यात्मिक ज्ञान नहीं है वे सांसारिक जीवन तो व्यतीत कर लेते हैं किन्तु यदि उन्हें आध्यात्मिक ज्ञान (विद्या) का आश्रय मिलता तो वे अमरता प्राप्त कर लेते हैं।

The righteous worldly actions on the one hand and Spiritual knowledge on the other, have their own different results. One, who does not have spiritual knowledge, but who performs righteons actions in life crosses over the present life successfully. If he also had knowledge he would attain immortality.

हिरण्येन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।
तत् त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये॥ ५८॥

(ईशावा०)

सत्य के मार्ग का मुख (द्वार) सांसारिक सुखद आकर्षणों के सुनहरे पात्र (पर्दे) से ढका हुआ है। हे प्रकाशमान् सर्वपोषक, उस भौतिक आकर्षण के पर्दे को हटाओ ताकि मुझ सत्यधर्म का ज्ञान प्राप्त हो सके और मैं परमसत्य को देख सकूँ।

The entrance leading to the path of truth is hidden from view by the curtain of gold (material attractions). May this curtain be removed so that I, the worshipper of truth, am enabled to see the supreme truth.

अविद्यायाम् अन्तरे वर्तमानाः
स्वयं धीराः पण्डितं मन्यमानाः।
दन्द्रम्यमाणाः परियन्ति मूढ़ा
अन्धेनैव नीयमाना यथान्धाः॥ ५९॥

(कठोपनिषद्)

अज्ञानी व्यक्तियों के बीच रहने वाले मूढ़ व्यक्ति अपने को ज्ञानी और धीर (बुद्धिमान) मानते हैं। अन्य अज्ञानियों की बात सुनकर स्वीकार करते हुए वे अज्ञान के घेरे में ही फंसे रहते हैं। ऐसा लगता है जैसे अंधे व्यक्ति के द्वारा अन्धा ले जाया जा रहा है।

Living in the midst of ignorant people, fools consider themselves wise and learned. Listening to other ignorant people they keep on going in circles as though the blind were leading the blind.

न वै श्रुतमविज्ञाय वृद्धाननुपसेव्य वा।
धर्मार्थौ वेदितुं शक्यौ बृहस्पतिसमैरपि॥ ६०॥

(नीति)

शास्त्रों के ज्ञान की उपेक्षा करके, बड़े-बूढ़ों की बातों की उपेक्षा करके धर्म (कर्त्तव्य) और अर्थ (सुख) के मार्ग को नहीं जाना जा सकता। देवगुरु बृहस्पति जैसे ज्ञानी व्यक्ति भी शास्त्र और बड़े-बूढ़ों की उपेक्षा कर सुख नहीं प्राप्त कर सकते।

Without knowing the scriptures and without waiting upon elders, Dharma and profit can not be discerned even by persons as intelligent as Brihaspati, the Guru of the Devas.

शीलं प्रधानं पुरुषे तद्यस्येह प्रणश्यति।
न तस्य जीवितेनार्थो न धनेन न बन्धुभिः॥ ६१॥

(नीति)

शील (सदाचरण) किसी व्यक्ति के लिए महत्त्वपूर्ण गुण है। जिस व्यक्ति का चरित्र अच्छा नहीं है उसके लिए जीवन, धन और बन्धु-वान्धव सब व्यर्थ हैं। (चरित्रहीन व्यक्ति का जीवन निष्फल है।)

Good character is most important for a person Life, wealth and relatives are of no avail, if he loses it.

अधर्मोपार्जितैरर्थैर्यः करोत्यौर्ध्वदेहिकम्।
न स तस्य फलं प्रेत्य भुङ्क्तेऽर्थस्य दुरागमात्॥ ६२॥

(नीति)

दुराचार से उपार्जित धन के द्वारा जो अपने जीवन की प्रसन्नता लाभ करता है (सुख के साधन जुटाता है), वह इन कर्मो द्वारा मृत्यु के उपरान्त परलोक के सुफल नहीं पाता क्योंकि यह उसके दुराचारपूर्ण अर्जित कर्मों का फल है।

He who performs acts for his happiness in the hereafter with wealth, acquired sinnully, does not reap the fruits of these acts after death, the reason, for this, is the sinfulness of his acquisitions.

महाजनस्य संसर्गः कस्य नोन्नतिकारकः।
रथ्याम्बुजाह्नवीसंगात् त्रिदशैरभिवन्द्यते॥ ६३॥

(नीति)

गुणी महान् व्यक्तियों की संगति से कितनी उन्नति नहीं होती। गंगा नदी के संसर्ग में आयी सामान्य रथ्या (मार्ग) में बहने-वाली जलधारा भी देवों और गुणी व्यक्तियों द्वारा आदृत होती है।

Who is there who is not uplifted by the Company of great ones? after merger with the Ganga, even street water receives the salutations of Devas.

श्रुतं प्रज्ञानुगं यस्य प्रज्ञा चैव श्रुतानुगा।
असंभिन्नार्थमर्यादः पंडिताख्यां लभेत सः॥ ६४॥

(नीति)

शास्त्रों के अध्ययन के अनुसार जिसकी बुद्धि आचरण करे और बुद्धि शास्त्रों का अनुसरण करे तथा जो सदाचार की मर्यादा का उल्लंघन नहीं करता वह पंडित (बुद्धिमान) माना जाता है तथा उसका आदर होता है।

He, whose learning is regulated by reason, whose reasoning is in consonance with the scriptures and who never breaches the norms of proper conduct, is called, wise.

क्षिप्रं विजानाति चिरं शृणोति,
विज्ञाय चार्थं भजते न कामात्।
नासम्पृष्टो व्युपयुङ्क्ते परार्थे,
तत्प्रज्ञानं प्रथमं पण्डितस्य॥ ६५॥

(नीति)

धैर्य और शान्ति से सुनना शीघ्र ही समझ लेना (जान जाना) समझदारी से कार्यान्वित करना न कि किसी लालसा से दूसरों के काम में बिना पूछे हस्तक्षेप नहीं करना ये सभी बुद्धिमान् व्यक्ति के लक्षण

माने गये हैं।

He who listens patiently, understands quickly, pursues his end with discernment and not out of craving and does not intervene unasked in the affairs of another, has the eminent wisdom of the wise.

नाप्राप्यमभिवाञ्छन्ति नष्टं नेच्छन्ति शोचितुम्।
आपत्सु च न मुह्यन्ति नराः पण्डितबुद्धयः॥ ६६॥

(नीति)

बुद्धिमान व्यक्ति अप्राप्य (नहीं पाने योग्य) वस्तु को प्राप्त करना नहीं चाहते, खोई वस्तु (नष्ट धन) के संबंध में शोक नहीं करते, संकट (दुःख) के समय घबड़ाते नहीं बल्कि धैर्य रखते हैं।

Persons, who do not wish for what should not or can not be had, have no tendency to grieve over what is lost and who do not get confused in calamities, are wise.

मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णा-
स्त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः।
परगुणपरमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यं
निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः॥ ६७॥

(नीति)

जिनके मन, वचन और शरीर गुणरूपी अमृत से पूर्ण हैं। जो अपने परोपकार के कार्यों से तीनों लोकों को प्रसन्न रखते हैं, जो दूसरों के छोटे से छोटे गुणों को पर्वत जैसा मानकर उनका बखान करते हैं ऐसे उदार हृदय वाले विद्वान् सज्जन कितने हैं? अर्थात् ऐसे सज्जन बहुत कम मिलते हैं।

Rare are the good persons, who are full of the nector of virtue in thought word and deed, who please the three worlds with numourous acts of beneficience and rejoice viewing even the minutest good qualities of others as mountainlike.

वदनं प्रसादसदनं सदयं हृदयं सुधामुचो वाचः।
करणं परोपकरणं येषां, केषां न ते वन्द्याः॥ ६८॥

(नीति)

जिनके सुख पर सदा शान्ति और प्रसन्नता झलकती है, जिनके हृदय दया से पूर्ण हैं, जिनकी वाणी अमृत जैसी मधुर है, जो परोपकार करना अपना कर्म मानते हैं, वे किसके वन्दनीय नहीं? अर्थात् वे सभी के प्रिय होते हैं।

Who would not find adorable those whose face is the abode of calmness, heart is full of compassion, speech showers nector and activity is doing good to others.

पराञ्चि खानि व्यसृणत् स्वयंभूः
तस्मात् पराङ्पश्यति नान्तरात्मन्।
कश्चिद् धीरः प्रत्यगात्मानमैक्षद्
आवृत्तचक्षुरमृतत्वमिच्छन्॥ ६९॥ (कठोप०)

ब्रह्मा ने मनुष्य की सभी इन्द्रियाँ (आँख, कान, नाक, आदि) शरीर से बाहर की ओर उन्मुख हुई बनाई, अतः मनुष्य इन इन्द्रियों से अपनी (आत्मा की) ओर नहीं देखता बल्कि दूसरों की ओर ही देखता रहता तथापि इसके विपरीत अमरत्व की इच्छा रखने वाला कोई धीर व्यक्ति बाहरी दृश्य से नेत्र मूंद कर आत्मा का अवलोकन करता है।

The great Lord made the man's sense facutlies (eyes, ears, nose, mind etc.) turn outward, therefore people are not looking inward into their Soul. Once in a rare while is there is discriminating man, who desires immortality, who closes his eyes to the outside and peeps into the indwelling Soul.

सत्यमेव जयते नानृतम्
सत्येन पन्था विततो देवयानः।
येनाऽक्रमन्त्यृषयो ह्याप्तकामा
यत्र तत् सत्यस्य परमं निधानम्॥ ७०॥ (उपनिषद्)

सत्य की ही विजय होती है, असत्य की नहीं देवताओं द्वारा अपनाया मार्ग, सत्यपूर्ण कार्य करने वालों के लिए सुलभ है, ऋषि मुनि स्वार्थपूर्ण कामनाओं से पूर्ण हृदय वाले नहीं होते, अतः वे इस सत्यमार्ग पर चलकर परमसत्य को प्राप्त कर लेते हैं।

Truth alone triumphs, not untruth. The path the angels tread is spread out for those, whose actions are righteous, Sages are not

contaminated with selfish desires and they travel this path to reach the supreme truth.

यत्प्रज्ञानमुतचेतो धृतिश्च
यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु।
यस्मान्न ऋते किंचन कर्म
क्रियते, तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥ ७१॥

(यजुर्वेद)

जो (मन) उच्चज्ञान, चेतना और धारणा की शक्तियों से युक्त है, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार अन्तःकरण के इन चार रूपों को धारण करता है, जो प्राणियों के अन्दर अविनाशी ज्योति है, जिसके बिना कोई भी कर्म नहीं किया जा सकता, वह मेरा मन सदा शुभसंकल्पों से युक्त हो।

The mind, which is full of the Power of high knowledge, feeling retention and can have the forms of intellect, wisdom heart, arrogance may be full of good resolves. My mind, which is like an immortal light, without which no activity can be performed, may always be full of good resolves.

विदा मघवन् विदा गातुमनु शंसिषो दिशः॥ ७२॥

(सामवेद)

हे ऐश्वर्यशाली मघवन् (परमेश्वर) तू सब कुछ जानता है, सर्वज्ञ है। मुझे मार्ग का ज्ञान करा, यथाक्रम दिशाएं दिखला, लक्ष्य की प्राप्ति के लिए दिशाओं का दर्शन करा।

O Almighty God, you know everything. Let me be aware about my path, show me the directions and show me the ways for achieving the aims.

पश्यन्तो अन्धं दुरितादरक्षन्॥ ७३॥

(ऋग्वेद)

आँखों वाले दृष्टिहीन को संकट से बचाएं अथवा अन्तर्दृष्टि से सम्पन्न ज्ञानी अज्ञानी को कुमार्ग से बचाएं।

The persons having eyes, may protect blinds from bad effects Situation or the wise persons having insight, should remove the

unknowledgeable persons from wrong path.

जिह्वाया अग्रे मधु मे जिह्वामूले मधूलकम्॥ ७४॥

(अथर्व॰)

मेरी जिह्वा के अग्रभाग में माधुर्य हो, जिह्वा के मूलभाग में, (स्त्रोत में) माधुर्य की प्रचुरता हो।

Let there be sweatness in the front and root af my tongue. There should be overall sweatness in my speech.

अभयं मित्रादभयममित्रादभयं
ज्ञातादभयं परोक्षात् पुरो यः।
अभयं नक्तमभयं दिवा नः
सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु॥ ७५॥

(अथर्ववेद)

हमें मित्र से भय न हो, शत्रु से भय न हो, परिचित जन या पदार्थ से भय न हो, जो दृष्टि से अगोचर है उससे भी भय न हो, जो अज्ञात प्राणी या पदार्थ सामने आ जाय उससे भी भय न हो।

हमें रात को भय न हो, दिन मे भय न हो, सभी दिशाएं मेरी मित्र हों।

May I be fearless of the friend, fearless of the enemy, fearless of the known and fearless of the unknown. May my days be without fear and my nights be without fear. Let the whole world desire to be friendly with me.

भद्रं नो अपि वातय मनो दक्षमुतक्रमुत्॥७६॥

(सुभाषित)

हे देव, हमारे चित्त, विवेक, संकल्प, प्रज्ञा और कर्म को कल्याण की ओर ले चलो।

O God, let us divert our hearts, wisdom, intension and actions to our welfare.

इन्द्र मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः सुपर्णो गरुत्मान्।
एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः॥ ७७॥

(ऋग्वेद)

एक ही सत्यस्वरूप परमेश्वर को ज्ञानीजन इन्द्र, मित्र, वरुण और अग्नि कहते हैं और वही दिव्य सबका पालन एवं उनके पूर्ण विकास का साधक महान् आत्मा है। उसे वे अग्नि, यम और मातरिश्वा आदि नाना नामों से पुकारते हैं।

The wise person call Almighty God, the form of truth, as Indra, Mitra, Varuna and Agni. That heavenly power is only the protector and developer Atman of all. He is also addressed as Agni, Yama, and Matarishwa.

अदीनाः स्याम शरदः शतम्॥ ७८॥ (यजु०)

मनुष्य की सम्पूर्ण आयु, शतवर्ष पर्यन्त हम स्वाधीन और स्वावलम्बी रहें तथा दीनता और दरिद्रता से दूर रहें।

May we live in freedom and self dependence for hundred of years (the full life of a person) and may be away from cowardness and deficiency.

सरसो विपरीतश्चेत् सरसत्वं न मुञ्चति।
साक्षरा विपरीताश्चेद्राक्षसा एव केवलम्।
बहुभिर्न विरोद्धव्यं साक्षरैर्न कदाचन।
साक्षरा विपरीताश्चेद् राक्षसा एव केवलम्॥ ७९॥

(सुभाषित)

दया, ममता, करुणा आदि अन्तःकरण के गुणों से युक्त विवकी सरस मानव विपरीत अवस्था में भी सरसता को नहीं छोड़ते, क्योंकि यदि सरस शब्द को विपरीत (उल्टा) भी पढ़ा जाय तो सरस ही पढ़ा जायेगा। किन्तु साक्षरा शब्द का विपरीत (उल्टा) उच्चारण करने पर राक्षसा शब्द उच्चारित होता है।

The wise persons, who are occupied with the qualities like kindness, affection, mercy, do not leave their sweatness in reverse situation also. As the word SARAS read reversely also remains SARAS, but the word SAKSHARA (educated) uttered reversely becomes RAKSHASA (demon).

पश्येम शरदः शतम् जीवेम शरदः शतम्
बुध्येम शरदः शतम् रोहेम शरदः शतम्

पूषेम शरदः शतम् भवेम शरदः शतम्॥ ८०॥

(अथर्ववेद)

हम सैकड़ों वर्ष तक शुभ दृष्टि से देखते रहें, सैकड़ों वर्ष तक जीवित रहें, सैकड़ों वर्ष तक ज्ञान प्राप्त करते रहे। (ज्ञानवान हों), सैकड़ों वर्ष तक विकसित होते रहें, सैकड़ों वर्ष तक तेजस्वी रहें और सैकड़ों वर्ष तक नीति का पालन करते रहें।

May we be granted a hundred years to see well, a hundred years to live a hundred years to grow, a hundred years to abide.

शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा।
शं न इन्द्रो बृहस्पतिः शं नो विष्णुरुरुक्रमः॥ ८१॥

(ऋग्वेद)

विवेक शक्ति प्रदान कर मैत्रीपूर्ण सामंजस्य स्थापित करने वाले मित्र देवता, हमारे लिए सुखद और शांतिमय हों, ज्ञान और शक्ति के विराट् स्वरूप वरुणदेव सुखशांतिदायक हों ज्ञान प्राप्ति की यात्रा में संचालन शक्ति के रूप में अर्यमा हमारे लिए शान्ति दायक हों, सत्य का आभास कराने वाले इन्द्र हमें सुखशांति प्रदान करें, अज्ञानांधकार को दूर करने वाले बृहस्पति हमारे लिए सुखशांतिदायक हों, सम्पूर्ण संसार को व्याप्त करने वाले विष्णु भी हमारे लिए शांतिदाता और कल्याणकारी हो।

May Mitra (Sun) our friend and protector, be propitious to us. May varuna, the inspirer of righteousness, be propitious to us.

May Aryaman calling for activity be propitious to us.

May Indra, calling for activity be propitious to us. May Brihaspati the granter of wisdom, be propitious to us. May Vishnu of long strides, who is our preserver, be propitious to us.

शं सरस्वती सह धीभिरस्तु।
शन्नो दिव्याः पार्थिवाः शन्नो अप्याः॥ ८२॥

(ऋग्वेद)

हमारी निर्मल बुद्धि और ज्ञान हमारे लिए सुखद एवं कल्याणकारी हो। पृथिवी, दिवलोक और जल में रहने वाले सभी प्राणी हमारे लिए कल्याणकारी हो।

May our learning and pure intellect bring us happiness. May all those who dwell on the earth and the sky and in the water bring us happiness.

मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः।
माध्वीर्नः सन्त्वौषधीः।
मधु नक्तमुतोषसो मधुमत् पार्थिवं रजः॥
मधु द्यौरस्तु नः पिता।
मधुमान् नो वनस्पतिः मधुमाँ अस्तु सूर्यः।
माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥ ८३॥

(ऋग्वेद)

समस्त हवाएं प्रसन्नतापूर्वक बहें और सुखद हों, नदियाँ अपनी धारा प्रवाहित कर सुखद हों, वृक्ष-पौधे और वनस्पतियाँ विकसित होकर सुख प्रदान करें, रात्रि और अरुणोदय की वेला हमारी प्रसन्नता को बढ़ायें तथा पृथिवी हमें सुख-ऐश्वर्य प्रदान करें

May the winds blow happily, may the night and dawn increase our happiness and may the mother earth bring happiness to us. Let the father heaven be like nector, let our cows produce for us milk, sweet like honey and let the sun be plesant to us.

अनुव्रतः पितुः पुत्रो माता भवतु संमनाः।
जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शान्तिवाम्॥ ८४॥

(अथर्ववेद)

पुत्र पिता का अनुसरण करे और माता के प्रति अनुराग रखे। पत्नी अपने पति से मधुर और प्रिय वाणी बोले।

(परिवार और कटुम्ब में लोगों का सौमनस्य और अनुरागपूर्ण सम्बन्ध समाज को भी अवश्य प्रभावित करेगा।)

Let the son follow the father and love the mother. Let the wife speak sweetly to her husband.

स्वस्ति गोभ्यः जगतः पुरुषेभ्यः।
विश्वं सुभूतं सुविदत्रं नोऽस्तु॥ ८५॥

(अथर्ववेद)

संसार के सभी पशु जीवजन्तु और मानव प्रसन्न रहें। पृथिवी समृद्ध हो और समृद्धि प्रदान करे।

May all men and animals be happy. May the earth be abundant and bestow abundance on us.

शन्नो वातः पवतां शन्नस्तपतु सूर्यः।
शन्नः कनिक्रदद्देवः पर्जन्योऽभिवर्षतु॥ ८६॥

(यजुर्वेद)

पवन हमें शीतलता प्रदान करे, सूर्य की तीक्ष्य किरणें हमारे लिए सुखद हों मेघ भरपूर सुवृष्टि करें और ईश्वर हमें सुख, प्रसन्नता प्रदान करें।

May the breezes bring us happiness, may the sun shine brightly. May the rains rains pour profusely and may God bestow happiness on us.

सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः।
अन्योऽन्यमभिहर्यत वत्सं जातमिवाध्न्या॥ ८७॥

(अथर्ववेद)

जैसे एक बछड़ा अनुराग और प्रेमपूर्वक आत्मीयता भाव से अपनी माँ (गाय) के शरीर से अपना शरीर रगड़कर अपनी सहानुभूति प्रदर्शित करता है वैसे ही मैं भी अपने घृणारहित, उदार, स्नेहपूर्ण हृदय से तुम्हारे प्रति अपनापन का भाव व्यक्त करता हूँ।

Like a calf affectionately rubbing himself against his mother, I extend a lively, benevolent hearts towards you (to mother) a heart, that is free from hatred.

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन् मा स्वसारमुत स्वसा।
सम्यञ्चः सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया॥ ८८॥

(अथर्ववेद)

भाई भाई के प्रति द्वेष न रखें और न बहन बहन से घृणा करें, वे आपस में शिष्टाचार पूर्वक नीतिपूर्ण बातें करें और सभी एक दूसरे के हित की कामना करें।

Let not brother deslike brother and sister dislike sister. Let them speak with courtesy and discipline, wishing each other good.

अहिंसा सत्यमस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
एतं सामासिकं धर्मं चातुर्वर्ण्येऽब्रवीन्मनुः॥८९॥

(मनुस्मृति)

अहिंसा (किसी को किसी प्रकार कर दुःख न देना) सत्य आचरण, अस्तेय (किसी की धन सम्पत्ति को न चुराना) बुद्धि, शरीर और वाणी की पवित्रता, इन्द्रियों का वशीकरण- ये सभी बातें समाज के सभी वर्ग के लोगों के लिए पालनीय कर्त्तव्य (धर्म) हैं।

Abstaining from causing injury to others, honesty, non-encroachment on ther's property, purity of mind, body and speech and restraint ofn the senses make up the core Dharma of morality. This has to be practised by all sections of society.

कामक्रोधौ वशे कृत्वा दम्भं लोभमनार्जवम्।
धर्म इत्येव सन्तुष्टाः ते शिष्टाः शिष्टसम्मताः॥ ९०॥

(महाभारत)

काम, क्रोध, दम्भ (मिथ्या अभिमान) लोभ और शठता इन दुर्गुणों को छोड़कर जो व्यक्ति एक नैतिक और सदाचारपूर्ण जीवन व्यतीत करते हुए प्रसन्न हैं, वे बुद्धिमान् नागरिक है।

Those, who keep under control lust, anger, hypocricy, greed and crookedness and who are happy to live a morel life are wise citizens.

अद्रोहः सर्वभूतेषु कर्मणा मनसा गिरा।
अनुग्रहश्च दानं च शीलमेतत् प्रशस्यते॥ ९१॥

(महाभारत)

जीवमात्र के प्रति कर्म, मन और वचन से विश्वासघात नहीं करना चाहिए तथा सबके प्रति सद्भाव, सहानुभूति रखते हुए दान (परोपकार) की भावना रखनी चाहिए- यही सच्चा धर्म और चरित्र माना

जाता है।

No treachery should be committed against any being in action, thought and mind. All must be helped. One should share what he has with others.

दातारः संविभक्तारः दीनानुग्रहकारिणः।
सर्वभूतदयावन्तः ते शिष्टाः शिष्टसम्मताः॥ ९२॥

(महाभारत)

दूसरों को दान देने वाले, दीनों और दलितों की सहायता करने वाले तथा सभी प्राणियों पर सहानुभूति रखने वाले सज्जनों की गणना अच्छे नागरिकों में की जाती है।

Those who give to others, help the underprivileged and are compassionate towards all, are good citizens.

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखमाप्नुयात्॥ ९३॥

(सुभाषित)

सभी सुखी हों, सभी नीरोग रहें, सबकी भलाई हो और कोई किसी प्रकार का दुःख न पाये (भोगे)। (लोकमंगल की भावना विद्या (ज्ञान) प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों में प्रेम, सहानुभूति, त्याग, सहिष्णुता, विचारशीलता आदि गुणों का विस्तार करती है।

May all be happy. May all be healthy. May all look at the welfare, let no one feel any sorrow.

एकस्य कर्म संवीक्ष्य करोत्यन्योऽपि गर्हितम्।
गतानुगतिको लोको न लोकः पारमार्थिकः॥९४॥

(नीति)

किसी एक के निन्दित कार्य को देखकर अन्य व्यक्ति भी उसका अनुकरण करता है। यह संसार दूसरों की देखा-देखी करने वाला है, न कि सत्य (परमार्थ) की ओर ध्यान देने वाला।

Biholding the censurable act of one, another follows it, people do as others do. people do not care for the truth.

कन्दुको भित्तिनिक्षिप्त इव प्रतिफलन्मुहुः मुहुः।

आपतत्यात्मनि प्रायो दोषोऽन्यस्य चिकीर्षतः॥ ९५॥

(नीति)

जैसे दीवार पर फेंकी गयी गेंद बार-बार वापस आती है वैसे ही जो व्यक्ति दूसरों की हानि करना चाहता है वह स्वंय विपत्ति का भागी हो जाता है।

A ball that is hurled at a wall repeatedly bounces back. Likewise, harm generally befalls the person who desires to harm another.

गोघ्ने चैव सुरापे च चौरे भग्नव्रते तथा।
निष्कृतिर्विहिता सद्भिः कृतघ्नेनास्ति निष्कृतिः॥ ९६॥

(नीति)

धर्माचार्यो ने गोवध करने वाले, मदिरा पीने वाले, चोरी करने वाले तथा प्रतिज्ञा (व्रत) भंग करने वाले व्यक्ति के लिए तो प्रायश्चित्त का विधान किया है, .किन्तु कृतघ्न व्यक्ति के लिए किसी प्रायश्चित्त का विधान नहीं है।

Sages have prescribed expitations for one who has killed a cow, one who has consumed wine as also one who is a thief and who has transgressed a vow. However there is no expiation for who is ungrateful.

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥ ९७॥ (नीति)

"यह आत्मीय है या पराया है"- इस प्रकार का चिन्तन तुच्छ विचार वाले करते है। उदार विचारधारा के व्यक्ति में तो पूरी धरती के लोगों के प्रति परिवार (कुटुम्ब) के समान आत्मीयता होती है।

"This person is close or strange to me"- such separation due to attachment and aversion, reveals meanness. For broad-minded people the whole world is one family.

सुजनो न याति वैरं परहितनिरतो विनाशकालेऽपि।
छेदेऽपि चन्दनतरुः सुरभयति मुखं कुठारस्य॥ ९८॥

(नीति)

परोपकार में लगा सज्जन व्यक्ति अपने विनाश के समय भी शत्रुता (दुर्भाव) नहीं करता। जैसे चन्दन का वृक्ष काटे जाने पर भी, अपने शत्रु कुल्हाड़ी के मुख (धारदार किनारी) को सुगंधित कर देता है।

A good person, intent on the welfare of others, does not nurture enemity even at the time of desturction. A Sandal tree even on being cut, yields sweet fragrance to the tip of the axe that cut it.

दुर्जनेन समं सख्यं प्रीतिं चापि न कारयेत्।
उष्णो दहति चाङ्गारः शीतः कृष्णायते करम्॥ ९९॥

(नीति)

दुर्जन के साथ मित्रता और प्रीति भी नहीं करनी चाहिए। जैसे अग्नि का गरम अंगारा स्पर्श करने पर हाथ को जलाता है और ठंडा होने पर काला कर देता है।

One should not have friendship with or foundness for a wicked person, charcoal when live burns the hand that comes into contact with it and when cold blackens the hand.

अहो दुर्जनसंसर्गान्मानहानिः पदे-पदे।
पावको लोहसङ्गेन मुद्गरैरभिहन्यते॥ १००॥ (नीति)

दुर्जन के सम्पर्क से व्यक्ति की मानहानि पग-पग पर होती है। लोहार के यहाँ लोहे के गरम (लाल) टुकड़े के साथ-साथ आग को भी हथौड़ो से पीटा जाता है।

Alas, by bad company one's honour is lost step by step. On account of association with a piece of iron (in a smithy) fire has to suffer being beaten by a hammer.

अक्रोधेन जयेत् क्रोधमसाधुं साधुना जयेत्।
जयेत् कदर्यं दानेन जायेत् सत्येन चानृतम्॥ १०१॥

(नीति)

क्षमा सहनशलता से क्रोध को, दुष्ट व्यक्ति को साधुता से, कृपणता को दान से और झूठ को सत्य से दबाकर प्राप्त करना चाहिए।

Anger should be conquered by forgiveness, the wicked should be conquered by goodness, miserliness should be conquered

by charity and falsehood should be conquered by truth.

रिपौ बन्धौ स्वदेहे च समैकात्म्यं प्रपश्यतः।
विवेकिनः कुतः कोपः स्वदेहावयवेष्विव॥ १०२॥

(नीति)

जो व्यक्ति शत्रु में, भाई में, अपने शरीर में बिना किसी भेदभाव के समता का भाव रखता है उस विवेकी व्यक्ति को किसी के प्रति उसी प्रकार क्रोध नहीं होता जिस प्रकार अपने शरीर के अवयवों पर नहीं होता।

Like towards the parts of one's own body, how can there be anger towards anyone in the discriminating man who sees the same Atma in an enemy, in a relative and in his own body.

प्रजापतिर्जनयति प्रजा इमा
धाता दधातु सुमनस्यमानः।
संजानानाः संमनसः सयोनयो
मयि पुष्टं पुष्टपतिर्दधातु॥ १०३॥

(अथर्ववेद)

परमेश्वर हमारा जनक और पालक है। वह हमारा माता-पिता और शुभैषी है, वह हमारा आश्रय है। हम स्वयं में विवेक और एकता प्राप्त करें। हमारे विचार और कर्म की एकता हमें समाज में शक्तिशाली बनाये।

God is our lord and master. He is our parent and well wisher. He is our support. He wants ur to acquire wisdom and unity among ourselves. Unanimity of thought and action in our society will make us strong.

सत्यं बृहद् ऋतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म
यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं
लोकं पृथिवी नः कृणोतु॥ १०४॥

(अथर्ववेद)

सत्यनिष्ठा, धार्मिकता (कर्त्तव्यपरायणता) साहस, परिश्रम आदि सद्गुण, ईश्वर के प्रति विश्वास, प्रर्थना और उदारता ये सभी राष्ट्र को सबल बनाते है।

हमारा राष्ट्र, जो हमारे भूत, वर्तमान और भविष्य की समृद्धि है, हमारे लिए विस्तृत सुख समृद्धि के अवसर प्रदान करें।

The qualities of truthfulness, righteousness daring and hard work, combined with belief in God, prayer and charity are what upholds a nation.

May our country, the mistress of our past, presant and future open vide opportunities for us.

उपकारिषु यः साधुः साधुत्वे तस्य को गुणः।
अपकारिषु यः साधुः, साधुः सद्भिरुच्यते॥ १०५॥
(नीति)

उपकार करने वाले व्यक्ति के प्रति सज्जनता (साधुता) का व्यवहार करने वाले की कोई विशेषता नहीं क्योंकि उपकारी के प्रति कोई भी बदले की भावना से साधुता रखेगा। सच्चा साधु तो उसे मानते हैं जो अपकार करने वाले का उपकार करता है और बदले में उससे कुछ नहीं पाता।

What is the merit in the goodness of a person who is good to those who help him? It is the man, who is good to those who harm him who is deemed good by the great.

आ भारती भारतीभिः सजोषा
इला देवैर् मनुष्येभिर् अग्निः।
सरस्वती सारस्वतेभिर् अर्वाक्
तिस्रो देवीर् बर्हिरिदं सदन्तु॥ १०६॥
(ऋग्वेद)

समृद्धि की देवी भारती, शक्ति की देवी इला और बुद्धिदात्री सरस्वती तीनों दैवी शक्तियाँ हमारे मध्य विराजमान हों।

Let the three Goddness- Bharati the goddness of prosperity, Ila, the Goddess of power and Saraswati the Goddess of wisdom, come and sit down amidst us.

सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम्।
वृणुते हि विमृश्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वयमेव सम्पदः॥ १०७॥

(किरातार्जुनीय)

अविवेक (विचारहीनता) अनेक विपत्तियों का कारण है। अतः सोचे-विचारे बिना कोई काम नहीं करना चाहिए, सोच विचारकर काम करने वाले व्यक्ति के गुणों से आकृष्ट होकर सम्पत्तियाँ (अच्छाइयाँ) स्वयं उसके पास आ जाती है और उसे कभी दुःख नहीं मिलता।

Never act in impulse, for indiscrimination leads to great calamity. To him who cogitates before acting, prosperity accrues of its own accord.

अनुबन्धं च संप्रेक्ष्य विपाकं चैव कर्मणाम्।
उत्थानमात्मनश्चैव धीरः कुर्वीत वा न वा॥१०८॥

(नीति)

किसी काम की प्रकृति, परिणाम और अपनी योग्यता का सम्यक् विचार करके निर्णय करना चाहिए कि धीर व्यक्ति (बुद्धिमान्) उस काम को करे या उससे अपने को अलग रखे।

It is after having considered the nature of an act, the consequences and one's ability that a wise person should engage in or abstain from that act.

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः।
प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः।
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः।
प्रारब्धमुत्तमजना न परित्यजन्ति॥ ॥ १०९॥

(सुभाषित)

अधम श्रेणी के लोग बाधाओ के आने के भय से किसी कार्य को प्रारंभ ही नही करते, मध्यम श्रेणी के लोग कार्य को प्रारंभ तो करते हैं किन्तु बाधाओं के आजाने पर काम करना छोड़ देते हैं, किन्तु उत्तम

श्रेणी के लोग बाधाओं के बार-बार आने पर भी उसको दूर कर शुरु किये कार्य को बीच में नही छोड़ते।

Lowly people do not commense neceessary activity our of fear of obstacles. Middling ones, on beinng defeated by obstacles, abandon, what they com mence even though they may be repeatedly troubled by obstacles great persons do not leave.

जायमानो वै ब्राह्मणस्त्रिभिर्ऋणैर्ऋणवाञ्जायते।
यज्ञेन देवेभ्यो ब्रह्मचर्येण ऋषिभ्यः प्रजया पितृभ्यः॥ ११०॥

(नीति)

इस संसार में जन्म लेते ही मनुष्य तीन प्रकार के ऋणों देवऋण, ऋषिऋण और पितृऋण का भागी हो जाता है। यज्ञों के द्वारा देवऋण, वेदाध्ययन (शिक्षा) के द्वारा ऋषिऋण, तथा संतान उत्पत्ति (वंशवृद्धि) के द्वारा एवं उसकी शिक्षा के द्वारा पितृऋण से मुक्त हो सकता है।

The moment an individual is born in this world he incurs three debts, first debt to Gods, second debt to Rishis, third bebt to ancestors. He can liquidate the debts by learning how to perform proper sacrifices and by regularly offering them, by studying Rishis works and continiung their literacy a propesional traditions, by raising progeny and by imparting proper education.

बुद्धिश्च हीयते पुंसां नीचैः सह समागमात्।
मध्यमैर्मध्यतां याति श्रेष्ठतां याति चोत्तमैः॥ १११॥

(महा०)

नीचों के साथ रहने से लोगों की बुद्धि घटती है, मध्यम श्रेणी के लोगो के साथ रहने से मध्यम होती है और उत्तम प्रकृति के लोगों के साथ रहने से बुद्धि और प्रकृति श्रेष्ठ हो जाती है।

Association and imitation play a great part in moulding the character and improving the calibre of a student. Even a dull student will improve his interllect if he is in close association with a brilliant scholar and imitates his methods of study. (one should be very coreful in choosing one's company)

तस्मात् पुत्रमनुशिष्टं लोक्यमाहुस्तस्मादेनमनुशास्ति॥ ११२॥

(वृहदा० उप०)

(मानव अपने पूर्वजों का ऋण) केवल सन्तान को जन्म देने पर ही नहीं चुका लेता बल्कि उस सन्तान को उचित शिक्षा देकर ही उसका कर्त्तव्य पूरा होता है।

A man can discharge his debt to ancestors not merely by procreating sons but by providing for their proper education.

अग्निदाहादपि विशिष्टं वाक्पारुष्यम्।११३॥

(चाणक्य०)

वाणी की कठोरता अग्नि के दाह से भी अधिक कष्टकारी होती है।

The bitterness of speech is more painful than the flame (burning) of fire.

अनवसरे यदुक्तं सुभाषितं तच्च भवति हास्याय। ११४॥

(नीति)

बिना अवसर के कही गयी अच्छी बात भी हँसी का कारण हो जाती है।

A good advice, Couveyed not in a proper time, is not aecepted and become ridiculous.

यदीच्छसि वशे कर्तुं जगदेकेन कर्मणा।
परापवादसस्येभ्यो गां चरन्तीं निवारय॥ ११५॥

(नीति)

यदि (तुम) अपने एक ही कर्म से संसार को जीतना चाहते हो तो अपनी वाणीरूप गाय को परनिन्दा रूप अन्न चरने से रोको।

(अर्थात् वाणी को परनिन्दा में मत लगाओ)

If you wish to win over the world by means of a single deed, restrain the cow, your speech, from grazing in the fields of criticism of others.

किं दातुरखिलैर्दोषैः किं लुब्धस्याखिलैर्गुणैः।
न लोभादधिको दोषो न दानादधिको गुणः॥ ११६॥

(नीति)

दान देने वाले व्यक्ति में यदि अन्य अनेक दोष भी हों तो उनका उस पर कोई प्रभाव नहीं, लोभी व्यक्ति में यदि अन्य अनेक गुण भी हों तो उनका उस पर कोई प्रभाव नहीं। लोभ से बढ़कर कोई दोष नहीं और दान से श्रेष्ठ कोई गुण नहीं है।

A charitable person has nothing to do with defects while a greedy person has nothing to do with virtues. There is no greater fault than greed. There is no greater virtue than charity.

परोपकृतिशून्यस्य धिङ्मनुष्यस्य जीवितम्।
जीवन्तु पशवो येषां चर्माप्युपकरिष्यति॥ ११७॥

(नीति)

दूसरों का उपकार नहीं करने वाले व्यक्ति के जीवन को धिक्कार है। उनसे अच्छा तो पशुओं का जीवन है- वे चिरजीवी हों जो मृत्यु के बाद भी अपने चमड़े के द्वारा दूसरों का उपकार करते है।

Fie on the life of a person who never does good to another. may animals live long, even after death they continue through their skins to serve others.

आनो भद्राः क्रतवो यन्तु
विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः।
देवा नो यथा सद्म इद्वृधे.
असन्न प्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे। ११८॥

(ऋग्वेद)

लाभकारक विचारों को चारों ओर से आने दो ताकि हम उन्हें ग्रहण करें। दैवी शक्तियाँ हमें निर्बाध पवित्र जीवन बिताने हेतु शक्तिशाली बनायें। देवता हमारे पारिवारिक (गार्हस्थ्य) जीवन को समृद्ध रखें, सर्वशक्तिमान हमारी दिनानुदिन रक्षा करें।

May auspicious powers exercise jodgment in our favour. May the powers allowing us unobstructed pure life burst through in

our favour. May the Devas always augment our family welfare indeed. May the Almighty protect us day after day.

विश्वानि देव सवितर् दुरितानि परा सुव।
यद्भद्रं तन्न आसुव॥ ११९॥

(ऋग्वेद)

हे सर्वशक्तिमान विश्वेश, दुर्गुण के मार्ग से हटाकर हमें सन्मार्ग पर लाओ और सद्विचार से पूर्ण करो। जिस मार्ग में हमारा कल्याण हो उसी मार्ग पर हमें ले चलो।

O God, the lord of universe, the stimulator of good thoughts, we ask you to steer us away from an evil path. Please put us on a course which has your blessings

ये हि संस्पर्शजा भोगा दुःखयोनय एव ते।
आद्यन्तवन्तः कौन्तेय न तेषु रमते बुधः॥ १२०॥

(श्रीमद्भगवद्गीता)

इन्द्रियों के स्पर्श से होने वाले सुख दुःख के ही कारण हैं क्योंकि उनका प्रारंभ और अन्त दोनों होता है। (प्रारंभ में तात्कालिक सुख और अन्त में दुःख ही होता है)। अतः ज्ञानी व्यक्ति इन्द्रियजन्य सुखों की ओर आकृष्ट नहीं होता है।

Pleasures born of contacts (of senses with sense objects) are only sources of pain and becouse they have a beginning and an end, O son of Kunti, a wise does not delight in them.

गुरुणा वैरनिर्बन्धो न कर्त्तव्यः कदाचन।
अनुमान्यः प्रसाद्यश्च गुरुः क्रुद्धो युधिष्ठिर॥
सम्यङ्मिथ्याप्रवृत्तेऽपि वर्तितव्यं गुराविह।
गुरुनिन्दा दयत्यायुर्मनुष्याणां न संशयः॥१२१॥

(महाभारत)

गुरुकृपा प्राप्त करना प्रत्येक विद्यार्थी का कर्त्तव्य है। अतः गुरु के साथ कभी वैर नहीं करना चाहिए। उसे सदा प्रसन्न रखना चहिए। गुरु के क्रुद्ध होने पर उसे मनाना चाहिए। गुरु निन्दा से मनुष्य की आयु कम होती है।

One should never make difference (enemity) with the Guru (Teacher). Guru should always be made pleased ever in his being angry. One (the pupil) loses his life-age by defamings criticising the Guru.

समाकुलेषु ज्ञानेषु न बुद्धिकृतमेव तत्।१२२॥

(महाभारत)

संदिग्ध कार्यो में प्रवृत्त होना बुद्धिमानी का काम नहीं है।

It is no wisdom to be inclined in ambiguous activities.

चिन्तनीया हि विपदामादावेव प्रतिक्रिया।
न कूपखननं युक्तं प्रदीप्ते वह्निना गृहे॥ १२३॥

(नीति)

विपत्ति के आने से पहले ही उपाय का चिन्तन कर लेना हितकर होता है। घर में आग लगजाने पर, उसे बुझाने के लिए कुआँ खोदना व्यर्थ है।

At the outset itself one should give thought to difficulties that may arise, it does not make sense to start digging a well when one's house is on fire.

उद्यमेनैव सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः॥ १२४॥

(पंचतंत्र)

निरन्तर प्रयास (पौरुष) से ही कार्यो में सफलता मिलती है, केवल मनोरथ करने से नही। जैसे सिंह अपना भोजन का शिकार वन में पराक्रम से प्राप्त करता है न कि सोये हुए उसके मुख में जीव-जन्तु स्वंय प्रवेश कर जाते हैं।

It is only by effort and not by wishes that tasks are accomplished. Deer do not enter the mouth of a lion that is asleep.

पश्य कर्मवशात्प्राप्तं भोज्यकालेऽपि भोजनम्।
हस्तोद्यमं विना वक्त्रे प्रविशेन्न कथञ्चन॥ १२५॥

(नीति)

भाग्यवश भोजन तो मिल जाता है (किन्तु प्रयास के बिना) खाने के समय हाथ से मुख में डाले बिना वह भोजन मुख में नही चला जाता। अतः भाग्य से प्राप्त वस्तु के लिए भी प्रयत्न करना पड़ता है।

Thought owing to fate food may be obtained at mealtime, it does not enter the mouth in the absence of hand based effort.

जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद्द्विज उच्यते।
विद्यया याति विप्रत्वं त्रिभिः श्रोत्रिय उच्यते॥ १२६॥

(नीति)

जन्म से मानव अशिक्षित और असंस्कृत पैदा होता है, शिक्षा द्वारा उसे संस्कार मिलते है और उसमें गुणों का उदय होता है। शिक्षा से उसकी प्रकृति के अवगुण दूर होते है और उसमें अच्छे संस्कार आते हैं।

Education helps nature to perfection. Even a Bramhana cotinues to remain a Shudra till he receives proper education refining his nature and making him cultured.

यस्य नास्ति विवेकस्तु केवलं यो बहुश्रुतः।
न स जानाति शास्त्रार्थान् दर्वी पाकरसानिव॥ १२७॥

(सुभाषितरत्नभाण्डागार)

जो केवल शास्त्रों को पढ़ लेता है किन्तु तदनुसार बुद्धि में धारण कर आचरण नहीं करता, वह शास्त्र के वास्तविक अर्थ का ज्ञाता नहीं। जैसे करछुल भोजन सामग्री को उलट पलट तो करती है किन्तु उसके रस और स्वाद को नही जानती, वह तो खाने वाला ही जानता है।

The person, who only reads scriptures and does not have wisdom according to Scriptures, does not know the actual meaning of scriptures. Hi is supposed to be like a scoop. which only cooks the vegetable etc and does never know the taste.

न च फलति विकर्मा जीवलोके न दैवम्,
व्यपनयति विमार्गं नास्ति दैवे प्रभुत्वम्।
गुरुमिव कृतमग्र्यं कर्म संयाति दैवम्,
नयति पुरुषकारः संचितस्तत्र तत्र॥ १२८॥ (नीति)

संसार में पौरुष नहीं करने वाला व्यक्ति सफल नही होता। कुमार्ग में चलने वाले व्यक्ति को भाग्य सहारा नहीं देता। जैसे एक शिक्षार्थी अपने गुरु का अनुगमन करता हुआ शिक्षा ग्रहण करता है और भाग्य उसका सहायक हो जाता, वैसे ही पौरुष का सहारा लेने वाले व्यक्ति को जहाँ तहाँ भाग्य भी सहारा दे देता है।

In th world the man who does not exert himself is unfulfilled. Destiny does not full away a man who treads the wrong path, there is so such power in destiny. Like a pupil following his Guru, destiny goes behind effort. Accumulated effort leads it here and there.

उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मी-
दैंवेन देयमिति कापुरुषा वदन्ति।
दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या,
यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोषः॥ १२९॥

(पञ्चतन्त्र)

सिंह के समान पुरुषार्थी व्यक्ति को सुख समृद्धि मिलती है। "भाग्य ही देगा" ऐसी बात कायर पुरुष बोला करते हैं। भाग्य की उपेक्षा कर अपनी शक्ति भर प्रयास करना चाहिए, फिर भी यदि सफलता नहीं मिलती तो अपना कोई दोष नही है।

Prosperity accrues to the valorous man who endeavours. "Let destiny give me affluence" are the words of the contemptible. Overcoming destiny pull forth effort in accordance with your power. There is no fault if even after making an effort, sucess is not had.

छिन्नोऽपि रोहति तरुः क्षीणोऽप्युपचीयते चन्द्रः।
इति विमृशन्तः सन्तः सन्तप्यन्ते न दुःखेषु॥ १३०॥

(नीति)

काटने पर भी वृक्ष पनपता है, चन्द्रमा कृष्णपक्ष में क्षीण हो जाने पर भी बढ़ता है (शुक्लपक्ष में)। ऐसा सोचकर सज्जन व्यक्ति दुःख के समय सन्ताप नही करते हैं।

Though cut a tree grows. The moon that has fully waned waxes. Reflecting thus the great persons do not grieve in adversity.

अनवाप्यं च शोकेन शरीरं चोपतप्यते।
अमित्राश्च प्रहृष्यन्ति मा स्म शोके मनः कृथाः॥ १३१॥

(नीति)

शोक करने से कुछ लाभ नहीं होता बल्कि शरीर को कष्ट मिलता है और वैरी जन दुःखी होकर प्रसन्न होते हैं। अतः दुःख शोक नही करना श्रेयस्कर है।

Nothing is gained through grief instead one's body feels on fire and those who dislike one exult. So, do not yield to grief.

शुभाशुभाभ्यां मार्गाभ्यां वहन्ती वासनासरित्।
पौरुषेण प्रयत्नेन योजनीया शुभे पथि॥ १३२॥

(नीति)

बौद्धिक (वासना की) सरिता शुभ और अशुभ दोनों मार्गों का अनुसरण करती हुई आगे बढ़ती है। अतः पौरुष और सत्प्रयास से उसे सन्मार्ग की ओर ले जाना चाहिए।

The river of mental tendencies carries one along two courses. the good the bad. By effort and manliness one must direct it along the good course.

प्रत्यहं प्रत्यवेक्षेत नरश्चरितमात्मनः।
किन्नु मे पशुभिस्तुल्यं किन्नु सत्पुरुषैरिति॥ १३३॥

(नीति)

मनुष्य को प्रतिदिन अपने आचरण की समीक्षा करनी चाहिए और विचार करना चाहिए कि मेरा आज कौन सा आचरण पशु के समान हुआ और कौन सा सज्जनों की तरह।

Everyday, a person should examine his conduct and see if his behaviour has been similar to that of animals or that of good people.

न देवा दण्डमादाय रक्षन्ति पशुपालवत्।
यं हि रक्षितुमिच्छन्ति बुद्ध्या संयोजयन्ति तम्॥ १३४॥

(नीति)

देवता किसी व्यक्ति की रक्षा दण्ड लेकर पशुपालक की तरह नही करते। वे जिसकी रक्षा करना चाहते उसे वैसी बुद्धि दे देते हैं।

The Devas (gods) do not tend to a person like a cowherd with a stick in hand. To him, whom they wish to protect they give proper understanding.

उपाध्यायात् दशाचार्य आचार्याणां शतं पिता।
सहस्त्रं तु पितृन् माता गौरवेणातिरिच्यते॥ १३५॥

(मनु)

सामान्य शिक्षक की तुलना में (आचार्य) दस गुना अधिक श्रेष्ठ होता है, आचार्यो की तुलना में सौ गुना अधिक श्रेष्ठ स्थान पिता का होता है, और पिता की तुलना में हजार गुना श्रेष्ठ स्थान माता का होता है। अतः आचार्य, पिता, माता की श्रेष्ठता का वरीयता क्रम यही होता है।

A master who teaches the Vedas is ten times greater than any other teacher, the father is a hunderd times greater than the vedic master and the mother is thousand times greater than the father and this is the order to be followed while respecting them.

दण्डः शास्ति प्रजाः दण्ड एवाभिरक्षति।
दण्डः सुप्तेषु जागर्ति दण्डं धर्मं विदुर्बुधाः॥ १३६॥

(मनुस्मृति)

(अनुशासन) के नियम ही दण्ड के रूप में प्रजा पर शासन करते है, और उनकी रक्षा करते है। दण्ड के कारण व्यक्ति सजग रहता है, अतः विद्वानों ने दण्डनीति को ही धर्म माना।

It is the enforcement of law and order (Danda) that protects the Subjects. People will behave carefully on account of Danda. Danda is Dharma.

राज्ञो हि रक्षाधिकृताः परस्वादायिनः शठाः।
भृत्या भवन्ति प्रायेण तेभ्यो रक्षेदिमाः प्रजाः॥ १३७॥

(मनु)

शासक के द्वारा नियुक्त शठ अधिकारी सामान्य जन को कष्ट देते हैं। शासक का कर्त्तव्य है कि इससे जनता को बचाये।

The officers employed by the king (administrator) try to exploit the people. The king should guard against this.

यथा ह्यनुदका नद्यः यथा वाप्यतृणं वनम्।
अगोपाला यथा गावः तथा राष्ट्रमराजकम्॥ १३८॥

(वा. रामायण)

कोई राष्ट्र जिसमें राजनीतिक स्थिरता नहीं है, उसी प्रकार दु:खी होता जैसे बिना पानी के नदी, बिना वृक्ष का वन और बिना पालक की गाएँ।

A Country without political stability is like a river without water, like a forest without plants (tree), like cows without cowherds.

यथा दृष्टिः शरीरस्य नित्यमेव प्रवर्तते।
तथा नरेन्द्रो राष्ट्रस्य प्रभवः सत्यधर्मयोः॥ १३९॥

(वा. रामायण)

जैसे शरीर मे नेत्र सर्वप्रमुख अच्छे मार्गदर्शक के रूप में माने जाते हैं वैसे ही राष्ट्र में सत्य और सदाचार का मार्गदर्शक, उसके नेता (राजा) को माना जाता है।

Just as the eye is the leader of the body the king is the leader of truth and good conduct in a country.

उदेति सविता ताम्रस्ताम्र एवास्तमेति च।
सम्पत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता॥ १४०॥ (नीति)

सूर्य उदय होने के समय और अस्त होने के समय भी ताँबे के रंग जैसा लाल होता है। उसके उदय और अस्त काल का रंग एक समान ही होता है। उसी प्रकार महान् व्यक्तियों की मनः स्थिति संपत्ति (सुख) और विपत्ति (दु:ख) दोनों में एक समान होती है।

The sun is copper-hued both when it rises and when it sets. Likewise the great persons remain the same in prosperity and in adversity.

हीनाङ्गान् अतिरिक्ताङ्गान् विद्याहीनान् वयोऽधिकान्।
रूपद्रव्यविहीनांश्च जातिहीनांश्च नाक्षिपेत्॥ १४१॥

(नीति)

शरीर के किसी अंग में हीनता (कमी) वाले, शरीर में कोई अतिरिक्त भाग वाले, विद्या से रहित व्यक्तियों को, अधिक उम्र वालो को, रूप धन से रहित तथा जाति रहित व्यक्तियों की निन्दा नही करनी चाहिए।

One must not disparage those with dificient limbs, those with excessive bodily parts, the ignorant, the aged, the unattractive, the poor and the socially backward.

सर्वेषामेव शौचानामर्थशौचं परं स्मृतम्।
योऽर्थे शुचिर्हि स शुचिर्न मृद्वारिशुचिः शुचिः॥ १४२॥

(नीति)

सभी पवित्रताओं में अर्थ या धन की पवित्रता श्रेष्ठ मानी गयी है। (अर्थात् धन के लेन-देन के बारे में जो शुद्ध साफ है वह श्रेष्ठ है)। धन के संबंध में जो पवित्र है वही पवित्र है न कि मिट्टी और पानी से शुद्ध हुआ व्यक्ति वास्तविक शुद्ध है।

Purity in monetary acquisition is regarded as the best amongst the kinds of purity. He who is unpolluted in monetary matters, is indeed the pure one, he who is just clean through the use of water and mud is not truely pure.

सुन्दरोऽपि सुशीलोऽपि कुलीनोऽपि महाधनः।
न शोभते विना विद्यां विद्या सर्वस्य भूषणम्॥ १४३॥

(नीति)

एक व्यक्ति जो सुन्दर, सुशील, उच्चकुलीन एवं धनवान् भी है, किन्तु विद्या से हीन है तो शोभित नहीं होता, क्योंकि विद्या ही सर्वश्रेष्ठ आभूषण है, (जो सबको शोभनीय बनाती है)।

A person does not shine without Knowledge even thongh he may be beautiful of good character or born in a rich family. Therefore knowledge is the best of all the ornaments.

नास्ति लोभसमो व्याधिः, नास्ति क्रोधसमो रिपुः।
नास्ति दारिद्र्यवत् दुःखं, नास्ति ज्ञानात् परं सुखम्॥१४४॥

(नीति)

लोभ से बड़ा कोई रोग नहीं है, क्रोध से बड़ा कोई शत्रु नहीं है, दरिद्रता से अधिक कोई दुःख नहीं है और ज्ञान से बढ़कर कोई सुख नहीं है।

There is no sickness greater than greed no enemy greater than anger no sorrow greater than poverty and no happiness greater than knowledge.

ज्ञानं तृतीयं मनुजस्य नेत्रं समस्ततत्त्वार्थविलोकनक्षमम्।
तेजोऽनपेक्षं विगतान्तरायं प्रवृत्तिमत्सर्वजगत्त्रयेऽपि॥ १४५॥

(सुभाषितरत्न.)

ज्ञान मनुष्य का तीसरा नेत्र है जो उसे समस्त विषयों के तत्त्वज्ञान की अर्न्तदृष्टि प्रदान करता है और ज्ञान से ही तीनों लोकों में उसकी कर्म की ओर प्रवृत्ति होती है।

Knowledge is the third eye of man, which gives him insight into all affairs and teachers him how to act.

असम्यगुपयुक्तं हि ज्ञानं सकुशलैरपि।
उपलभ्यं चाविदितं विदितं चाननुष्ठितम्॥ १४६॥

(नीति)

दक्ष एवं गुणी व्यक्तियों के द्वारा दिया गया ज्ञान भी यदि ठीक से ग्रहण नहीं किया जाता अथवा बोधगम्य हो जाने पर व्यवहार में नहीं लाया जाता तो वह ज्ञान व्यर्थ एवं प्रभावहीन हो जाता है।

Knowledge imparted even by adepts is ineffective if it is not properly grasped or, if understood is not accomplished in practice.

वाग् वै समुद्रः। न वै वाक् क्षीयते॥१४७॥

(ऐतरेयब्राह्मण)

निश्चय ही वाणी समुद्र है। वाणी का कभी क्षय नहीं होता।

Certainly speech is endless (of thoughts) and it never decreases.

वाचाभिरतीतानागतवर्तमानविप्रकृष्टं ज्ञायते। १४८।

(यजुर्वेदीयभाष्य)

वाणी के द्वारा ही अतीत और वर्तमान के दूरस्थ रहस्यों का ज्ञान होता है।

It is the speech only through which remote secrets of past and present are known (recognised).

विद्या ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम्।
पात्रत्वाद्धनमाप्नोति धनाद्धर्मं ततः सुखम्॥ १४९॥

(हितोपदेश)

विद्या (ज्ञान) से मनुष्य में विनम्रता आती है विनम्रता से योग्यता (गुणों) का विकास होता है, योग्यता से धन (समृद्धि) प्राप्त होता है, धन से धर्म की ओर प्रवृत्ति होती है और धर्म से सुख मिलता है।

Knowledge brings modesty in a person modesty creates eligibility and wealth is gained through eligibility. Wealth motivates a person for religious activities and ultimately religious is the cause of happiness.

विद्या तु वैदुष्यमुपार्जयन्ती जागर्ति लोकद्वयसाधनाय॥ १५०॥

(नीति)

विद्या (ज्ञान) विद्वत्ता की वृद्धि करती है साथ ही ऐहलौकिक और पारलौकिक समृद्धि भी लाती है।

Education promotes our material as well as spiritual welfare both in this world and after life.

वेदमनूच्य आचार्योऽन्तेवासिनमनुशास्ति।
सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायान्मा प्रमद।

आचार्याय प्रियं धनमाहृत्य प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत्सीः। सत्यान्न प्रमदितव्यम्। धर्मान्न प्रमदितव्यम्। कुशलान्न प्रमदितव्यम्। भूत्यै न प्रमदितव्यम्। स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्। मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव, अतिथिदेवो भव। यानि अनवद्यानि कर्माणि तानि सेवितव्यानि, नो इतराणि। यानि अस्माकं सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि॥१५१॥ (तैत्तिरीयोपनिषद्)

शास्त्रों की शिक्षा (ज्ञान) प्रदानकर आचार्य (शिक्षक) शिक्षार्थियों को दीक्षान्त उपदेश देता है। (क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए- इसका निर्देश देता है)

सदा सच बोलो। कर्त्तव्य पथ पर चलो, अध्ययन से विमुख मत होओ (स्वाध्याय में लगे रहो)। सामाजिक जीवन में प्रवेश कर सन्तान परंपरा को बनाये रखो, वही हम आचार्यों (शिक्षकों) की प्रिय वस्तु होगी। सत्य से मत हटो। कर्त्तव्य पथ (धर्म) से विचलित मत होओ। भलाई के कामों से विचलित मत होओ। धन समृद्धि के लिए आलस्य मत करो। अध्ययन और शिक्षा संबंधी प्रवचन के लिए उपेक्षाभाव मत अपनाओ। माता को देवता के समान आदरणीय समझो। पिता को देवता के समान पूजनीय मानो। ज्ञानदायक आचार्य (शिक्षक) को देवता के समान आदरणीय समझो। अतिथि को देवता के समान पूजनीय समझो। जो हमारे प्रशंसनीय आचरण हैं उन्हीं का अनुसरण करो दूसरों का नहीं। जो हमारे अच्छे आचरण हैं तुम उन्हीं को अपनाओ।

Having taught the scriptures the teacher makes one final injunction to the disciple. "Always speak the turth, follow the righteous path and do not give up further studies. You will Have paid adequate compensation to me if you enter life. Start a family, do things to provide security to your family, be good to fellow human beings and do not open your mouth carelessly when you impart instructions to others. Consider your mother like a goddess, treat your father like a god and treat your spiritual teacher and guest

with respect. your actions should be worthy of being spoken about. Adopt those of our attributes which reflect worthy conduct, not others (not our weaknesses).

अनारम्भो मनुष्याणां प्रथमं बुद्धिलक्षणम्।
आरब्धस्यान्तगमनं द्वितीयं बुद्धिलक्षणम्॥ १५२॥

(नीति)

किसी कार्य का आरम्भ न करना मनुष्य की बुद्धि का प्रथम लक्षण है और आरम्भ किये हुए कार्य को समाप्त कर देना बुद्धि का द्वितीय लक्षण है।

Not to start any work is the first indication of one's wisdom and to complete an undertaken work is the second indication of one's wisdom.

अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति, मनः सत्येन शुध्यति।
विद्या-तपोभ्यां भूतात्मा, बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति॥ १५३॥

(मनुस्मृतिः)

शरीर की शुद्धि जल से, मन की शुद्धि सत्य-व्यवहार से, आत्मा की शुद्धि विद्या और तप से तथा बुद्धि की शुद्धि ज्ञान (विवेक) से होती है।

Body is purified with water, mind with truthful speech, the soul with Knowledge and austerities, and intellect with the sense of discrimination.

अधीयानः पण्डितंमन्यमानः,
यो विद्यया हन्ति यशः परेषाम्।
तस्यान्तवन्तश्च भवन्ति लोकाः
न चास्य तद् ब्रह्म फलं ददाति॥ १५४॥

(महाभारत)

विद्या प्राप्त करते हुए जो अपने को बहुत बड़ा विद्वान् समझता है और अपनी विद्या द्वारा जो दूसरों की कीर्ति को हानि पहुँचाता है, संसार के लोग उसके विनाश की ही कामना करते हैं और उसके द्वारा प्राप्त किया ज्ञान उसको कुछ भी लाभ नहीं पहुँचाता।

While acquiring education one assumes himself that he has already become a great scholar and through his scholarship tries to harm the reputaion of others, everyone in the world prays for his destruction and his acquired Knowledge too does not yield any good to him.

अभि प्रस्थाता हेव यज्ञं यातेव पत्मन्त्मना हिनोत।। १५५।।

(ऋग्वेद)

हे कन्याओं, जैसे दिन आते और जाते हैं, इसी प्रकार तुम विद्या-प्राप्ति के लिए शिक्षा-प्राप्ति रूपी यज्ञ के लिए स्वयं परिश्रम करती हुई विद्याा को बढ़ाओ। विद्या बढ़ाने के लिए तुम्हारा परिश्रम उसी प्रकार निरन्तर चलते रहना चाहिए, जैसे यात्री निरन्तर कदम बढ़ाते हुए लक्ष्य की ओर बढ़ते है।

O girls! with the passing of each day enhance your education with your industry and single-mindedness like the traveller who continuously marches ahead toward his destination by putting one step after the other.

अवशेन्द्रियचित्तानां, हस्तिस्नानमिव क्रिया।
दुर्भगाभरणप्रायो, ज्ञानं भारः क्रियां विना।।१५६।।

(हतोपदेश मित्रलाभ)

जिन लोगों की इन्द्रियाँ और चित्त वश में नहीं है, उनके सभी कार्य उसी प्रकार निष्फल हो जाते हैं, जैसे हाथी का नहाना, जिसे कि वह बाद में अपने ऊपर धूल डालकर व्यर्थ कर देता है। जो ज्ञान आचरण में नही आता, वह उसी प्रकार भाररूप हो जाता है, जैसे विध वा नारी के आभूषण।

One, who has no control either on his senses or the mind, will always fail to achieve anything. It is like bathing an elephant that after his bath covers himself with dust. The unutilized Knowledge is like ornaments of a widow which remain unseen and unappreciated.

अविद्याऽभ्याससंस्कारैरवशं क्षिप्यते मनः।
तदेव ज्ञान-संस्कारैः स्वतः तत्त्वेऽवतिष्ठते॥ १५७॥

(समाधिशतक)

अज्ञानवश किए हुए अभ्यासों के संस्कारों से मन चञ्चल हो कर वश में नहीं हो पाता, परन्तु वही ज्ञान के संस्कारों से अपने आप ही ब्रह्म में स्थित हो जाता है।

The habitual practice of ignorance keeps one's disposition unstable but if the same arises out of knowledge that contributes towards, steadfastness of intellect.

अशेषविद्याऽध्ययनाय भारते,
स्थले स्थले योगिगुरोः कुलं बभौ।
पृथक्-पृथक् बालक-बालिकागणै-
र्व्रतार्थिभिर्ब्रह्मनोभिरन्वितम्॥ १५८॥

(सुभाषित)

प्राचीन काल में सम्पूर्ण विद्याओं को पढ़ने के लिए भारत में स्थान-स्थान पर योगी गुरुओं के कुल (गुरुकुल) शोभायमान होते थे। बालकों तथा बालिकाओं के गुरुकुल अलग-अलग होते थे, जहाँ वे छात्र तथा छात्राएँ ब्रह्मचर्यव्रत धारण कर वेदविद्या के अध्ययन में लगे होते थे।

In ancient india for teaching the entire range of subjects the Gurukulas or centres of learning were located everywhere. There were separate Gurukulas for boys and girls where both boys and girls studied the Vedas.

अहश्च कृष्णमहरर्जुनं च,
विवर्तेते रजसी वेद्याभिः।
वैश्वानरो जायमानो न राजाऽ-
वातिरज्ज्योतिषाग्निस्तमांसि॥ १५९॥

(ऋग्वेद)

काली रात और सफेद दिन लोक-लोकान्तर में प्रकट होकर जानने योग्य वस्तुओं का बोध कराते हैं। राजा के समान अपनी तेजस्विता

से सब में व्यापक वैश्वानर अग्निदेव अपने प्रकार से अंधकार से पूर्ण स्थलों को प्रकाशित करता हुआ अंधकार को नष्ट कर देता है। भाव यह है कि दिन-रात क्रमशः गति करते हुए संसार की वस्तुओं का बोध कराते हैं।

The dark night and the bright day by penetrating the universe make us aware of what is worth knowing. By its glory the Vaishvanara Agni/ Fire destroys the dark with its vast expanse of brilliance by filling all nooks and corners with light.

अहिंसा सत्यवचनमानृशंस्यं दमो घृणा।
एतत् तपो विदुर्धीरा न शरीरस्य शोषणम्॥ १६०॥

(महाभारत)

विचारशील लोग अहिंसा, सत्यकथन, दयाभाव तथा क्रूरता के अभाव को ही तप मानते हैं। वे शरीर को सुखाने को तप नहीं मानते।

The thoughtful beings take all these attributes like non-violence, speaking truth, being kind to others, and having total absence of cruelty as part of religious austerities and not the torture of body.

आकूतिं देवीं सुभगां पुरो दधे,
चित्तस्य माता सुहवो नो अस्तु।
यामाशामेमि केवली सा मे अस्तु,
विदेयमेनां मनसि प्रविष्टाम्॥ १६१॥

(अथर्ववेद)

मैं दिव्यगुणों वाली ऐश्वर्यशालिनी संकल्प-शक्ति को अपने सामने रखता हूँ। यह संकल्प-शक्ति ही ज्ञान को जन्म देती है। इसे हम सरलता से धारण करें। जिस इच्छा को मैं मन में धारण करूँ, संकल्पशक्ति से वह मेरी आकांक्षा पूर्ण हो। मैं इस संकल्प-शक्ति को अपने हृदय में स्थायी रूप से प्राप्त करूँ।

I Keep the illustrious divine power of determination in front of me. Determination gives birth to knowl-

edge. Let us wear it simply. Whatever desire I may have , let that be fulfilled with determination! Let me acquire that power of determination within me on a permanent basis!

आचार्य उपनयमानो ब्रह्म-
चारिणं कृणुते गर्भमन्तः।
तं रात्रीस्तिस्त्र उदरे बिभर्ति,
तं जातं द्रष्टुमभिसंयन्ति देवाः॥ १६२॥

(अथर्ववेद)

आचार्य शिष्य को उपनयन संस्कार द्वारा अपने समीप लाता है और अपने आश्रम में रखकर वेद पढ़ाता है। वह उसे तीन रात्रियों तक (अर्थात् वेदों की तीन ज्ञान, कर्म और उपासना की शिक्षाओं के पूर्ण होने तक) अपने पेट अर्थात् आश्रम में रखे रखता है। जब वह ब्रह्मचारी वेद-विद्याओं में कुशल होकर स्नातक बनने लगता है, तो विद्वान् लोग उस नवजात स्नातक को देखने के लिए उत्सव रूप में एकत्र होते हैं।

An Acharya keeps his pupil near him until Upnayana i.e. completion of the sacred thread ceremony, and teaches him in his Ashrama. He teaches for three nights, the three traditional Vedic forms of knowledge viz. sacred knowledge, techniques of works and the worship. When the student approaches graduation stage after having become skilled in the knowledge of Vedas, scholars assemble in a festival to welcome and watch him.

आ धूर्ष्वस्मै दधाताश्वानिन्द्रो न वज्री हिरण्यबाहुः॥ १६३॥

(ऋग्वेद)

जैसे सारथी घोड़ों को रथ में जोड़ कर ठीक ढंग से चलाता है, उसी प्रकार ओ कन्याओ, तुम ब्रह्मचर्य धारण कर आत्मा, मन और इन्द्रियों को विद्याप्राप्ति में लगा कर शिक्षा प्राप्त करो।

Just as the charioteer after harnessing horses into the chariot drive it properly, so should you by be-

coming Brahmacharinis through controlling your senses, soul and the intellect put in effort to acquire knowledge.

आपत्कालोपयुक्तासु, कलासु स्यात्कृतश्रमः।
नृत्तवृत्तिर्विराटस्य, किरीटी भवनेऽभवत्॥ १६४॥

(चारुचर्या)

छात्र को संकट के समय में लाभ पहुँचाने वाली कलाओं में भी परिश्रम करना चाहिए। जैसे, अर्जुन संकट के समय विराट के महल में नृत्य सिखाने की कला से ही अपना कार्य चलाता था।

A student should learn with effort certain arts for contingent times too. Remember that Arjun passed time in the palace of king Virat by teaching dancing.

आपश्चिदस्मै पिन्वन्त पृथ्वीवृन्नेषु शूरा मंसन्त उग्राः॥१६५॥

(ऋग्वेद)

जो कन्याएँ जल के समान कोमलता आदि गुण से युक्त हैं और पृथ्वी के समान सहनशील हैं और वीरों के समान उत्साहशील बनकर विद्याग्रहण करती हैं, वे ही विदुषी बन कर सौभाग्यशील कहलाती हैं।

The girls who are as delicate as water, and as patient as earth, and have the energy like brave men to acquire education, are called fortunate for having become scholars.

आयुर्हिताहितं व्याधेर्निदानं शमनं तथा।
विद्यते यत्र विद्वद्भिः स आयुर्वेद उच्यते॥ १६६॥

(भावप्रकाश)

जिस शास्त्र द्वारा आयु के लिए हितकर और हानिकार बातें बताई जाती हैं तथा जिसके द्वारा रोग को समझा और उसकी चिकित्सा की जाती है, विद्वान लोग उसे ही आयुर्वेद कहते हैं।

A Sastra, which explains what is good or injurious to long life, and by which diseases are diagnosed and treated is called Ayurveda by the learned persons.

आहारशुद्धौ सत्त्वशुद्धिः, सत्त्वशुद्धौ ध्रुवा स्मृतिः॥ १६७॥

(छान्दोग्य उपनिषद्)

खानपान की पवित्रता से बुद्धि शुद्ध हो जाती है और बुद्धि के निर्मल होने पर स्मरणशक्ति स्थायी बन जाती है।

Purtiy of food leads to purity of intellect and if the intellect is good, memory starts becoming permanent.

आ हैव स नखाग्रेभ्यः परमं तप्यते तपः।
स्रग्व्यपि द्विजोऽधीते स्वाध्यायं शक्तितोऽन्वहम्॥१६८॥

(मनुस्मृति)

माला से सजा हुआ भी जो द्विज सामर्थ्यानुसार प्रतिदिन वेद का स्वाध्याय करता है, वह तो सिर से लेकर पाँव तक तप ही करता है, क्योंकि स्वाध्याय ही परम तप है।

The one, who studies the Vedas everyday, even decked with flowers, is engaged really in the austerities from head to foot, because self-study is the greatest of all penances.

उदस्य शुष्माद् भानुर्नार्त्त बिभर्त्ति
भारं पृथिवी न भूम॥ १६९॥ (ऋग्वेद)

हे कन्याओं! जैसे सूर्य आकर्षण-शक्ति से पृथिवी आदि के भार को धारण करता है और पृथिवी सब जीवों के भार को धारण करती है, उसी प्रकार तुम भी अपनी शक्ति से विद्या प्राप्त करके सुशिक्षित बनो और गृहस्थ के भार को सम्भालो।

O Girls! Just as the sun bears the load of earth through the pull of gravity, so you should possess learning and be educated to carry out your duties of house wives.

यदग्ने तपसा तप उपतप्यामहे तपः।
प्रियाः श्रुतस्य भूयास्मायुष्मन्तः सुमेधसः॥ १७०॥

(अथर्ववेद)

हे ज्ञान से प्रकाशित गुरुदेव! हम लोग जिस कारण से गर्मी-सर्दी, भूख-प्यास आदि द्वन्द्वों को सहन करते हुए शिक्षा के हेतु तप कर रहे हैं, आपकी कृपा से हम वेदादि ज्ञान के प्रिय बन जायें, हमारी आयु बढ़ जाये और हम तीव्र बुद्धि से सम्पन्न हो जाएँ; अर्थात् हम ज्ञानी दीर्घायु और बुद्धिमान बन जाएँ।

O wise, knowledge-alluminated Guru! Give us the knowledge of the Vedas for which we are undergoing all troubles and physical miseries. We also wish to be learned, intelligent and have a long life.

—o—

आचार्यखण्डः

आचार्यदेवो भव। १।

(तैत्तिरीयोपनिषद्)

आचार्य देवतुल्य हैं।

Acharya (preceptor) is like The God.

आचार्यो मृत्युर्वरुणः सोम ओषधयः पयः। २।

(अथर्ववेद)

आचार्य यम हैं। आचार्य वरुण हैं। आचार्य सोम हैं। आचार्य औषधि और मधुर पेय (दूध) हैं।

The preceptor is supposed to be Yama (who ends ignorance) Varuna (who flows the stream of knowledge) Soma (who showers down the nector of wisdom) The preceptor is medicinal herbs and sweat drinkable (milk).

एकमेवाक्षरं यस्तु गुरुः शिष्यं प्रबोधयेत्।
पृथिव्यां नास्ति तद्द्रव्यं यद्दत्त्वा अनृणो भवेत्॥ ३॥

(चाणक्यनीति)

जो गुरु एक अक्षर का भी ज्ञान करा देता है उसके इस ऋण से मुक्त होने के लिए कोई ऐसा पदार्थ पृथिवी पर नहीं है जो देकर ऋणमुक्त हुआ जा सके।

The debt of getting the knowledge (perception) even of one letter of alphabet, from the teacher can never be repaid by any of the available material on this earth.

विद्यार्थी सेवकः पान्थः क्षुधार्तो भयकातरः।
भण्डारी प्रतिहारी च सप्त सुप्तान् प्रबोधयेत्॥ ४॥

(चाणक्यनीति)

गुरु अथवा ज्ञानी का कर्त्तव्य है कि वह विद्यार्थी, सेवक, पंथी, भूखा, भयभीत, भण्डारी और प्रतिहारी (द्वारपाल) इन सातों को, यदि ये सोये हुये हो तो, जागृत कर दें।

It is the duty of a teacher to awaken student, servant, traveller, hungryman, afraid person, storekeeper and gatekeeper, if they are slept.

यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ।
यस्यैते कथिता ह्यर्थाः प्रकाशन्ते महात्मनः॥ ५॥

(श्वेताश्वतर-उप.)

जिस साधक की अपने गुरु में ईश्वर के समान परम भक्ति है उसके हृदय में रहस्यमय कर्म स्वतः ही प्रकाशित होते हैं।

The devotee, who has the utmost devotion in his teacher like God, gets mysterious acts enlightened in his heart.

आचार्यो वेदसम्पन्नो विष्णुभक्तो विमत्सरः।
मन्त्रज्ञो मन्त्रभक्तश्च सदा मन्त्रात्मकः शुचिः॥ ६॥

(पद्मपुराण)

जो वेदाध्यायी तथा विष्णुभक्त हो, मत्सररहित तथा मंत्रो के अर्थ को भली-भाँति जानने वाला हो, मंत्रों का भक्त और सदैव मंत्राधीन हो तथा पवित्र हो, वही व्यक्ति आचार्य कहलाता है।

One who is busy in study of Vedas, devotee of God Vishnu, having no jealousy, well-aware with the meaning of Mantras and faith in Mantras, is obedient to Mantras and holy with Mantras is regarded as an Acharya.

गकारो ज्ञानसम्पत्तौ रेफः सत्यप्रकाशकः।
उकारात् शिवतादात्म्यं दद्यादिति गुरुस्स्मृतः॥ ७॥

(आगमसारतंत्र)

गुरु शब्द में गकार ज्ञान सम्पत्ति का, रेफ सत् तत्त्व का और उकार शिव तादात्म्य का, बोध है वह सच्चिदानन्द स्वरूप है।

In the word Guru, 'Ga' indicates the wealth of knowledge, 'Ra' indicates essence of truth, and 'u' (vowel) indicates the identity of prosperity. Thus a Guru is supposed to be the form of SACHCHIDANANDA.

गुशब्दस्त्वन्धकारः स्यात् रुशब्दस्तन्निरोधकः।
अन्धकारनिरोधत्वात् गुरुरित्यभिधीयते॥ ८॥
(उपनिषद्)

'गु' शब्द का अर्थ है- अन्धकार (अज्ञान)। 'रु' शब्द का अर्थ है उसका निरोधक अर्थात् तेज। अतः अन्धकार (अज्ञान) को नाश करने वाला गुरु कहलाता है।

The word Guru (preceptor) or formed with two letters i.e. Gu and Ru. The letter Gu dignifies darkness (stupidity) and Ru signifies prevent (stream of light). Therefore one who destroys darkness (stupidity) is called Guru (preceptor).

स आवृणोत्यमृतं संप्रयच्छन् तस्मै न द्रुहयेत कृतमस्य ज्ञानम्।
गुरुं शिष्यो नित्यमभिवादयीत स्वाध्यायमिच्छेच्च सदाऽप्रमत्तः॥ ९॥
(महाभारत)

शिक्षक के प्रति कभी द्रोह नहीं करना चाहिए। नित्य उसको अभिवादन करे और ध्यान से (अप्रमत्त हो) स्वाध्याय करना चाहिए। गुरु अमृत अर्थात् सत्य का बोध कराता है। अतः वह सम्माननीय और महनीय पदवी का अधिकारी होता है।

one should never be malignant to a teacher and should be attentively studious with regular solutions to him. The teacher is indicator of immortality (truth). Therefore he is authorised incumbent for esteemed and eminent position in the society.

वृद्धा ह्यलोलुपाश्चैव आत्मवन्तो ह्यदम्भकाः।
सम्यग्विनीता ऋजवः तान् आचार्यान् प्रचक्षते॥ १०॥
(वायुपुराण)

जो उम्र और ज्ञान में वृद्ध, लोभहीन, आत्मवान, दम्भरहित, विनीत और सरलस्वभाव वाले हैं, उन्हें आचार्य (शिक्षक) का पद मिलता है।

The persons who are old in age and knowledge, less of greed and arrognace, full of self-knowledge, polite and honest, get the rank of 'ACHARYA' (teacher).

न तेन वृद्धो भवति येनास्य पलितं शिरः।
यो वै युवाऽप्यधीयानस्तं देवाः स्थविरं विदुः॥ ११॥

(मनुस्मृति)

बालों (केश) के पक जाने से कोई व्यक्ति वृद्ध हो जाता है ऐसी बात नहीं बल्कि युवा (कम उम्र का व्यक्ति भी) यदि विद्या (ज्ञान) प्राप्त कर रहा हो और अध्ययन से उसमें ज्ञान का विस्तार हो रहा हो तो वह युवा भी अपने ज्ञानधन के कारण महान् और वृद्ध की तरह आदरणीय होता है।

It is not indeed a fact that the person, after getting his hair ripe, becomes an old man. Even a lessaged young person, devoted to acquisition of knowledge and growing old in knowledge, is supposed to be great and respectable like an old person due to his wealth of knowledge.

यावज्जीवमधीते विप्रः॥ १२॥

(नीति)

ज्ञानी व्यक्ति जीवन पर्यन्त अध्ययन और ज्ञानार्जन में लगा रहता है।

The true teacher is a student to the end of his life.

वितरति गुरुः प्राज्ञे विद्यां तथैव यथा जड़े,
न च खलु तयोर्ज्ञाने शक्तिं करोत्यपहन्ति वा।
भवति च पुनर्भूयान् भेदः फलंप्रति तद्यथा।
प्रभवति मणिर्विम्बोद्ग्राहे न चैव मृदां चयः॥ १३॥

(उत्तररामचरित)

गुरु (शिक्षक) जड़ और बुद्धिमान् दोनों प्रकार के विद्यार्थियों को समानरूप से विद्या (ज्ञान) वितरित करता है (शिक्षा देता है) तथा उन

दोनों को ज्ञान देने में किसी के प्रति न तो अपनी शक्ति अधिक लगाता है और न कम कर लेता है, फिर भी दोनों प्रकार के विद्यार्थियों के परिणाम (ज्ञानार्जन) में पर्याप्त अन्तर होता है।

एक (बुद्धिमान) तो विद्वानों के बीच में प्रतिष्ठित होता है जबकि दूसरा (जड़) किसी प्रकार की प्रगति करने में असमर्थ रह जाता है। यह सच है कि मणि सूर्य की किरणों या अन्य प्रतिबिम्ब को आत्मसात कर सकता है और मिट्टी का ढेला किसी प्रतिबिम्ब को नहीं।

A preceptor (Guru) imparts education (Knowledge) equally to intelligent and stupid learners. He neither increases nor decreass his power for anybody's education, eventhen there is a great difference in the result (attaining knowledge) of both types of student. An intellegent owns prestige and progress whereas a stupid remains behind. It is true that rays of sun or other image own easily and lump of clay can not..

प्रवृत्तवाक् चित्रकथः ऊहवन् प्रतिभानवान्।
आशु ग्रन्थस्य वक्ता च यः स पण्डित उच्यते॥ १४॥

(महाभारत)

शिक्षक के लिए केवल गंभीर विद्वत्ता ही पर्याप्त नहीं है। एक शिक्षक में बुद्धि की तत्परता, हाजिरजवाबी, रोचक कथाओं का भण्डार और पाठ्यग्रन्थ के कठिन अंशों को तत्काल व्याख्या करने की क्षमता होनी चाहिए। इन गुणों से युक्त व्यक्ति शिक्षक होने के योग्य है।

Profound scholarship is not sufficient for teacher. He must have a fluent delivery readiness of wit, presence of mind, a great stock of interesting anecdotes and must be able to expound the most difficult texts without any difficulty or delay.

शिष्टा क्रिया कस्यचिदात्मसंस्था संक्रान्तिरन्यस्य विशेषरूपा।
यस्योभयं साधु स शिक्षकाणां धुरि प्रतिष्ठापयितव्य एव॥ १५॥

(मालविकाग्निमित्र)

शिक्षक के लिए केवल शास्त्रज्ञ होना ही पर्याप्त नहीं है। उसे अध्यापन में भी निपुण, होना चाहिए तभी वह शिक्षकों की श्रेणी में अग्रगण्य हो सकता है।

Teacher should not be only a scholar but also an agept in teaching, then only he would be a great teacher as pointed out by Kalidasa.

यथा घटप्रतिच्छन्ना रत्नराजा महाप्रभाः।
अकिंचित्करतां प्राप्तास्तद्वद्विद्याश्चतुर्दश॥ १६॥

ज्ञान का दीप एक आवरण (ढक्कन) से ढका हुआ है, शिक्षक उसे हटाकर ज्ञान-ज्योति प्रकाशित करता है। इस प्रकार शिक्षक का यह दायित्व है कि शिक्षार्थी को अज्ञानांधकार से हटाकर ज्ञानज्योति का दर्शन कराए और इस प्रकार सभी चौदह प्रकार की विद्याएँ शिक्षार्थी को सुलभ हो जाती है।

It is the function of the teacher to lead the student from the darkness of ignorance to the light of knowledge. The lamp of learning is concealed under a cover the teacher removes it and lets out the light.

बुद्धिः स्फूर्तिमयी यस्य भवेदूहसमन्विता।
उत्पन्नेषु च कार्येषु स सप्रतिभ उच्यते॥१७॥ (पुरुषपरीक्षा)

वह व्यक्ति प्रतिभावान् होता है, जिसकी बुद्धि उचित अवसर पर स्फूर्तिमती और तर्कयुक्त होती है।

The person whose wisdom becomes stimulus and full of reasoning at the proper time, is supposed to be genius.

उपनीय तु यः शिष्यं वेदमध्यापयेद् द्विजः।
सकल्पं सरहस्यं च तमाचार्यं प्रचक्षते॥ १८॥ (मनुस्मृति)

जो यज्ञोपवीत पहनाकर वेद, वेदांग और उसके रहस्य व्याख्यान को यथोचित रीति से पढ़ाता है वह आचार्य कहलाता है।

The person, who after getting worn the secred thread to his disciple teaches Vedas, Vedangas and explains its secrets with commentary, is reverred as Acharya.

अग्निर्वृत्राणि जङ्घनद् द्रविणस्युर्विपन्यया।
समिद्धः शुक्र आहुतः॥ १९॥
(सामवेद)

शिष्य के लिए विद्यादि सद्गुणों की कामना करने वाला अग्नि के समान तेजस्वी, शुद्धात्मा गुरु सत्कार किए जाने पर विशेष पाठन-विधि द्वारा शिष्य के दोषों को दूर करके उसे उत्तम शिक्षा प्रदान करता है।

The pure-hearted teacher glowing like fire wishes his student to possess good qualities like education and others, Due to the special reverence paid to him he applies such methods of instruction as may remove defects in him and provides the best possible education.

अग्ने भव सुषमिधा समिद्ध-
उत बर्हिरुव्रिया वि स्तृणीताम्॥ २०॥

(ऋग्वेद)

हे ज्ञानदाता गुरुदेव, जैसे अग्नि उत्तम समिधाओं से प्रज्वलित हो उठती है, उसी प्रकार आप श्रेष्ठ शिष्यों को प्राप्त कर यशस्वी बनिये। जैसे जल भूमि पर सब ओर फैल जाता है, उसी प्रकार आप अपने ज्ञान को सब ओर फैलाकर अज्ञानान्धकार को नष्ट कीजिए।

O Knowledge-imparting Guru! even as fire bursts into flames in quality of firewood, acquire fame by selecting a bevy of intelligent students. Just as water spreads on a large piece of land, you too by spreading your Knowledge all around yourself, destroy the darkness of ignorance.

अभि वो देवीं धियं दधिध्वम्।
प्र वो देवत्रा वाचं कृणुध्वम्॥ २१॥

(ऋग्वेद)

हे गुरुजन, जो बुद्धि विद्वानों में दिव्य गुणों वाली हैं, उसे हमें सब ओर से धारण कराइए और हमारी वाक्शक्ति को बढ़ाइए। अर्थात् अध्यापक ऐसा प्रयत्न करें, जिससे शिष्य बुद्धिमान् और वाणी के अच्छे प्रयोक्ता बन सकें।

O our teachers! help us to get that intellect, which is divine among scholars, and also increase our power of communication.

आयुष्यं वर्चस्यं राजस्पोषमौद्भिदम्।
इदं हिरण्यं वर्चस्वज्जैत्रायाविशतादु माम्॥ २२॥

(यजुर्वेद)

दु:खों को नष्ट करने वाले, आयु बढ़ाने वाले, अध्ययन के लिए उपयोगी, धन आदि ऐश्वर्य के पुष्टिकारक, प्रभावोत्पादक, सब ओर विजय दिलाने वाले और जीवन में आकर्षण उत्पन्न करने वाले ब्रह्मचर्यरूपी सुवर्ण को मैं धारण करता हूँ तथा सभी छात्रों को अपनी उन्नति के लिए ब्रह्मचर्य धारण करना चाहिए।

I adopt Brahmacharya for the sake of the progress of all students. For the sake of creating attraction in life, I adopt the gold-like Brahmacharya because it can help me and overcome sorrows, grant longvity, is useful for studies as well as for glory and the acquisiton of riches besides being influential and helpful in universal conquest.

इन्द्रं कुत्सो वृत्रहणम् शचीपतिम्,
काटे निवाढ ऋषिरह्वदूतये।
रथं न दुर्गाद्वसवो सुदानवो,
विश्वस्मान्नो अंहसो निष्पिपर्त्तन॥ २३॥

(ऋग्वेद)

विद्यारूपी वज्र को धारण करने वाले, पढ़ाने वाले, प्रश्नोत्तर सम्बन्धी विद्या-रूपी वृष्टि (शास्त्रार्थ) के व्यवहार में दोषनिवारक वाणी के स्वामी शालाध्यक्ष को हम सुव्यवस्था के लिए स्वीकार करें। जैसे कुशल चालक रथ को कठिन मार्ग से निकाल कर उद्दिष्ट स्थान पर पहुँचा देता है, उसी प्रकार हमारे शिक्षक हमें सुशिक्षित कर बुराइयों से बचाकर धर्म, अर्थ काम और मोक्ष की सिद्धि के लिए समर्थ बना दें।

Let us appreciate the head of the school for his excellent organization of the institute, and by wearing the club of knowledge who can handle in a masterly fashion the rain of questions (discussion) with the defect-removing tongue. Just as an expert charioteer can steer his passengers across a difficult road to arrive at a given destination, similarly, a teacher too can save us from all ills. Let them make us educated and enable us to perform our duties toward the succeeding in Dharma, Finance, Desire and Salvation.

इमे हि ते ब्रह्मकृतः सुते सचा, मधौ न मक्षा आसते।
इन्द्रे कामं जरितारो वसूयवो, रथे न पादमादधुः॥२४॥

(ऋग्वेद)

हे गुरुदेव! ज्ञान की कामना करने वाले शिष्य आपके माधुर्यगुण से प्रेरित हो कर आपकी ओर इस प्रकार खिंचे चले आते हैं, जैसे मक्खियाँ मीठी वस्तु पर आ जाती हैं, हे ज्ञान के स्वामी आप में ज्ञान ऐश्वर्य की कामना करने वाले और सत्य की स्तुति करने वाले वे शिष्य अपनी कामना को इस प्रकार पूर्ण कर लेते हैं, जैसे रमणीय यान में बैठ कर सवारियाँ यथेष्ट स्थान पर पहुँच जाती हैं।

O Gurudev! those who desire to possess knowledge come to you attracted by your fame, like flies which come running to some sweet object. O the master of all knowledge! those, who desire the glory of knowledge and are admired of Truth are able to fulfil it like someone who reaches his destination sitting in a comfortable vehicle.

उतो हि वां रत्नधेयानि सन्ति,
पुरूणि द्यावापृथिवी सुदासे।
अस्मे धत्तं यदसदस्कृधोयु,
यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ २५॥

(ऋग्वेद)

हे अध्यापको और उपदेशको! आप भूमि तथा विद्युत् के रत्न देने वाले अनेक विज्ञानों को जानते हैं। दरिद्रता को भगाने वाले उन विज्ञानों को हमें भी सिखाइए और इस प्रकार आप रक्षा के साधनों से हमारा कल्याण कीजिए।

O the teachers and preachers! you know all about the multiple productions of the earth and the gems of electrical science. Teach us too those poverty alleviating science and give us the means of our welfare.

उदीरतामवर उत्परासः, उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः।
असुं य ईयुरवृकाः ऋतज्ञास्तेऽवन्तु पितरो हवेषु॥ २६॥

(ऋग्वेद)

शिक्षा देने में और कार्य-कुशलता में जो गुरुजन निचले स्तर के हैं, वे उन्नति करें, जो मध्यम श्रेणी के गुरुजन हैं, वे भी उन्नति करें और उत्तम स्तर के गुरुजन और अधिक उन्नति करें। सोमविद्या के ज्ञाता गुरुजन भी उन्नति करें। ये सभी गुरुजन स्तुति-प्रार्थना आदि यज्ञों की हमें शिक्षा दें। इसके अतिरिक्त जो गुरुजन यज्ञ-नियम और सृष्टि-नियमों को जानते हैं, कुटिलता रहित हैं तथा दीर्घायु वालें हैं, वे भी अपनी शिक्षाओं से हमें ज्ञानी बनायें।

The teachers, who teach at the lower levels and offer expertise, may they improve and grow. Those who teach at the middle and higher stages let them too progress and develop. The teachers of Soma-knowledge, must too progress. Let all these teachers teach us the techniques and methods of prayer and the Yajnas. Besides, these teachers, who know the techniques of the Yajnas and are aware of the way the Universe was created and are free from crookedness and have long lives, may they too impart us instructions.

उप त्वा सातयो नरो पिप्रासो यन्ति धीतिभिः।
उपाक्षरा सहस्रिणी॥ २७॥

(ऋग्वेद)

हे छात्राओ! जैसे बुद्धिमान् लोग अँगुलियों से अक्षरों के पठन या लेख का बोध कराते हैं, उसी प्रकार असंख्य विद्याओं या विषयों को जानने वाली अध्यापिका को तुम जानो। तुम्हारे सम्यक् विकास के लिए वह बुद्धिमती अध्यापिका स्वयं व्यवस्था करेगी।

O girl students! Just as intelligent teachers introduce writing and reading of letters with the help of fingers, you should know such lady-teachers who know innnumerable subject and possess immeasurable learning. For your balanced development, such an intelligent teacher will herself make all arrangements.

कुलं च जातिः पितरौ गुणा वा,
विद्या च बन्धुः स्वगुरुर्धनं वा।
हिताय जन्तोर्न परं च किंचित्,
किन्त्वादृतः सद्गुरुदेवधर्मः॥ २८॥

(प्रकीर्ण)

उत्तम वंश, जाति, माता-पिता, गुण, विद्या, सम्बन्धी, कुलगुरु और धन - ये सब मनुष्य का कल्याण करते हैं, परन्तु आदर किए हुए, दिव्यगुणों वाले श्रेष्ठ गुरु के समान अन्य कोई भी वस्तु इतनी कल्याणकारी नहीं हैं।

Though the distinguished family, caste, parents, attributes, education, relations, kulaguru (family teacher), and the riches all these do good to an individual but there is none more beneficial than the Guru who possesses divine qualities.

गुरुर्नेत्रं गुरुर्दीपः सूर्याचन्द्रमसौ गुरुः।
गुरुर्देवो गुरुः पन्था दिग्गुरुः सद्गतिर्गुरुः॥ २९॥

(अर्हद्गीता)

ज्ञान का प्रकाश देने के कारण गुरु ही आँख, दीपक, सूर्य और चन्द्रमा के समान है। ज्ञान का दाता होने से गुरु देवता भी है, सन्मार्ग-दर्शक भी गुरु है। निर्देश देने वाला गुरु दिशा के समान है और गुरु ही उत्तम गति तक पहुँचाने वाला है।

For being the light of knowledge a Guru is like the eyes, lamp, the sun and the moon. Being the giver of knowledge the Guru is a deity and a guide to the right path. The instructing Guru is like direction, because he alone can take his pupil to the best of destinations.

ग्रावाण उपरेष्वा महीयन्ते सजोषसः।
वृष्णो दधतो वृष्ण्यम्॥ ३०॥

(ऋग्वेद)

जो गुरु सुख की वृष्टि करने वाले छात्रों में शिक्षा के बल को स्थापित करते हैं और परस्पर प्रेम से रहते हैं, सभी लोग उनकी प्रशंसा करते हैं।

Such teachers, who impart instruction to the pleasure-giving students and live together with mutual love, are admired by everyone.

तं होतारमध्वरस्य प्रचेतसं वह्निं देवा अकृण्वत।
दधाति रत्नं विधते सुवीर्यमग्निर्जनाय दाशुषे॥ ३१॥

(ऋग्वेद)

ज्ञानदान देने वाले अहिंसापूर्ण कार्यों के लिए सावधान करने वाले और शैक्षणिक कार्यों की व्यवस्था करने वाले गुरुओं का ही चयन विद्वान् लोग करते हैं। ऐसे ही गुरु ज्ञान के इच्छुक और गुरुभक्त शिष्य को रमणीय ज्ञान तथा शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक शक्ति से सम्पन्न कर देते हैं।

Knowledge imparting, engaged in non-violent activities and busy only in educational work, such teachers are selected only by scholors. Only such teachers can equip pupils with spiritual, physical and social strength.

त्वं देवि सरस्वति, अवा वाजेषु वाजिनि।
रदा पूषेव नः सनिम्॥ ३२॥

(ऋग्वेद)

हे कामना करने योग्य प्रशस्त विज्ञानयुक्त विदुषी देवी! आप हमें विवेकशील बुद्धि से ऐसे ही सम्पन्न कर दीजिए जिस प्रकार पालन-पोषण करने वाली यह भूमि अन्नादि से सबको तृप्त करती है।

O desiring, extensively knowledgeable and schorlarly lady teacher! Kindly equip us fully with your discriminating intellect in the same way as this lovingly rearing earth satisfies us with food grains etc.

त्वयेदिन्द्र युजा वयं प्रति ब्रुवीमहि स्पृधः।
त्वमस्माकं तव स्मसि॥ ३३॥

(ऋग्वेद)

हे आचार्य! हम आप की शिक्षा से हमारे सामने शास्त्रार्थ करने वाले के प्रश्नों के उत्तर देने में समर्थ हों। हमें शास्त्रार्थ-कुशल बनाइए। गुरुदेव आप हमारे हैं और हम आपके हैं, अतः हमें पूर्णतः कुशल बनाइए।

O Acharya! Because of your instructions, we are able to answer all the queries directed toward us during the courses of a contest. Make us in discussions also specialist. Gurudev! you are ours just as we are yours. Make us perfect.

नकिष्ट एता व्रता मिनन्ति, नृभ्यो यदेभ्यः श्रुष्टिं चकर्थ।
तत्तु ते दंसो यदहन्त्समानैर्नृभिर्यद्युक्तो विवेरपांसि॥ ३४॥

(ऋग्वेद)

हे गुरुदेव! आप अपने जिन शिष्यों को शीघ्रतापूर्वक शिक्षित करते हैं, वे आप के नियमों का कदापि उल्लंघन नहीं करते और आपके अनुशासन में रहते हैं। आप के सदृश जो अन्य शिक्षकगण शिक्षा देते हैं, उनके कर्मों में भी कोई विघ्न नहीं डालते। इस प्रकार आप अपने शिष्यों को उत्तम शिक्षा देकर सत्कर्मों में प्रवृत्त करते हैं।

O Gurudev! Your students whom you teach speedily never disobey you and live under your discipline. Other teachers too who teach the way you do, no

one interferes in their work. By instructing your students well, you inspire them to undertake good deeds.

पुत्रो न जाते रण्वो दुरोणे,
वाजी न प्रीतो विशो वि तारीत्।
विशो यदह्वे नृभिः सनीडा,
अग्निर्देवत्वा विश्वान्यश्याः॥ ३५॥

(ऋग्वेद)

जो अग्नि के समान आगे ले जाने वाला ज्ञानमय है, जो घर में उत्पन्न पुत्र के समान रमणीक है तथा जो अश्व के समान इष्ट स्थान पर पहुँचाने के कारण आनन्ददायक है, वही श्रेष्ठ गुरु शिष्यों को अज्ञान से छुड़ा सकता है। वही व्यावहारिक क्षेत्र में भी एक हीं शिक्षणालय में पढ़ने वाले छात्रों को सब दिव्य गुणों से सम्पन्न कर सकता है।

That fire-epitome of learning, who can lead us beyond the present and who is as pleasing as the new born son in the home and who like a horse can take us to our desired destination, alone can destroy the ignorance of his pupils. Only he can teach in a school giving all practical training and equip his students with divine qualities.

मुनीनां दशसाहस्त्रं योऽन्नपानादिना भरेत्।
अध्यापयति विप्रर्षिः, असौ कुलपतिः स्मृतः॥ ३६॥

(पद्मपुराण)

जो ब्राह्मण ऋषि होकर दस हजार छात्रों और मुनियों का खानपान से भरण और पोषण करता है, तथा पढ़ाता है, उसे ही कुलपति कहा जाता है।

A Vice-chancellor/chancellor (Kulapati/head of the centre of learning) is one who teaches and maintains ten thousand students besides feeding them all.

मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः।
मेधामिन्द्रश्च वायुश्च, मेधां धाता दधातु मे॥ ३७॥

(यजुर्वेद)

श्रेष्ठ गुरु अथवा परमेश्वर सत्क्रियाओं द्वारा मुझे धारणावती बुद्धि दे, प्रकाश-स्वरूप प्रजाओं का रक्षक परमेश्वर अथवा ज्ञानी छात्रों का हितचिन्तक गुरु मुझे बुद्धि दे, विद्युत और वायु के समान ज्ञान से देदीप्यमान और प्रेरक परमात्मा अथवा गुरु मुझे बुद्धि दे और संसार को धारण करने वाला अथवा शिष्यों को धारण करने वाला गुरु मुझे बुद्धि दे। अर्थात् मैं धारणावती बुद्धि को प्राप्त करूँ।

May God or the Guru, give me brain capable of stroing infinite knowledge. May my Guru, who besides being conscious of intelligent students welfare and being himself as luminous as lightening and as fast as wind give me an all absorbing intellet. It means that one should try to get such intellect which may be able to store learned things in memory.

—o—

शिक्षानीतिखण्डः

लालयेत् पंच वर्षाणि दश वर्षाणि ताडयेत्।
प्राप्ते तु षोडशे वर्षे पुत्रं मित्रवदाचरेत्॥१॥

(चाणक्यनीतिः)

पाँच वर्ष की अवस्था तक बालक का लालन-पालन स्नेह-प्यार से करना चाहिए। छह से पन्द्रह वर्ष की अवस्था में अनुशासन में रखना चाहिए। सोलह वर्ष की अवस्था होने पर बालक को मित्रवत समझना चाहिए।

The parents should fondle his child till attaining the age of five years, should command in the age between six to fifteen years and ultimately should behave like a friend on attaining the age of sixteen years (and afterwards).

असूयैकपदं मृत्युरतिवादः श्रियो वधः।
अशुश्रूषा त्वरा श्लाघा विद्यायाः शत्रवस्त्रयः॥ २॥

(सुभाषित)

प्रबल ईर्ष्या, गर्व, मृत्यु आदि समृद्धि और धनक्षय के कारण हैं। गुरु की सेवा-शुश्रूषा का अभाव, शीघ्रता तथा आत्मप्रशंसा ये तीनों विद्या प्राप्ति के बाधक हैं।

Intense jealousy, boastfulness and one's passing away are causes of the loss of affluence. Not waiting upon the preceptor, haste and indulging in self-praise are three enemies of attaining the knowledge.

आलस्यं मदमोहौ च चापलं गोष्ठिरेव च।
स्तब्धता चाभिमानित्वं तथा त्यागित्वमेव च॥
एते वै सप्त दोषाः स्युः सदा विद्यार्थिनां मताः॥ ३॥

(शिक्षाग्रंथ)

आलस्य, मद, अज्ञान (घबराहट) चंचलता, निरर्थक वार्तालाप, अवरोध, अभिमान तथा लोलुपता - ये सात, विद्यार्थियों के लिए ज्ञानार्जन में दोष माने गये हैं।

Idleness, pride, confusion, restlessness, idle talk, haughtiness and covetousness - these seven are said to be the faults (obstruction) of students in the pursuit of learning.

पंच विद्यां न गृह्णन्ति चण्डाः स्तब्धाश्च ये नराः।
अलसा रोगिणश्चैव येषां च विस्मृतं मनः॥ ४॥

(याज्ञ. शि.)

क्रोधी, उपदिष्ट पदार्थ को ग्रहण करने में अचतुर, आलसी, रोगी और पठित विषय (पाठ) को धारण न कर भूल जाने वाले ये पाँच प्रकार के व्यक्ति विद्या को ग्रहण नहीं कर सकते। अतः इन दोषों को त्यागकर शिक्षा ग्रहण में अग्रसर होना चाहिए।

The person who is angry, benumbed, lazy, patient and oblivious, is unable to grasp the knowledge (learning). It is therefore advised to be intent for learning after giving up these flaws.

न शठाः प्राप्नुवन्त्यर्थान् न क्लीबा न च मानिनः।
न च लोकापवादभीता न च श्वः श्वः प्रतीक्षकाः॥ ५॥

(नारदीय शिक्षा)

शठ (धूर्त) क्लीब (नपुंसक) अर्थात् कायर अभिमानी, लोकापवाद से डरने वाले और आगामी कल की प्रतीक्षा करने वाले वर्तमान समय की उपेक्षा करने वाले लोग विद्या को प्राप्त नहीं कर सकते।

Wicked, imponent (Cowardly person) arrogant, afraid of blames, deferring every activity & waiting for tomorrow and neglecting present moment - these six type of persons can not attain the knowledge.

द्यूतं पुस्तकवाद्यं च नाटकेषु च सक्तिकाः।
स्त्रियस्तन्द्रा च निद्रा च विद्याविघ्नकराणि षट्॥ ६॥

(नारदीय शिक्षा)

जुआ खेलना, गाना-बजाना, नाटकों में आसक्ति, स्त्रियाँ, आलस्य और निद्रा ये छह विद्याप्राप्ति में विघ्नकारी हैं।

Gambling, singing and beating drum, affection for theatres, attachment to women, laziness, dreams - these six defects creat hindrance in learing.

गुरुणां पुरतो राज्ञो न चासीत महासने।
प्रौढपादो न तद्वाक्यं हेतुभिर्विकृतिं नयेत्॥ ७॥

(शुक्रनीति)

गुरुजनों तथा राजा के सामने ऊँचे आसन पर या पैर के ऊपर पैर रखकर नहीं बैठना चाहिए। उनके वचन को तर्क द्वारा खंडन भी नहीं करना चाहिए।

One should not sit on an elevated (lofty) seat or in a position of placing one leg on the other in front of teachers, elders and king (ruler), neither should make negation of their speech by orguements.

अशुश्रूषा त्वरा श्लाघा विद्यायाः शत्रवस्त्रयः॥ ८॥

(शिक्षानीति)

सेवा भाव की कमी, अधैर्य (उतावली) चापलूसी (मिथ्या प्रशंसा) ये तीनों अवगुण विद्याप्राप्ति में बाधक हैं।

Real scholarship can not be obtained by delettantish or perfunctory studies, impatience is as great an enemy of learning, as self complacency.

एवं वर्णा प्रयोक्तव्या नाऽव्यक्ता न च पीडिताः।
सम्यग्-वर्णप्रयोगेण ब्रह्मलोके महीयते॥
सुतीर्थादागतं व्यक्तं स्वाम्नायं सुव्यवस्थितम्।
सुस्वरेण सुवक्त्रेण प्रयुक्तं ब्रह्म राजते॥ ९॥

(पाणिनीय शिक्षा)

विचाराभिव्यक्ति में शुद्ध शब्द शक्ति का महत्त्व बतलाते हुए कहा है - शुद्ध उच्चारित वर्ण इस लोक में प्रयोक्ता को प्रतिष्ठा प्रदान

कराते ही हैं साथ ही साथ ब्रह्मलोक में भी उसे प्रतिष्ठित करते हैं क्योंकि सद्गुरु से विधिवत् अध्ययन और अभ्यास किए हुए तथा परम्परानुसार उच्चारित वेदमंत्रों के शुद्ध उच्चारण में स्वयं ब्रह्मा विराजते हैं।

In expression of thoughts (opinion) stress has been given on the importance of correct sounds. Correctly pronunciated sounds, accord dignity to the applicant in this world and get him honoured in Bramhaloka also. It is revealed that in the correct pronunciation of the spells of Vedas which are duly learned from preceptors practiced well and pronunciated, in traditional method, Bramha exists himself.

स्थाणुरयं भारहारः किलाभूत्
अधीत्य वेदं न विजानाति योऽर्थम्।
योऽर्थज्ञ इत् सकलं भद्रमश्नुते,
नाकमेति ज्ञानविधूतपाप्मा॥ १०॥

(निरुक्त)

जो व्यक्ति वेदाध्ययन में लगा रहता है किन्तु उसके अर्थ को भलीभाँति नहीं जानता, वह मकान के खंभे के सदृश भारवहन करने वाला है। वस्तुतः जो वेद के अर्थ को जानता है वही कल्याण प्राप्त करता है और पापकर्मों से मुक्त होकर स्वर्ग में अपने लिए उच्च स्थान बना लेता है।

The person, who remains busy in study of Vedas and is unaware with its meaning, is only a bearer like a pillar of building. In fact he enjoys who knows the meaning of Vedas and acquires a good high position in heaven after being relieved from sinful deeds.

सर्वतो मनसोऽसङ्गमादौ सङ्गं च साधुषु।
दयां मैत्रीं प्रश्रयं च भूतेष्वद्धा यथोचितम्॥ ११॥

(श्रीमद्भागवत)

मानव पहले शरीर, सन्तान आदि मे मन की अनासक्ति सीखे फिर भगवान के भक्तों से प्रेम कैसे करना चाहिए यह सीखें। इसके पश्चात् प्राणियों के प्रति यथायोग्य दया, मैत्री और विनय की निष्कपट भाव से शिक्षा ग्रहण करे।

The people should first, learn how to be detached from body, children and then to love the devotees of God. After wards he should honestly learn to behave human being with kindness, friendship, courtesy.

हस्तौ सुसंयतौ धार्यौ जानुनोरुपरि स्थितौ।
गुरोरनुमतिं कुर्यात् पठन्नान्यमतिर्भवेत्॥

उरुभागे तृतीये तु कूर्परं न्यस्य दक्षिणम्।
सुप्रसन्नमना भूत्वा किंचिन्नम्रस्त्वधोमुखः॥

निवेश्य दृष्टिं हस्ताग्रे शास्त्रार्थमनुचिन्तयेत्।
प्रणवं प्राक् प्रयुञ्जीत व्याहृतीस्तदनन्तरम्॥
सावित्रीं चानुपूर्व्येण ततो वेदान् समारभेत्॥ १२॥

(याज्ञवल्क्यशिक्षा)

शिक्षार्थी दोनों घुटनों को ऊपर संयत हाथों को धारण कर गुरु के सम्मुख आसन पर बैठें और अध्ययन के लिए गुरु से अनुमति लें। पढ़ते समय चित्त को इधर-उधर न भटकने दें। जंघा के तीसरे भाग पर दाहिनी कोहनी को रखकर प्रसन्नचित से कुछ नम्र एवं अधोमुख होकर हाथ के अग्रभाग में दृष्टि लगा शास्त्रों के अर्थ का चिन्तन करे। वेदपाठ या शास्त्र का अभ्यास करते समय पहले प्रणव (ॐ) का उच्चारण कर (ॐ भूः भुवः स्वः इन तीन) महाव्याहृतियों का उच्चारण करके गायत्री मंत्र का पाठ कर वेदाध्ययन (या शास्त्राध्ययन) प्रारम्भ करे।

The student, who is eager and ready to learn, should first sit on seat placing his both the hands steady on his knees and seek permission from Guru (The teacher) for study. He should not dibert his mind during the study. For learning one should be alert mentally and posturely. The learner while contemplating the meaning of Shastras, (subjects) should put his right elbow on the third part of thigh and keeping his sight on the fore part of hand pleasurely with meekness and posturing head downwords.

While practicing the subject matter of books he should first utter OM(Pranava) followed by pronunciation of three great words i.e. OM BHUH, BHUVAH, SWAH and then should start the study of Vedas, Shastras after due reading of Gayatri Mantra.

अनिर्वेदी श्रियो मूलं लोहबद्धं कमण्डलुम्।
अहोरात्राणि दीर्घाणि कः समुद्रं न शोषयेत्॥ १३॥
(माण्डू. शिक्षा)

प्रयत्न करने से उदास न होने वाला शिक्षार्थी कभी भी सुख प्रदायक प्रयत्न को न छोड़े। प्रयत्न से बड़ी सफलता मिल सकती है। यदि कोई कमण्डलु को लोहे की जंजीर से बांधकर उससे समुद्र को सुखाने का प्रयत्न करे तो उसे भी सुखा सकता है क्योंकि दिन-रात बहुत लम्बे होते हैं। अत: शिक्षार्थी सदा प्रयत्न करता रहे, उसमें कमी न आने दे।

The learner, who is never dejected by attempts, should not abandon comfortable efforts. Efforts can bring great success. If some body, tries to dry the ocean by a mendicant, bound in iron chain can certainly get it dried during the long span of days and nights. Therefore a learner (student) must make efforts always and should not be slack.

आचार्योपासनाद् योगात्तपसो प्राज्ञसेवनात्।
विगृह्य कथनात् कालात् षड्भिर्विद्या प्रपद्यते॥ १४॥
(माण्डू. शि.)

आचार्य के समीप रहना, मनोयोग, तप, विद्वानों की सेवा और सम्मान, विस्तृत कथन, समय का सदुपयोग इन छह उपायों से विद्या प्राप्त होती है।

Staying near preceptor (teacher), Concertration of mind, devotion, respect and service of scholars, detailed discussion, proper utilisation of time-these are the six means by which knowledge is acquired.

आलस्यान्मूर्खसंयोगाद् भयाद्रोगनिपीडनात्।
अत्यशक्त्या मानाच्च षड्भिर्विद्या विनश्यति॥ १५॥
(माण्डू. शि.)

आलस्य, मूर्खों का संग, रोग-पीड़ा, अत्यन्त कमजोरी और अभिमान इन छह कारणों से विद्या (ज्ञान) नष्ट हो जाती है।

The knowledge (learning) gets destroyed due to one's idleness, association with stupids, ailment, intense weakness and pride.

शनैर्विद्यां शनैरर्थानारोहेत् पर्वतं शनैः।
शनैरध्वसु वर्तेत योजनानि परं ब्रजेत्॥ १६॥

(नारदीय शिक्षा)

विद्या को शनैः शनैः ग्रहण करे, धन को शनैः शनैः अर्जित करे, पर्वत पर शनैः शनैः आरोहण करे, मार्ग में शनैः शनैः (धीरे-धीरे) चले जिससे अनेक योजन (८ कोस का एक योजन) सुख से जा सके।

One should receive knowledge graduatly, acquire wealth gradually, ascent the mountains gradually and walk in the way gradually so that a long distance of so many miles can be travelled easily.

ऊर्ध्वं सहस्त्रादाम्नातं सततं चान्ववेक्षणम्।
आप्तैस्तु सह सम्पाठस्त्रिविधा धारणा स्मृता॥ १७॥

(माण्डू. शि.)

शिक्षार्थी पठित विषय का हजारो बार से भी अधिक अभ्यास करे, उसका लगातार स्वयं स्वाध्याय करे, अपने आप्त सहपाठियों से उसके विषय में विचार और चर्चा करे। इन तीन धारणाओं (उपायों से) पठित पाठ स्थिर (स्थायी) हो जाता है।

A learner should exercise the read shubject (acquired knowledge) more than thousand times and he should continuously study it, He should discuss, about the subject matter, with his companions. The acquired (learned) subject matter become permanent by these means.

यथा खरश्चन्दनभारवाही
भारस्य वेत्ता न तु चन्दनस्य।
तथा हि विप्राः स्मृतिवेदपूर्णा
ज्ञानेन हीनाः खरवद् वहन्ति॥ १८॥

(शिक्षानीति)

जैसे चन्दन के भार को ढोने वाला गधा भार को ही जानता है चन्दन के गुण को नहीं जानता। गधे के लिए मिट्टी और चन्दन दोनों भाररूप हैं। इसी प्रकार स्मृति, वेद तथा शास्त्रों के ज्ञान से भरपूर विद्वान् यदि ब्रह्मज्ञान (आध्यात्मिक ज्ञान) से रहित है तो शास्त्रों के ज्ञान-भार को गधे के समान ढो रहे हैं। शास्त्रीय ज्ञान के साथ-साथ विद्यार्थी को ब्रह्मज्ञान भी अनिवार्यरूप से प्राप्त करना चाहिए।

The Donkey who carries the load of sandalwood, knows only the burden but not the worth of sandalwood. Earth and sandalwood both are loaded burden for a donkey. Likewise a scholar, having perfect knowledge of Smiritis. Vedas and scriptures and deficient in spiritual knowledge, is/ supposed to be the carrier of knowledge of scriptures like a donkey. (A learner should also acquire compulsorily the spiritual knowledge alongwith the knowledge of scriptures).

पुस्तके प्रज्ञयाऽधीतं नाधीतं गुरुसन्निधौ।
न भ्राजन्ते समामध्ये जारगर्भा इव स्त्रियः॥ १९॥

(सुभाषित)

जो विद्यार्थी केवल पुस्तक के आधार पर बुद्धि बल से अध्ययन करते हैं और गुरु के समीप बैठकर अध्ययन नहीं कर पाते, वे विद्वानों की सभा में, जार-गर्भिणी स्त्रियों के समान, शोभा नहीं प्राप्त करते। अतः गुरु के चरणों में बैठकर रहस्यपूर्ण विद्या का अध्ययन अवश्य करना चाहिए।

The learners (Student), studying on the basis of books only as per their own wisdom and neglecting the study in the vicinity of teachers (preceptors), get never adorned in the assembly of scholars, like an adulteress woman. (It is essential to gain the mesterious knowledge practically in possession of the teacher)

शुश्रूषारहिता विद्या अपि मेधागुणैर्युता।
बन्ध्येव युवती तस्य न विद्या फलिनी भवेत्॥ २०॥

(याज्ञव.शि.)

सेवा-शुश्रूषा के बिना प्राप्त की हुई विद्या बाँझ युवती की तरह शोभारहित होती है, चाहे वह मेधा आदि गुणों से युक्त क्यों न हो, वह विद्या फलवती नहीं होती। अतः शिष्य विद्या की शोभा और सफलता के लिए गुरु की सेवा अवश्य करे।

The knowledge acquired without the devotion and service tothe teacher, remains without glory like an young barren woman. The knowledge of such a person, though full of intellect, is never fruitful. (The learner should essentially be devoted to his teacher for the effectiveness of his knowledge).

गुरुशुश्रूषया विद्या पुष्कलेन धनेन वा।
अथवा विद्यया विद्या चतुर्थं नोपपद्यते॥ २१॥

(याज्ञव.शि.)

मनुष्य गुरु की सेवा से विद्या हासिल करे यह प्राप्ति का पहला उपाय है। पर्याप्त धन-व्यय करके भी विद्या को प्राप्त कर सकता है यह विद्या प्राप्ति का दूसरा उपाय है। आपसी विद्या-विनिमय से भी मनुष्य विद्या प्राप्त कर सकता है- यह तीसरा उपाय है। इन तीन उपायों के अतिरिक्त विद्या-प्राप्ति का चौथा उपाय कोई नहीं है। इनमें से जो भी उपाय सम्भव हो उससे मनुष्य विद्या को प्राप्त करे। गुरु के प्रति सेवा-भाव, सम्मान विद्या-प्राप्ति का सर्वोत्तम उपाय है।

The student should acquire the wisdom by the devotion and nursing of teacher. This is the first trick for acquiring the knowledge. knowledge can be acquired by expending sufficient money and this is the second remedy for acquiring the knowledge. knowledge can be acquired by exchanging one's knowledge and this is the third means for acquiring the knowledge. Thus there is no fourth remedy for acquiring the knowledge. One should attain the knowledge by the mean possible easy from these three. (Devotion and respect to the teacher is the best remedy for acquiring the knowledge).

जलमभ्यासयोगेन शैलानां कुरुते क्षयम्।
कर्कशानां मृदुस्पर्शः किमभ्यासान्न साध्यते॥ २२॥

(याज्ञव.शि.)

कोमल स्पर्श वाला जल अत्यंत कठोर पर्वतों का अभ्यास-बल से विनाश कर देता है। अभ्यास बहुत बड़ी वस्तु है। अभ्यास से सब कुछ सिद्ध हो सकता है। अतः विद्याभिलाषी विद्या-प्राप्ति के लिए सतत अभ्यास करता रहे।

The water with its tender touch ruins the extremely hard mountains by repeated practices. Practice is very important and it can solve every problem. Hence the learner (student) should practice constantly for acquiring knowledge.

यथा पिपीलिकाभिश्च क्रियते पांसुसंचयम्।
न चात्र बलसामर्थ्यमुद्यमस्तत्र कारणम्॥ २३॥

(याज्ञव.शि.)

जैसे दीमक मिट्टी के कणों का ढेर बना लेती है, वैसे विद्यार्थी भी धीरे-धीरे विद्या का संचय करता रहे। इस उदाहरण में बल रूप सामर्थ्य नहीं है अपितु (पुरुषार्थ) ही कारण है। अतः विद्यार्थी विद्या-प्राप्ति के लिए उद्यम करता रहे।

The student should accumulate the knowledge (learning) gradually like the white ants, which make a heap of dust-particle. Strength is no reason in making the heap os dust by ants but their emterprise only. Therefore a student (learner) should be hardworking for acquiring the knowledge.

अंजनस्य क्षयं दृष्ट्वा बल्मीकस्य तु संचयम्।
अवन्ध्यं दिवसं कुर्याद् दानाध्ययनकर्मसु॥ २४॥

(याज्ञ.शि.)

जैसे आँखों में लगाया काजल धीरे-धीरे मिट जाता है वैसे ही स्वाध्याय न करने से विद्या भी ह्रास को प्राप्त हो जाती है। जैसे दीमक धीरे-धीरे मिट्टी के कणों का संचय (ढेर) कर लेती है वैसे विद्यार्थी भी प्रतिदिन स्वाध्याय से विद्या का संचय करता रहे। धीरे-धीरे अभ्यास से सब कुछ सिद्ध हो सकता है। प्रत्येक मनुष्य दान, अध्ययन आदि नित्य कर्म में लगा रहे और दिन को सफल बनाये। एक दिन भी व्यर्थ न जाने दे।

The knowledge, without practice decreases as the collyrium applied in eyes is erased little by little. The student should collect learning (knowledge) gradually by practicing, as a white and collects the dust particles. Every human being should perform his routine duty of charity, study and make the day successful. Not a single day should be passed useless.

हयानामिव जात्यानामर्धरात्रार्धशायिनाम्।
नहि विद्यार्थिनां तन्द्रा चिरं नेत्रेषु तिष्ठति॥ २५॥

(याज्ञ.शि.)

जैसे उत्तम जाति के घोड़े अर्धरात्रिकाल के परिमाण से भी आधा काल शयन करते हैं, वैसे विद्यार्थी के नेत्रों में चिरकाल तक नींद नहीं ठहरती है। तात्पर्य यह है कि नींद विद्या-अभ्यास में बाधक है। अत: विद्यार्थी अधिक निद्रा से दूर रहे।

As the horses of superior race sleep for a while (till a little quantity of midnight) likewise the students cannot enjoy the sleep for a long time.

(Sleeping is the obstruction for learning hence the student should avoid more sleeping.)

अन्नव्यञ्जनयोर्भागौ तृतीयमुदकस्य च।
वायोः सञ्चरणार्थाय चतुर्थमुपकल्पयेत्॥ २६॥

(याज्ञव.शि.)

विद्यार्थी भोजन में एक भाग अन्न का तथा एक भाग व्यञ्जन (साग, सब्जी अदि) का और एक भाग जल का रखे एवं एक भाग वायु-संचार के लिए भी छोड़ दे। इस अनुपात से भोजन करे। तात्पर्य यह है कि निद्रा के समान अधिक आहार भी विद्याभ्यास में बाधक है। अत: अधिक भोजन न करें।

The student should keep the combination of one part each victuals, edible herbs, water equally and should leave one part for breathing. The student should take food at this ratio (Excess food also, like sleep is obstruction in acquiring the knowledge. Hence there should be no excess fooding)

यथा खनन् खनित्रेण नरो वार्यधिगच्छति।
तथा गुरुगतां विद्यां शुश्रूषुरधिगच्छति॥ २७॥

(याज्ञव.शि.)

सौ बार अभ्यास करने से विद्या प्राप्त हो जाती है और हजार बार अभ्यास करने से स्थिर हो जाती है और लाख बार अभ्यास करने से विद्या इस लोक और परलोक में भी स्थिर हो जाती है।

The knowledge is acquired by exercising hundred times and by repeating thousand times it becomes firm. After revising a lac time the knowledge becomes permanent in this and other world.

अहेरिव गणाद् भीतः सम्मानात् नरकादिव।
राक्षसीभ्य इव स्त्रीभ्यः स विद्यामधिगच्छति॥ २८॥

(याज्ञ.शि.)

जो विद्यार्थी जन-समूह से सर्प के समान, सम्मान से नरक के तुल्य स्त्रियों से राक्षसी के समान डरता है वह विद्या को प्राप्त कर सकता है।

The learned, who is afraid of mass of people like a snake of honour the hell, of females like giantess, can acquire the knowledge. (A student should remain away from the mass, the honour and females)

न भोजनविलम्बी स्यात् न च नारीनिबन्धनः।
सुदूरमपि विद्यार्थं ब्रजेत् गरुडहंसवत्॥ २९॥

(याज्ञव.शि.)

विद्या का अभिलाषी भोजन आदि कार्यों में अधिक विलम्ब न करे (समय को वृथा न जाने दे)। युवतियों में अपना मन न बाँधे। जैसे गरुड़ और हंस मानसरोवर आदि दूर स्थानों में चले जाते हैं वैसे ही विद्या-प्राप्ति के लिए सुदूर देश में भी जाना पड़े, तो चला जाये।

A person, desirous for knowledge (passing the time in vain) should not make delay in taking food, He should not be attached with young women. A student, if required, should depart to far (remote) places for acquiring the knowledge as eagles and swans

depart to far off places for thier food.

सर्वेषामनूत्सर्गो विद्यायाः॥ ३०॥ (आपस्तम्ब धर्मसूत्र)

सबका यह कर्त्तव्य है कि शास्त्रों का स्वाध्याय न छोड़ें

It is the common duty of all not to anandon the study of the scriptures.

अदिवास्वापी। अगन्धसेवी। मैथुनं न चरेत्।
अजनवादशीलः। रहश्शीलः। मृदु। दान्तः। ह्रीमान्
दृढ़धृतिः।
स्वाध्यायधृग् धर्मरुचिस्तपस् व्यृजुर्मृदृस्सिद्ध्यति
ब्रह्मचारी॥ ३१॥

(आपस्तम्बधर्मसूत्र)

विद्यार्थी दिन में शयन न करे। सुगंधित पदार्थों का सेवन न करे। वह ब्रह्मचर्य से रहे। व्यर्थ बकवास न करे वह क्षमाशील रहे। परिश्रमपूर्वक अपने कर्त्तव्यों को पूर्ण करे। वह नम्र और दृढ़निश्चयी हो, आत्मनियंत्रण रखे। विद्यार्थी अधीत विषय का स्वाध्याय करता रहे, धर्म पथ में रुचि रखे, सत्यवादी होवे।

A student should not sleep during the day time. A student should not use perfumes. A student should remain celibate and morally pure. A student should not indulge in gossip. A student should be judicious when speaking. A student should forgive. A student should unassuming. A student should be in control of himself.

Besides observing the above commandments, a student who puts into practice what he has learned who believes in treading the moral path who is truthful and forgiving is the one, who attains.

आत्मप्रशंसां परगर्हाम् इति च वर्जयेत्।
हृष्टो दर्पति दृप्तो धर्मम् अतिक्रामति धर्मातिक्रमे खलु
पुनर्नरकः॥ ३२॥

(आपस्तम्बधर्मसूत्र)

स्नातक (विद्यार्थी को) अपनी प्रशंसा और परनिन्दा से दूर रहना चाहिए। ज्ञान प्राप्ति के कारण उसे यदि हर्ष होता है तो गर्व होने का भय

रहता है और गर्वयुक्त होने पर वह नीति धर्म का अतिक्रमण कर सकता है, धर्म का अतिक्रमण होने पर अन्त में नरकगामी होता है।

A graduate should avoid praise of himself and criticism of others. A graduate elated with achievement of learning is in the danger of becoming arrogant. An arrogant person transgresses the rules of behaviour. In consequence, hell becomes his portion.

अच्छा गिरो मतयो देवयन्तीरग्निं यन्ति द्रविणं भिक्षमाणाः।
सुसन्दृशं सुप्रतीकं स्वञ्च, हव्यवाहमरतिं मानुषाणाम्॥३३॥

(ऋग्वेद)

जो कन्याएँ विद्यायुक्त वाणियों, सद्बुद्धियों वाले तथा दर्शनीय, सुन्दर साधनों वाले, पूजने योग्य मनुष्यों की तथा उत्तम धन अथवा यश की कामना करती हैं, वे अग्नि के समान अज्ञानान्धकार को मिटाने वाली अध्यापिका को प्राप्त होती हैं। वे ही अपने गृहस्थ जीवन को सुखी बना सकती हैं। अतः सभी कन्याओं को बाल्यकाल में सुशिक्षा अवश्य प्राप्त करनी चाहिए।

Only those girls can make their families happy who have been taught by lady teachers glowing fire-like with Knowledge. Such girls speak cultured tongue, desire learned and righteous husbands, pray for readily available riches and fame, come in contact with teachers who are worth visiting, venerable and have no dearth of means.

अतः संस्कारकरणे क्रियतामुद्यमो बुधैः।
शिक्षयौषधिभिर्नित्यं सर्वथा सुखवर्द्धनः॥ ३४॥

(संस्कारविधि)

संस्कार सुखवर्धक हैं, अतः बुद्धिमानों को संस्कारों को प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए। बच्चों और मनुष्यों को शिक्षा देकर तथा उपयुक्त औषधों द्वारा प्रतिदिन संस्कार करते रहना चाहिए।

Traditions being beneficial, the intellectuals must make all attempts to continue promoting them. Men and children must be trained for the daily rituals with

proper initiation and medicines.

अन्यैव कापि धनिनां द्रविणात्मिका श्रीः।
विद्यात्मिका च विदुषामपरैव लक्ष्मीः॥ ३५॥
(भिक्षाटनकाव्यम्)

धनी लोगों की लक्ष्मी तो रुपयों-पैसों की होती हैं, परन्तु विद्वानों की विद्या ही अद्भुत लक्ष्मी होती है।

For the rich persons their wealth is money but for the scholars it is learning alone, which is their wonderful wealth.

आचार्यपुत्रः शुश्रूषुर्ज्ञानदो धार्मिकः शुचिः।
आप्तः शक्तोऽर्थदः साधुः स्वोऽध्याप्या दश धर्मतः॥ ३६॥
(मनुस्मुति)

निम्नलिखित दस व्यक्तियों को ही नियमानुसार पढ़ाना चाहिए:- (1) आचार्य का पुत्र, (2) सेवा करने वाला, (3) किसी प्रकार का अन्य ज्ञान का दाता, (4) धार्मिक व्यक्ति, (5) पवित्र रहने वाला, (6) विश्वसनीय व्यक्ति, (7) शरीर से समर्थ, (8) धन देने वाला, (9) साधु, (10) अपना सम्बन्धी।

The following ten should according to the rules laid down, be imparted education. (1) the son of Acharya, (2) one who serves, (3) giver of some other-knowledge. (4) a spiritual personl (5) someone pure] (6) reliable person] (7) physically able (8) donor of money (9) gentle, and (10) one's own relative.

आचार्यश्च पिता चैव, माता भ्राता च पूर्वजः।
नार्तेनाप्यवमन्तव्या, ब्राह्मणेन विशेषतः॥ ३७॥
(मनुस्मृति)

छात्र का और विशेष रूप से ब्राह्मण छात्र का यह कर्त्तव्य है कि

दु:खी होने पर भी आचार्य, पिता, माता और बड़े भाई का कभी भी अपमान न करे।

It is the duty of a student, particularly of a Brahmana student that even when feeling grieved he must never insult the Acharya, his parents and his elder brother.

आचार्यस्य प्रियं कुर्यात् प्राणैरपि धनैरपि।
कर्मणा मनसा वाचा द्वितीयः पाद उच्यते॥ ३८॥

(महाभारत/उद्योग)

शिक्षा-ग्रहण करने पर ध्यान देने के साथ-साथ शिष्य का दूसरा कर्त्तव्य है कि वह आचार्य का प्राणों से, धन से, मन से और और वाणी द्वारा भी हित ही करे।

Besides learning the other duties of a student is to think of the welfare of his Acharya with life, money, action, heart and speech.

आचार्यस्यैव तज्जाड्यं, यच्छिष्यो नावबुध्यते।
गावो गोपालकेनैव, कुतीर्थमवतारिताः॥ ३९॥

(प्रकीर्णखण्ड)

यदि शिष्यों की बुद्धि में पाठ्य विषय नहीं बैठता, तो यह नासमझी आचार्य की है कि उसने ठीक विधि से नही पढ़ाया। जैसे यदि गौएँ पानी नहीं पी सकीं तो इसमें दोष ग्वाले का है, जो उन्हें पानी पीने के योग्य स्थान पर नहीं ले गया।

If the students do not follow a lesson, it is the failure of the teacher, who has not followed proper methods of instruction. For example, If the cows do not drink water the fault lies with the cowherd who did not take them to a proper watertaking place.

आलस्येन हता विद्या, आलापेन कुलाङ्गना।
अल्पबीजं हतं क्षेत्रम्, हतं सैन्यमनायकम्॥ ४०॥

(सुभाषित)

आलस्य करने से विद्या नष्ट हो जाती है, बातें करने से कुलीन नारी पतित हो जाती है। थोड़ा बीज डालने से खेती ठीक नहीं होती और नायक से रहित सेना नष्ट हो जाती है।

Idleness destroys education, talks with other decline a woman of high family, less amount of seeds spoil the crops, and an army is useless without its commander.

ईशे ह्यग्निरमृतस्य भूरेरीशे,
रायः सूवीर्यस्य दातोः।
मा त्वा वयं सहसावन्नवीरा,
माप्सवः परिषदाम मा दुवः॥ ४१॥

(ऋग्वेद)

हे ज्ञानबल के धनी विद्वान! आप अग्नि के समान तेजस्वी हैं। आप अमृतरूप ईश्वर को जानने में तथा विविध विद्यारूपी धन को भी देने में समर्थ हैं। हम जब आप के पास आएँ तो उत्साहरहित होकर, कुरूप बन कर और सेवाभाव से हीन होकर न आएँ। अर्थात् श्रेष्ठ गुरु के पास जाते समय शिष्य को सोत्साह, सुसभ्य वेश में और सच्चा सेवक बन कर ही जाना चाहिए।

O Guru, rich in learning, luminous like fire and equipped with the strength of knowledge! you are capable of giving us a variety of riches and help us in knowing nectar-like God. When we come to you we should neither lack enthusiasm, nor be devoid of the sense of service.

ऊर्ध्वं प्राणा ह्युत्क्रामन्ति, यूनः स्थविर आयति।
प्रत्युत्थानाभिवादाभ्यां, पुनस्तान् प्रतिपद्यते॥ ४२॥

(मनुस्मृति)

किसी वृद्ध (गुरु आदि) पुरुष के आते ही छोटे व्यक्ति के प्राण ऊपर की ओर चढ़ने लगते हैं। ऐसी दशा में जब उठकर छोटा व्यक्ति

उनका अभिवादन करता है, तो प्राण पुनः ठीक स्थिति में आ जाते हैं। अतः बड़ो के आने पर खड़े होकर उन्हें प्रणाम करना चाहिए।

As soon as young one sees some old man approaching, his heart-beat increases. In such a condition it is better to stand up and pay repects to the old man. This will bring his heart-beat back to normal.

ऋषियज्ञं देवयज्ञं भूतयज्ञं च सर्वदा।
नृयज्ञं पितृयज्ञं च, यथाशक्ति न हापयेत्॥ ४३॥

(मनुस्मृति)

द्विजों (ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य) का कर्त्तव्य है कि वे ब्रह्मयज्ञ, हवन, बलिवैश्वदेव यज्ञ, अतिथि-यज्ञ और पितृयज्ञ को प्रतिदिन करें और यथाशक्ति किसी दिन भी इन्हें न छोड़ें।

It is the duty of the Dwijas-born to perform the yajnas of five types (Brahmayajna, Havan, Balivaishvadeva-Yajna, Atithiyajna, and the Pitriyajna) as far as possible and never to miss them even once.

ऋषिषूत्क्रामत्सु मनुष्या देवानब्रुवन्
को न ऋषिर्भविष्यतीति?
ते मनुष्येभ्यः तर्कमृषिमप्रयच्छन्॥ ४४॥

(निरुक्त)

जब तत्त्ववेत्ता ऋषि कम होते चले गए, तब मनुष्यों ने विद्वानों से पूछा - "इन ऋषियों के पश्चात् हमारा पथप्रदर्शन कौन करेगा?" तब विद्वानों ने कहा - "ऋषियों के न रहने पर तर्क (अर्थात् युक्तियाँ) ही तुम्हारा पथप्रदर्शन करेगा।"

When the number of wise Rishis started declining, the human beings inquired the scholars, "Who would guide after all the sages are gone". Then the scholars said, "In the absence of sages reasoning or logic will guide you".

एते शिष्यगुणाः सर्वे, विज्ञातव्या यथार्थतः।
नापरीक्षितचारित्रे, विद्या देया कथञ्चन॥ ४५॥

(महाभा./शान्ति.)

शिष्य के इन सब गुणों को ठीक प्रकार से जान कर ही शिक्षा देनी चाहिए। जिस शिष्य के चरित्र की परीक्षा नहीं की गई, उसे किसी भी तरह से शिक्षा नहीं देनी चाहिए।

No Student may be imparted instructions without testing his potentialities and attributes. Further without knowing the conduct of the student, knowledge should not be imparted.

किं तस्य ज्ञानतपसा, जपहोम-प्रपूजनैः।
किं विद्यया वा यशसा, स्त्रीभिर्यस्य मनो हृतम्॥ ४६॥

(ब्रह्मवैवर्तपुराण)

जिस व्यक्ति का मन स्त्रियों ने अपनी ओर खींच लिया है अथवा जो उनमें रम गया है, उसके ज्ञान, तप, जप, हवन-यज्ञ, पूजापाठ, विद्या और यश सभी विफल हैं (क्योंकि वह अपने मन को नहीं जीत सका)।

One, whose mind has been stolen away by ladies or who is absorbed in them, his knowledge; austerities, prayers, Havan-yajnas, worship, knowledge and good name all are futile.

गीर्भिर्गुरूणां परुषाक्षराभिस्तिर-
स्कृता यान्ति नरा महत्त्वम्।
अलब्धशाणोत्कषणा नृपाणां,
न जातु मौलौ मणयो वसन्ति॥ ४७॥

(भामिनी-विलास)

गुरुओं की कठोर वाणियों द्वारा अपमानित किए गए लोग ही महान् बना करते हैं। जैसे - यदि मणियों को शाण पर न घिसा जाए तो

वे राजाओं के सिरों का भूषण नहीं बन सकतीं। (अतः गुरुओं के कठोर वचन सहने से ही मनुष्य उन्नति कर सकता है।)

Those, who are lashed by the harsh tongue of their Gurus, become great, as the gems need polish by hard instruments to reach the king's crown.

गुरुं शिष्यो नित्यमभिवादयीत,
स्वाध्यायमिच्छेच्छुचिरप्रमत्तः।
मानं न कुर्यान्नादधीत रोषम्,
एष प्रथमो ब्रह्मचर्यस्य पादः॥ ४८॥

(महाभा./उद्योग)

शिष्य को चाहिए कि वह प्रतिदिन गुरु को अभिवादन करे और पवित्र तथा सावधान होकर स्वाध्याय करे। अभिमान और क्रोध कभी न करे। यह ब्रह्मचर्य का प्रथम चरण है।

A student should offer salutations to his Guru daily and remaining pious meditate carefully. He must forever forsake anger and vanity. This is the first step of Brahmacharya.

गुरुभ्य आसनं देयम्, कर्त्तव्यं चाभिवादनम्।
गुरूनभ्यर्च्च युञ्जन्ते, आयुषा यशसा श्रिया॥ ४९॥

(महाभा./शान्ति.)

शिष्य को चाहिए कि गुरु के आने पर उन्हें आसन दे और उनका अभिवादन करे। जो लोग गुरुओं का सम्मान करते हैं, वे दीर्घायु, कीर्ति और धन-सम्पत्ति से सम्पन्न हो जाते हैं।

It is the duty of the pupil to offer seat to his teacher on arrival, and pay respects. Those who respect their teachers lifelong earn long-age, fame and the riches.

गुरोर्यत्र परीवादो, निन्दा वापि प्रवर्त्तते।
कर्णौ तत्र पिधातव्यौ, गन्तव्यं वा ततोऽन्यतः॥ ५०॥

(मनुस्मृति)

जहाँ गुरु की निन्दा हो रही हो या उसे बुरा भला कहा जा रहा हो, वहाँ शिष्य को कान बन्द कर लेने चाहिए, अथवा वहाँ से कहीं और चले जाना चाहिए।

Wherever one's Guru is being criticized or abused, the student should either shut his ears or move away from that place.

चीयते बालिशस्यापि, सत्क्षेत्रे पतिता कृषिः।
न शालेः स्तम्बकरिता वप्तुर्गुणमपेक्षते॥ ५१॥

(मुद्राराक्षस)

अनपढ़ व्यक्ति भी यदि अच्छे खेत में बीज डाल देता है, तो वह उगकर बढ़ने लगता है। अतः धान आदि की वृद्धि में बोने वाले के गुणों का महत्त्व नहीं होता, क्षेत्र का ही महत्त्व होता है। ऐसे ही योग्य पात्र में किसी भी व्यक्ति द्वारा दी हुई शिक्षा सफल हो जाती है।

Even an illiterate when he sows seeds in a fertile land, will make them germinate and grow. The growth of a seed is not dependent on the person who sows it but on the fertility of the soil, similarly, the quality of learning does not entirely depend on the one who imparts instruction, but on the recipient also.

तद्ब्रूयात् तत्परं पृच्छेत् तत्परो तदिच्छेत् भवेत्।
येनाऽविद्यामयं रूपं त्यक्त्वा विद्यामयं भवेत्॥ ५२॥

(समाधिशतक)

विद्या की प्राप्ति के लिए छात्र को विद्याविषयक बात ही करनी चाहिए, उसी से सम्बन्धित प्रश्न पूछने चाहिए, उसी की कामना करनी चाहिए, विद्या में ही लीन रहना चाहिए। ऐसा करने से ही वह अपने अविद्यामय स्वरूप को त्याग कर विद्यामय स्वरूप को प्राप्त कर सकता है।

One who wishes to learn must always talk of academic subjects, put questions related to it, keep desir-

ing it and remain immersed in it. In this way he can transform his non-educated image to that of the educated.

तरणिरित् सिषासति वाजं पुरन्ध्या युजा।
आ व इन्द्र पुरुहूतं नमे गिरा तष्टेव सुद्रवम्॥ ५३॥
(ऋग्वेद)

जो शिक्षा द्वारा छात्रों को पार लगाने वाला शिक्षक ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा शुभबुद्धि द्वारा दे रहा है, ज्ञानरूपी परमैश्वर्य के स्वामी उसकी सभी स्तुति करते हैं। उसको हम छात्र श्रद्धा से इस प्रकार प्रणाम करते हैं, जैसे बढ़ई पहिए को गढ़ते समय झुक जाता है; अर्थात् पूर्णतः नम्र होकर हम गुरु को प्रणाम करते हैं।

One who is giving instructions to his students with good intentions in both arts and sciences everyone worships that illustrious master of knowledge. We the students offer him their respect in the way as a carpenter bends down while making a wheel.

दण्डा इवेद् गो अजनास आसन्,
परिच्छिन्न भरता अर्भकासः।
अभवच्च पुर एता वसिष्ठ-
आदित् तृत्सूनां विशो अप्रथन्त॥ ५४॥
(ऋग्वेद)

हे अध्यापको, हे विद्वानो! जो अभी सुशिक्षित वाणी में कुशल नहीं हैं, जिन का विज्ञान क्रमिक नहीं है और छिन्न-भिन्न है, जो देह की पुष्टि को ही महत्त्व दे रहे हैं और छोटी आयु वाले बालकों के समान तुच्छ विचारों वाले हैं तथा दण्ड के समान अकड़ वाले या धृष्ट हैं और जो निम्न लोगों के मध्य बदनाम करते हैं, वे अध्यापन के योग्य नहीं है। ऐसे मूढ़ों को शिक्षा नहीं देनी चाहिए। इस के विपरीत जो गुरुभक्त और आगे बढ़ने वाले हों, वे शिक्षा के सुपात्र हैं, उन्हें ही शिक्षित करना चाहिए।

O scholors, O Teachers! Those who are not trained in cultivated language, whose information is not chronological and is disordanized, those who give precedence to body-building, those who are narrow-minded and mean, who are as stiff as stick and defame others among the low-breeds are unfit to be instructed. Such persons may not be taught. On the contrary, those who venerate their teachers and are forward-looking, must be equipped with education.

धर्मशास्त्राणि वेदाश्च, षडङ्गानि नराधिप।
श्रेयसोऽर्थे विधीयन्ते, नरस्याक्लिष्टकर्मणः॥ ५५॥

(महाभा./शान्ति)

हे राजा युधिष्ठिर! शुभ कर्म करने वाले मनुष्य के कल्याण के हेतु ही धर्मशास्त्रों, वेदो और वेदों के छह अंगों की शिक्षा दी जाती है। अतः शिक्षा का परम उद्देश्य मानव का कल्याण करना ही है।

O king Yudishthir! For the sake of one's good he is taught the Dharmashastras, the Vedas and the six Vedangas. The purpose of education is the well-being an individual.

न ते गिरो मृष्ये तुरस्य, न सुष्टुतिमसुरस्य विद्वान्।
सदा ते नाम स्वयशो विवक्मि॥ ५६॥

(ऋग्वेद)

हे विद्या का अभ्यास न करने वाले अयोग्य छात्र, चाहे तुम शीघ्र ही कार्य करने में समर्थ हो, तो भी तुम्हारी वाणी प्रशंसनीय नहीं है, क्योंकि तुम ठीक प्रकार से पठित पाठ को नहीं सुन सकते। मूर्खों में प्रसिद्ध तुम जैसे छात्र द्वारा की गई अपनी प्रशंसा को भी मैं पसन्द नहीं करता। मैं तो चाहता हूँ कि सुशिक्षित होकर तुम नाम कमाओ, जिससे मेरी कीर्ति बढ़े। भाव यह है कि जो छात्र परीक्षा में असफल हो जाता है, वह प्रशंसनीय नहीं कहा जा सकता।

O you my pupil! who shuns practice in learning, even if you are ready for employment immediately, I do

not like praise from you because you can not repeat properly the lessons already taught. you, who are famous amongst fools, I do not like any praise from you. I would much prefer you becoming properly educated and earn reputation than what you are right now. That would enhance my reputation.

नयस्य विनयो मूलम्, विनयं शास्त्रनिश्चयात्।
विनयो हीन्द्रियजयस्तैर्युक्तः पालयेन्महीम्॥ ५७॥

(अग्निपुराण)

नीति का मूल (आधार) शिक्षा है, और शिक्षा शास्त्रों के अध्ययन करने से प्राप्त होती है। शिक्षा ही इन्द्रियों को जीतने का साध न है। जितेन्द्रिय राजा ही चिरकाल तक पृथ्वी पर शासन कर सकता है।

Education is the basis of polities. One acquires it after studying the shastra's education. Education is the means to conquer sense. The king that has conquered his senses rules forever.

न स्तूयादात्मनाऽऽत्मानं, न परं परिवादयेत्
न सतोऽन्यगुणान् हिंस्यात्, नासतः स्वस्य वर्णयेत्॥ ५८॥

(यशस्तिकलचम्पू)

शिष्य का कर्त्तव्य है कि वह अपनी प्रशंसा न करे ओर न हीं दूसरे की निन्दा करे, श्रेष्ठ व्यक्तियों के गुणों को तुच्छ न बताए तथा दुष्टों को अपना परिचय न दे।

It is the duty of a student neither to speak highly of himself nor condemm others. He should not belittle the great deeds of others nor introduce himself to the bad persons.

प्रतिश्रवणसम्भाषे शयानो न समाचरेत्।
नासीनो न च भुञ्जानो न तिष्ठन्न पराङ्मुखः॥ ५९॥

(मनुस्मृति)

शिष्य को चाहिए कि वह गुरु के प्रश्न का उत्तर देते समय या उनसे बातचीत करते समय न लेटा रहे, न बैठा रहे, न खाता रहे और न ही मुँह फेर कर बात करे। अर्थात् सामने खड़े रहकर ही गुरु के प्रश्नों के उत्तर देने चाहिए या बातचीत करनी चाहिए।

When asked a question by the Guru, a student should answer respectfully while facing him. He may neither sit, nor recline, nor eat and neither must he turn his face while giving his reply.

बुद्ध्या युक्त्यार्जवेनापि गुरूणि च लघूनि च।
कार्याणि साधयेद्धीमान्, न गर्वान्न च मत्सरात्॥ ६०॥

(गणेशपुराण)

बुद्धिमान् गुरु और शिष्य दोनों को चाहिए कि वे सोचकर, युक्ति से और सरलता से छोटे-बड़े सभी कार्यों को सिद्ध करें। वे न तो अभिमानपूर्वक और न ही शत्रुता से कोई कार्य करें।

Intelligent teacher and his students should undertake the smallest of their jobs with simplicity and well-thought out strategy. All jobs may be attempted neither with pride nor with enemity.

यः पठति लिखति, परिपृच्छति पण्डितानुपासयति।
तस्य दिवाकर-किरणैर्नलिनीव विबोध्यते बुद्धिः॥ ६१॥

(नीतिद्विषष्टिका)

जो छात्र पढ़ता, लिखता, प्रश्नों को पूछता और विद्वानों की संगति करता है, उसकी बुद्धि इस प्रकार विकसित होती जाती है, जिस प्रकार सूर्य की किरणों से कमल खिल उठता है।

Even as the lotus blossoms because of sunrays, so a student's brain, develops by reading, writing, asking and the company of scholors.

यथा हि कनकं शुद्धिं, तापच्छेदनिकर्षणैः।
परीक्षेत तथा शिष्यानीक्षेत् कुलगुणादिभिः॥६२॥

(महाभा./शान्ति.)

जिस प्रकार तपाने, काटने और घिसने से खरे सोने की परख होती है, उसी प्रकार शिष्यों के खानदान तथा गुण आदि द्वारा उनकी परीक्षा करके ही तदनुसार शिक्षा देनी चाहिए।

As one tests the purity of gold after putting it into fire, cutting and rubbing, in the same way it is necessary to test one's pupil also in terms of family and aptitude before imparting instructions.

—o—

प्रकीर्णखण्डः

आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु।
बुद्धिं तु सारथिं विद्धि, मनः प्रग्रहमेव च॥
इन्द्रियाणि हयानाहुर्विषयांस्तेषु गोचरान्।
आत्मेन्द्रियमनोयुक्तं भोक्तेत्याहुर्मनीषिणः॥ १॥

(कठोपनिषद्)

मानव का शरीर रथ है और आत्मा उस रथ पर बैठने वाला (रथी) है। बुद्धि को सारथि और मन को लगाम माना गया है। इन्द्रियाँ रथ को खींचने वाली, घोड़े के समान हैं तो सांसारिक विषय भोग की बातें (इच्छाएँ) इन्द्रियों के विचरणक्षेत्र हैं। जब आत्मा बुद्धि और इन्द्रियों के संयाग से शरीर में आसक्त होता है तो उसे मनीषीजन भोक्ता मानते हैं।

Know that the soul is the rider and body the chariot, the intellect the charioteer and the mind the reins. The senses they say, the horses the desires are the pathways. When the soul is attached to a body with the mind and the senses, the soul is said to be enjoyer.

अर्थनाशं मनस्तापं गृहे दुश्चरितानि च।
वञ्चनं चापमानं च मतिमान्न प्रकाशयेत्॥ २॥

(चाणक्य)

बुद्धिमान को चाहिए कि वह धननाश को, मन के दुःख को, घर के कलह को, ठगी तथा अपमान को प्रकाशित न करे।

An intelligent person should not tell every body the loss of wealth, he has suffered his sorrows bad happening in the home, being cheated and having been insulted.

सुजीर्णमन्नं सुविचक्षणः सुतः
सुशासिता स्त्री नृपतिः सुसेवितः।
सुचिन्त्य चोक्तं सुविचार्य यत्कृतं
सुदीर्घकालेऽपि न याति विक्रियाम्॥ ३॥

(पंचतंत्र)

अच्छी रीति से पका हुआ भोजन, विद्यावान् पुत्र, सुशिक्षित अर्थात् आज्ञाकारिणी स्त्री, अच्छी प्रकार से सेवा किया हुआ राजा, सोचकर कहा हुआ वचन और विचार कर किया हुआ काम, ये बहुत काल तक भी नहीं बिगड़ते हैं।

well cooked food, learned son (child) learned and submissive wife, well served king (administrator), well-conceived speech and well considered (thought) action all these get not altered till a long period.

अवशेन्द्रियचित्तानां हस्तिस्नानमिव क्रिया।
दुर्भगाभरणप्रायो ज्ञानं भारः क्रियां विना॥ ४॥

(पंचतंत्र)

जिनकी इन्द्रियां और चित्त वश में नहीं है उनका व्यापार हाथी के स्नान के समान निष्फल है और इसी प्रकार क्रिया के बिना ज्ञान (संतति उत्पत्ति की आशा के बिना बंध्या स्त्रियों के पालन-पोषण के समान) भार अर्थात् निष्फल है।

The action of those persons, whose senses and heart are out of control, are fruitless like an elephant's bathing. Accordingly the knowledge without action makes a man onerous as the protection and nourishment of barren woman without the hope of a child's birth is supposed to be burden for husband.

गर्भक्लेशः स्त्रियो मन्ये साफल्यं भजते तदा।
यदारिविजयी वा स्यात् संग्रामे वा हतः सुतः॥ ५॥

(मार्कण्डेयपुराण)

किसी स्त्री के गर्भ धारण करने का कष्ट (प्रसवपीड़ा) तभी सफल माना जा सकता है जब उससे उत्पन्न पुत्र (सन्तान) शत्रुओं पर

विजय प्राप्त करे या युद्धक्षेत्र में मरकर अमर हो जाय।

The pain of pregnancy (delivery) of a woman is supposed to be fruitful in the event of her child's being conquered the enemies or being killed in battle.

धिक् तस्य जन्म यः पित्रा लोके विज्ञायते नरः।
यत् पुत्रात् ख्यातिमभ्येति तस्य जन्म सुजन्मनः॥ ६॥

(मार्कण्डेयपुराण)

उस मनुष्य का जन्म व्यर्थ है जो पिता की ख्याति से लोगों में जाना जाता है या जिसका परिचय वंश और पिता के नाम से मिलता है। जिस पुत्र के जन्म लेने से (उसके गुण, शील और सत्कर्म से) वंश और पूर्वजों की ख्याति होती है, उसका जन्म सफल माना जाता है।

If known through the familiarity of parents and ancestors, the birth of a person (without his own good deeds qualities and propriety) is supposed to be useless. The birth of the person which brings fame and prestige for ancestors and parents is useful and reverred.

मुधा जातिविकल्पोऽयं लोकेषु परिकल्प्यते।
मानुष्ये सति सामान्ये, कोऽधमः कोऽथ चोत्तमः॥ ७॥

(शिवपुराण)

संसार में जाति-पांति का भेद व्यर्थ में ही किया जाता है। मानव जाति में जन्म ले लेने पर कोई अधम और उत्तम नहीं होता अपितु सभी मानव होते हैं।

The invention (presumption) of racialism or castism, in the world is useless on having taken birth in humanity none is low or high except human being.

धन्यास्ते भारते वर्षे जायन्ते ये नरोत्तमाः।
धर्मार्थकाममोक्षाणां प्राप्नुवन्ति महाफलम्॥ ८॥

(ब्रह्मपुराण)

उत्तम मानवकुल में जन्म लेने वाले वे लोग धन्य हैं जो भारतवर्ष में पैदा होते हैं और यहाँ जन्म लेकर धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष

इन चार शुभ महाफलों को पाते हैं।

Blessed are the humanbeings, who born in Bharatvarsh (India)and enjoy the fruit of four purusharthas i.e. Dharma (righteousness). Artha (significance) Kama (desire) and Moksha (salvation).

पृष्ठतः सेवयेदर्कं जठरेण हुताशनम्।
स्वामिनं सर्वभावेन परलोकममायया॥ ९॥

(सुभाषित०)

पीठ के बल सूरज की धूप खानी चाहिए, आग की गर्मी पेट से स्वामी की सब प्रकार से वफादारी से और परलोक की बिना कपट से सेवा करनी चाहिए।

One should endure (enjoy) the heat of sun through the back of body, should enjoy the warm of fire through abdomen (stomach), should serve the employer (lord) faithfully and devotedly and should serve the next world with honesty.

नाभिषेको न संस्कारः, सिंहस्य क्रियते मृगैः।
विक्रमार्जितराज्यस्य, स्वयमेव मृगेन्द्रता॥ १०॥

(सुभाषित०)

मृगों ने सिंह का न तो राज्यतिलक किया और न संस्कार किया परन्तु अपने पराक्रम से राज्य को पाकर मृगों का राजा होना दिखलाता है।

The animals never conducted an investiture ceremony and consecration of the lion eventhen the lion holds the kingdom of animals due to his prowess and heroism.

षट्कर्णो भिद्यते मन्त्रः तथा प्राप्तश्च वार्तया।
इत्यात्मना द्वितीयेन मन्त्रः कार्यो महीभृता॥ ११॥

(पंचतंत्र)

छह कान में गुप्त बात जाने से तथा अन्य से विदित हुई बात खुल जाती है इसलिए राजा को केवल एक ही से अर्थात् अकेले मंत्री से ही एकांत में विचार करना चाहिए।

A secret news become apparent after it is conveyed to six ears or informed by a rumour. Therefore an administrator (king) should discuss and deliberate with his counsellor only in private.

हीनसेवा न कर्त्तव्या कर्त्तव्यः महदाश्रयः।
पयोऽपि शौण्डिकीहस्ते वारुणीत्यभिधीयते॥ १२॥

(नीति०)

नीच की सेवा नही करनी चाहिए, बड़े पुरुषों का आश्रय करना चाहिए। जैसे कलारिन के हाथ में दूध को भी लोग वारुणी (शराब) समझ लेते हैं।

One should not devote himself inferior, rather should depend on great personage. As the milk also kept in the hands of liquor-seller's lady, is supposed to be wine.

पयः पानं भुजंगानां केवलं विषवर्धनम्।
उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये॥ १३॥

(सुभाषित)

सांपों को दूध पिलाना केवल जहर को बढ़ाना है, मूर्खों को उपदेश करना भी क्रोध बढ़ाने के लिए है शान्ति के लिए नहीं। अर्थात् सांप को दूध पिलाना जैसा विष को बढ़ाने वाला है वैसा ही मूर्ख को किया हुआ उपदेश क्रोध को बढ़ाने वाला है शांति करने वाला नहीं।

To cause to drink the milk to snakes increases their poison only, similarly to advice the foolish persons makes them furious but not mild.

स्नेहच्छेदेऽपि साधूनां गुणा नायान्ति विक्रियाम्।
भङ्गेऽपि हि मृणालानामनुबध्नन्ति तन्तवः॥ १४॥

(सुभाषित)

स्नेह टूट जाय तो भी सज्जनों के गुण नहीं पलटते हैं जैसे कमल की डंडी के टूटने पर भी उसके तंतु जुड़े ही रहते हैं।

Even on breaking the affection, the qualities of gentlement never revert. As on breaking the stalk of lotus it's fibres remain adjoined.

दुर्जनः प्रियवादी च नैतद्विश्वासकारणम्।
मधु तिष्ठति जिह्वाग्रे हृदि हालाहलं विषम्॥ १५॥

(सुभाषित)

दुष्ट मनुष्य का प्रियवादी होना यह विश्वास का कारण नहीं है। उसकी जीभ के आगे मिठास और हृदय में हालाहल विष भरा है।

If a wicked person becomes sweet-speaking it does not bring reliability in his personality. Sweetness is filled in his tongue only but the heart remains full of poison.

विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा
सदसि वाक्पटुता युधि विक्रमः।
यशसि चाभिरुचिर्व्यसनं श्रुतौ
प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम्॥ १६॥

(पंचतन्त्र)

आपत्ति में धीरज, बढ़ोतरी में क्षमा, सभा में वाणी की चतुरता युद्ध में पराक्रम, यश में रुचि और शास्त्र में अनुराग ये बातें महात्माओं में स्वभाव से ही होती हैं।

Patience in distress, tolerance in prosperity, eboquence in convention heroism in battle, inclination in reputation attachment in scriptures - These qualities exist in the nature of great persons.

विज्ञैः स्निग्धैरुपकृतमपि द्वेष्यतामेति कश्चित्।
साक्षादन्यैरपकृतमपि प्रीतिमेवोपयाति।
चित्रं चित्रं किमथ चरितं नैकभावाश्रयाणाम्,
सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः॥ १७॥

(सुभाषित०)

कोई-कोई मनुष्य पंडितों से तथा मित्रों से उपकार किये जाने पर भी शत्रुता करता है और शत्रुओं से प्रत्यक्ष में उपकार किये जाने पर भी प्रसन्न होता है। अव्यवस्थित चित्तवाले पुरुषों का चरित्र बड़ा अद्भुत है और सेवा का काम योगियों से भी बड़े कष्ट से हो सकता है।

Someone, after being favoured and helped by learned persons and friends also, keeps enemity and after being harmed directly by enemies becomes pleased. The conduct of deranged-heart people is strong and the act of service (devotion) is trouble-some for ascetics also.

दुर्जनो नार्जवं याति सेव्यमानोऽपि नित्यशः।
स्वेदनाभ्यंजनोपायैः श्वपुच्छमिव नामितम्॥ १८॥

(सुभाषित०)

मली गयी और तेल आदि लगाने से सीधी की गयी कुत्ते की पूँछ सीधी नहीं होती, वैसे ही दुर्जन नित्य आदर करने से भी सीधा नहीं होता है।

The tail of a dog, though rubbed with oil, twisted and tried to make straight, never becomes tame. Similarly the wicked person never becomes gentle even after being honoured.

तृणानि नोन्मूलयति प्रभंजनो मृदूनि नीचैः प्रणतानि सर्वतः।
समुच्छ्रितानेव तरूनग्रबाधते महान् महत्येव करोति विक्रमम्॥ १९॥

(सुभाषित)

आँधी चारों ओर से झुके हुए तथा कोमल और छोटे छोटे पौधों को नहीं उखाड़ती है पर बड़े-बड़े पेड़ों को जड़ से गिरा देती हैं क्योंकि बड़ा बड़े पर ही विक्रम करता (दिखाता) है।

The storm does not root up the tender and bent plants but throw down the big trees. It is true that the big and strong persons use their power on strong people only.

लुब्धमर्थेन गृह्णीयात् स्तब्धमंजलिकर्मणा।
मूर्खं छन्दानुरोधेन याथातथ्येन पण्डितम्॥ २०॥

(नीति)

लोभी को धन से, अभिमानी को हाथ जोड़कर, मूर्ख को उसका मनोरथ पूरा करके और पण्डित को सच कहकर वश में करना चाहिए।

The greedy should be grasped riches arrogant by folded hands (request) a fool by making up his wishes and learned by conveying truth and reality.

यद्यप्युपायाश्चत्वारो निर्दिष्टाः साध्यसाधने।
संख्यामात्रं फलं तेषां सिद्धिः साम्नि व्यवस्थिता॥ २१॥

(सुभाषित०)

यद्यपि मनोरथ के सिद्ध करने में चार उपाय - साम, दाम, दंड, भेद बताये गये हैं तथापि उन उपायों का फल केवल गिनती ही है, परन्तु कार्य का साधन मेल में रहता है, अर्थात् मेल से ही कार्य बन जाता हैं।

Though there are four means, namely SAMA, DANA, DANDA, BHEDA, for completion of one's desired work but these are only the practical instrument to perform a work successfully is reconciliation. Alliance can bring success in any work.

आदानस्य प्रदानस्य कर्त्तव्यस्य च कर्मणः।
क्षिप्रमक्रियमाणस्य कालः पिबति तद्रसम्॥ २२॥

(पंचतंत्र)

शीघ्र नहीं किये गये, लेने-देने और करने योग्य काम नहीं करने से उसका रस (आनन्द) समय पी लेता है।

If any debt or dues payable to anybody is not paid in due time, something to be taken from somebody is not taken in due time, any task to be done is not performed in due time then their inportance is lost. All these activities not completed rapidly loose their importance and charm and their pleasure becomes defunct.

प्रियं ब्रूयादकृपणः शूरः स्यादविकत्थनः।
दाता नापात्रसंदानी प्रगल्भः स्यादनिष्ठुरः॥ २३॥

(सुभाषित०)

उदार पुरुष को मीठा बोलना चाहिए, शूर को अपनी प्रशंसा नहीं करनी चाहिए, दाता को कुपात्र में दान नहीं करना चाहिए और उचित कहने वाले को दया रहित नहीं होना चाहिए।

A generous should speak sweet words, a brave should not make self-praise, a charitable person should, not grant to undeserving, a fair speaker (bold) should not be harsh.

असन्तुष्टा द्विजा नष्टाः संतुष्टाश्च महीभुजः।
सलज्जा गणिका नष्टा निर्लज्जाश्च कुलस्त्रियः॥ २४॥
(सुभाषित०)

असंतोषी ब्राह्मण, संतोषी राजा, लज्जावती वेश्या और निर्लज्जा, कुल की स्त्री ये चारों नष्ट होते हैं, अत एव निन्दा करने के योग्य हैं।

Dissatisfied Brahmans (learned persons) placid kings bashful prostitues, shameless women of a noble family all these four are supposed to be destroyed and useless. Therefore they are reproachable.

न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धाः,
वृद्धा न ते ये न वदन्ति धर्मम्।
धर्मः स नो यत्र न सत्यमस्ति,
सत्यं न तद्यच्छलमभ्युपैति॥ २५॥ (सुभाषित)

जिसमें वृद्ध पुरुष नहीं हैं वह सभा नहीं कहलाती है, जो धर्म को न कहें वे वृद्ध नहीं है, जिसमें सत्य नहीं है वह धर्म नहीं है और वह सत्य नहीं है जो छल से युक्त है।

The place, where there are no aged persons, is not an assembly. Those, who do not speak of righteousness, (religion) are not aged persons. where there is no truth, in not the religion, where there is deception, is not the truth.

धनेन किं यो न ददाति नाश्नुते,
बलेन किं यश्च रिपून् न बाधते।
श्रुतेन किं यो न धर्ममाचरेत्
किमात्मना यो न जितेन्द्रियो भवेत्॥ २६॥ (नीति)

मानव के उस धन से क्या है जो न देता है और न उपभोग करता है, उस बल से क्या है जो वैरियों को नहीं सताता है, उस शास्त्र से क्या है जो धर्म का आचरण नहीं करता है और उस आत्मा से क्या है जो जितेन्द्रिय नहीं होता है।

What is the purpose of that wealth, which is neither donated nor consumed (enjoyed), what is the purpose of that strength (power)

which does not torture the enemies, what is the purpose of knowledge of scripture, which does not motivate for moral conduct, what is the use of soul (self) which can not control the senses.

धर्मार्थं यस्य वित्तेहा वरं तस्य निरीहिता।
प्रक्षालनाद्धि पंकस्य दूरादस्पर्शनं वरम्॥ २७॥

(सुभाषित)

धर्म के लिए जिसको धन की इच्छा है, उसको धन की लालसा न होना अच्छा है क्योंकि कीचड़ छूकर धोने से उसका दूर से स्पर्श न करना ही अच्छा है।

He, who wishes wealth for religion (righteousness), should not aspire for riches. It is for his welfare. It is better to remain away and not to stick (touch) the slush than to wash after its touch.

सुखमापतितं सेव्यं दुःखमापतितं तथा।
चक्रवत् परिवर्तन्ते दुःखानि च सुखानि च॥ २८॥

(सुभाषित)

आए हुए सुख तथा दुःख को भोगना चाहिए, क्योंकि सुख और दुःख पहिये की तरह घूमते हैं (अर्थात् सुख के बाद दुःख और दुःख के बाद सुख आते जाते हैं)।

One should experience the arrived happiness and trouble both. Happiness and trouble both the things revolve in one's life like a wheel.

त्यजेत् क्षुधार्त्ता महिला स्वपुत्रं,
खादेत् क्षुधार्ता भुजगी स्वमण्डम्।
बुभुक्षितः किं न करोति पापं,
क्षीणा नरा निष्करुणा भवन्ति॥ २९॥

(सुभाषित)

भूखी स्त्री अपने पुत्र को छोड़ देती है, भूखी नागिन अपने अंडे को खा लेती है। भूखा क्या-क्या पाप नहीं करता है? क्योंकि क्षीण मनुष्य करुणाहीन होते हैं।

The hungry woman abondons her child, hungry female serpent eats away her own egg. Thus what can not be done by a hungry. Rightly it is said that feeble persons become cruel.

आरभन्तेऽल्पमेवाज्ञाः कामं व्यग्रा भवन्ति च।
महारम्भाः कृतधियस्तिष्ठन्ति च निराकुलाः॥ ३०॥

(नीति)

बुद्धिहीन छोटे ही काम का आरम्भ करते हैं और अत्यन्त व्याकुल हो जाते हैं। बुद्धिमान् बड़े-बड़े काम करते हैं और कभी विकल नहीं होते हैं।

Ignorant people commence a petty task and become very much perplexed, but wise persons start major works and become never confused.

न साहसैकान्तरसानुवर्तिना,
न चाप्युपायोपहतान्तरात्मना।
विभूतयः शक्यमवाप्तुमूर्जिता,
नये च शौर्ये च वसन्ति संपदः॥ ३१॥

(नीति०)

(बुराई भलाई को बिना विचार कर) केवल साहस करने वाला और उपाय से उपहत (उपेक्षित) चित्तवाला अधिक ऐश्वर्य को नहीं पा सकता है क्योंकि जहां पर नीति और शूरता रहती है वहां ही संपत्तियाँ रहती हैं।

without considering the defects and advantages and without proper means one can not achieve the wealth on the basis of courage only. Where there are virtue and bravery riches remain there.

चक्षुःपूतं न्यसेत्पादं वस्त्रपूतं जलं पिबेत्।
सत्यपूतां वदेद् वाणीं मनः पूतं समाचरेत्॥ ३२॥

(मनुस्मृति)

आंख से भलीभाँति देखकर पैर रखना चाहिए (चलना चाहिए) कपड़े से छानकर जल पीना चाहिए, सच्चाई से पूर्ण वाणी बोलना चाहिए

और मन जिसे पवित्र मानता हो (अन्तरात्मा द्वारा अनुमोदित) वैसा आचरण करना चाहिए।

One should place his step after looking well with eyes, should drink the water duly filtered by cloth, should utter the speech full of truth, and should perform as supported and desired by self (intention)

चलं चित्तं चलं वित्तं चले जीवितयौवने।
चलाचलमिदं सर्वं कीर्त्तिर्यस्य स जीवति॥ ३३॥

(नीति०)

मन चंचल है, धन चंचल (अस्थायी) है, जीवन और यौवन भी अस्थायी है। यह सम्पूर्ण जगत् अत्यन्त चलाचल (अस्थिर) है। अतः जिसका यश है वही जीवित रहता है।

The intellect is inconstant wealth is inconstant (perishable), life and youth also are inconstant. The whole world is inconstant. The person, who has fame, remains alive in the world.

चलत्येकेन पादेन तिष्ठत्येकेन बुद्धिमान्।
नासमीक्ष्य परं स्थानं पूर्वमायतनं त्यजेत्॥ ३४॥

(पंचतन्त्र)

बुद्धिमान् व्यक्ति एक पैर से चलता है और दूसरे पैर से स्थिर रहता है क्योंकि आगे के स्थान को देखे बिना पूर्वस्थान नहीं छोड़ना चाहिए।

The wise persons walk with one leg and stay with other step. It is their moral behaviour not to leave the existing (first) place before ensuring the certainty of next place.

कुसुमस्तवकस्येव द्वे वृत्ती तु मनस्विनः।
सर्वेषां मूर्ध्नि वा तिष्ठेद्विशीर्येत वनेऽथवा॥ ३५॥

(सुभाषित)

पुष्प के गुच्छे के समान उदार मनुष्य की दो तरह की प्रकृति होती है कि या तो सबके शिर पर (आदरणीय रहे या वन में कुम्हला जाय।

It is the nature of flowers to remain on the heads of great persons/gods and get them adorned or to wither in the forest (garden) near their plant.

Similarly there are two qualities in the nature (temperament) of wise persons either to remain prominent (respectable) among all the persons of society or to remain limited to himself with an unknown expiry.

मनस्वी म्रियते कामं कार्पण्यं न तु गच्छति।
अपि निर्वाणमायाति नानलो याति शीतताम्॥ ३६॥

(सुभाषित०)

उदार पुरुष मर जाय पर कृपणता नहीं करता है। अपनी लाचारी नहीं बताता है। जैसे अग्नि भले बुझ जाय पर ठंडी नहीं होती है।

As the fire gets extinguished but becomes not cold as per its nature. Similarly the generous people may accept his death but can not be miser.

मात्रा स्वस्त्रा दुहित्रा वा नो विविक्तासनो भवेत्।
बलवानिन्द्रियग्रामो विद्वांसमपि कर्षति॥ ३७॥

(नीति०)

पुरुष को माता, बहन और बेटी इनके पास भी एकांत में नहीं बैठना चाहिए, क्योंकि इन्द्रियां बड़ी बलवान् हैं। ये जितेन्द्रिय को भी वश में कर लेती हैं।

The senses are very much powerful and can overpower also the persons having senses subdued. Therefore one must not stay, in solitary, with mother sister and daughter also.

दशकूपसमा वापी दशवापीसमो द्रुमः।
दशह्रदसमः पुत्रो दशपुत्रसमो द्रुमः॥ ३८॥

(मत्स्यपुराण)

दस कुएं के समान एक वापी (पानी का विस्तृत आयताकार जलाशय) खुदवाने का महत्त्व होता है और दस वापी के समान एक ह्रद (गहरा तालाब) खुदवाने का महत्त्व होता है, दस ह्रदों के समान एक सुपुत्र को जन्म देने का महत्त्व होता है और दस सुपुत्रों के समान एक

वृक्ष लगाने का महत्त्व होता है।

The importance of digging a small tank of water is equal to ten wells. One large pond is supposed to be equal of ten small tanks. One worthy son is supposed to be equal of digging ten large ponds, plantation of one tree is equal to give birth to ten worthy sons.

ज्ञाने कर्मण्यपगते लोके निष्क्रियतां गते।
कीटमूषिकसर्पाश्च धर्षयिष्यन्ति मानुषान्॥ ३९॥ (पुराण)

संसार में ज्ञान और कर्म के समाप्त हो जाने पर लोगों के निष्क्रिय हो जाने पर (मानव के अकर्मण्य हो जाने पर) कीड़े, चूहे, साँप आदि मनुष्यों को बलपूर्वक दबाकर खा जायेंगे और उनका अस्तित्व समाप्त हो जायेगा।

On owning the idleness by people in this world, after end of knowledge and performance the worms, rats and snakes will eat the humanbeings overpowering them. Thus the existence of humanbeing may be in danger. It is a must for human being to be active.

उदीरितोऽर्थः पशुनापि गृह्यते
हयाश्च नागाश्च वहन्ति देशिताः।
अनुक्तमप्यूहति पण्डितो जनः
परेङ्गितज्ञानफला हि बुद्धयः॥ ४०॥

(सुभाषित)

बताये हुए अभिप्राय को पशु भी समझ लेता है और हांके हुए घोड़े और हाथी भी बोझा ढोते हैं। पंडित कहे बिना ही मन की बात तर्क से जान लेता है, क्योंकि पराये चित्त का भेद जान लेना ही बुद्धियों का फल है।

Cattles are also able to understand the conveyed intention similarly goaded horses and elephants carry away the burden of load. The wisemen understand the unexpressed intention of others. This proves that the effect of intelligence is to understand the hints of others hearts.

लाङ्गूलचालनमधश्चरणावपातं,
भूमौ निपत्य वदनोदरदर्शनं च।
श्वा पिण्डदस्य कुरुते गजपुंगवस्तु,
धीरं विलोकयति चादुशतैश्च भुंक्ते॥ ४१॥

(नीतिशास्त्र)

(स्वामी और सेवक का भेद) कुत्ता टुकड़ा देने वाले के सामने पूंछ को हिलाता है, उसके चरणों में गिरता है, धरती पर लेटकर अपना मुख और पेट दिखाया करता है, परन्तु श्रेष्ठ हाथी तो स्वामी को धीरज से देखता है और सौ सौ उपाय करने से (अनेक बार मनाने पर) खाता है।

The dog moves his tail, falls on foots, shows his mouth and stomach lying on the ground before his master, who gives him a piece of bread, On the other hand the great elephant looks his master patiently and takes his food on hundreds of persuasion.

बालो वा यदि वा वृद्धो युवा वा गृहमागतः।
तस्य पूजा विधातव्या सर्वस्याभ्यागतो गुरुः॥ ४२॥

(नीतिशास्त्र)

बालक, बूढ़ा तथा युवा इनमें से घर पर कोई आया हो तो उसका आदर-सत्कार करना चाहिए, क्योंकि अभ्यागत सब (चारों वर्गों) का पूज्य है।

A child, aged or young person, arrived to one's house, should be welcomed and respected. A guest id supposed to be regarded by all.

परोपदेशे पाण्डित्यं सर्वेषां सुकरं नृणाम्।
धर्मे स्वीयमनुष्ठानं कस्यचित्तु महात्मनः॥ ४३॥

(नीति)

दूसरों को उपदेश करना सब मनुष्यों को सहज है परन्तु अपने धर्म पर चलना किसी बिरले ही महात्मा से होता है।

It is easy for all to council (precept) other but it is hard to comply with own duty only. Some secluded person obeys the path of righteousness.

नारिकेलसमाकारा दृश्यन्ते हि सुहृज्जनाः।
अन्ये बदरिकाकारा बहिरेव मनोहराः॥ ४४॥

(नीति)

सज्जन पुरुष नारियल के समान बाहर से दीखते हैं अर्थात् ऊपर से सख्त और भीतर से मीठे और दुर्जन बेर फल के आकार के समान बाहर ही से मनोहर होते हैं।

Novel persons seem hard externally and tender enternally like a coconut, wicked persons seem beautiful externally and hard enternally like a plum.

त्यजेदेकं कुलस्यार्थे ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत्।
ग्रामं जनपदस्यार्थे आत्मार्थे पृथिवीं त्यजेत्॥ ४५॥

(महाभारत)

कुल (वंश) के हित के लिए यदि कुल के एक व्यक्ति की उपेक्षा करनी पड़े तो उसे उपेक्षित कर दिया जाय, पूरे गाँव के हित के लिए यदि एक कुल को छोड़ना पड़े तो उसे छोड़ दिया जाय एक जनपद की भलाई के लिए यदि गाँव को छोड़ना पड़े तो उसे छोड़ देना चाहिए। यदि आत्मा (स्वयं) के हित के लिए अपरिहार्य और आवश्यक हो तो संपूर्ण पृथ्वी की उपेक्षा कर देनी चाहिए।

(In the interest of mass) one person should be ignored for tribe, one tribe should be ignored for a village, one village for a more populated place (district) and if required one should leave all these for the welfare of self.

एकः स्वादु न भुञ्जीत एकश्चार्थान्न चिन्तयेत्।
एको न गच्छेदध्वानं नैकः सुप्तेषु जागृयात्॥ ४६॥

(महाभारत)

स्वादिष्ट वस्तु अकेले नहीं खाना चाहिए। अर्थ (धन) के लाभ का चिन्तन केवल एक व्यक्ति के लिए नहीं करना चाहिए। एकान्त मार्ग

में अकेले नहीं जाना चाहिए सोये हुए लोगों के बीच अकेले नहीं जागना चाहिए।

One should not eat tasteful eatable alone. One should not consider (think) alone the matters related to riches, one should not walk alone on the lonely place, one should not awake along among all other slept persons.

माता गुरुतरा भूमेः खात् पितोच्चतरस्तथा।
मनः शीघ्रतरं वाताच्चिन्ता बहुतरी तृणात्॥ ४७॥

(महाभारत)

भूमि से भी महान् और गौरवपूर्ण स्थान माता का है, आकाश से भी विशाल और ऊँचा स्थान पिता का है। वायु (हवा) से भी शीघ्र गति चलने वाला मन है और तृण (घास) से भी अधिक मात्रा में अनायास उपजने वाली (मनुष्यों के मन में) चिन्ता होती है।

Mother is supposed to be great than earth, Father is supposed to be enormous than the sky, the intellect is quicker than air, and anxity is abundant than grass.

जनिता चोपनेता च यश्च विद्यां प्रयच्छति।
अन्नदाता भयत्राता पञ्चैते पितरः स्मृताः॥ ४८॥

(सुभाषित)

जन्म देने वाला उपनयन (यज्ञोपवीत धारण) करने वाला (ज्ञान) प्रदान करने वाला, अन्न देने वाला भय से रक्षा करने वाला ये पाँचो पिता के रूप में माने जाते हैं।

The father, Guru, who causes to put on the secred thread. Educator (teacher), patron, protector from a fright all these five are supposed to be like father.

जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः।
स हेतुः सर्वविद्यानां धर्मस्य च धनस्य च॥ ४९॥

(सुभाषित)

जैसे जल की एक-एक बूंद गिरने से धीरे-धीरे घड़ा भर जाता है वही कारण सब प्रकार की विद्याओं का, धन का और धर्म का भी है।

As an earthern jar is filled up with the drops of water gradually, similarly learnings righteousness and wealths are acquired gradually.

जले तैलं खले गुह्यं दानं मनागपि।
प्राज्ञे शास्त्रं स्वयं याति विस्तारं वस्तुशक्तितः॥ ५०॥

(सुभाषित)

जल में तेल, दुष्ट में गुप्त बात, सुपात्र में दिया गया दान, बुद्धिमान् में शास्त्र का ज्ञान यदि अल्प मात्रा में भी दिया जाय तो इन सबकी मात्रा का पूर्ण विस्तार हो जाता है।

A little quantity of oil dropped in water, secret (news) conveyed to a wicked, charity given to able (needy) person, knowledge of scriptures to wise person all these (things put in less quantity also) increase in a large quantity at their respective place/ persons.

जानन्ति पशवो गन्धात् वेदाज्जानन्ति पण्डिताः।
चाराज्जानन्ति राजानः चक्षुर्भ्यामितरे जनाः॥ ५१॥

(सुभाषित)

पशु गन्ध से किसी वस्तु को जान जाते हैं पण्डितजन (बुद्धिमान्) शास्त्रों (वेद) के ज्ञान से किसी विषय को जान जाते हैं राजा अपने गुप्तचरों से किसी बात का ज्ञान प्राप्त करते हैं, और इनके अतिरिक्त अन्य लोग आँखों से देखकर किसी बात को जान पाते हैं।

Cattles know anything by smell, wisemen are able to know by their perception, kings know by their spies, and other persons are able to know by their eyes.

भीतेभ्यश्चाभयं देयं व्याधितेभ्यस्तथौषधम्।
देया विद्यार्थिनां विद्या, देयमन्नं क्षुधातुरे॥ ५२॥

(महाभारत)

भयभीत को अभय देना चाहिए। रोगी को औषधि विद्यार्थियों को विद्या और भूखे व्यक्ति को अन्न देना चाहिए।

One should protect the afraid person from fear, give the medicine to a patient, impart education to student and should feed to hungry man.

वृत्तं यत्नेन संरक्षेद् वित्तमायाति याति च।
अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्ततस्तु हतोहतः॥ ५३॥

(महाभारत)

अपने वृत्त (शील-चरित्र) की यत्नपूर्वक रक्षा करनी चाहिए, धन तो आता और जाता है। यदि धन नष्ट हो जाता है तो कमी आती है किन्तु यदि चरित्र नष्ट हो जाता है तो मृत्यु के समान कष्ट भोगना पड़ता है।

One should try to protect his character with great effort riches come and and go naturally. If wealth is lost then something is not and only deficiency exists but if character is lost then it is troublesome like death.

कलिः शयानो भवति।
सञ्जिहानस्तु द्वापरः॥
उत्तिष्ठन् त्रेता भवति।
कृतं सम्पद्यते चरन्
चरैवेति चरैवेति
चरन् वै मधु विन्दति
चरन् स्वादुमुदुम्बरम्।
सूर्यस्य पश्य श्रेमाणं
यो न तन्द्रयते चरंश्चरैवेति॥ ५४॥

(ऐतेरेय ब्राह्मण)

कलियुग मनुष्य की सुप्तावस्था है, जब वह जँभाई लेता है तब द्वापर की स्थिति में आता है, उठकर खड़े होने की स्थिति में उसका त्रेता युग होता है और कर्मरत होने पर वह सत्ययुग की अवस्था में आ जाता है चलते हुए ही वह स्वादिष्ट फल प्राप्त करता है। सूर्य के श्रम को देखो जो चलते हुए कभी आलस्य नहीं करता। (अतः चलते रहो चलते रहो-चलते रहो, जीवन का यह लक्ष्य मंत्र होना चाहिए)।

The human being has four ages in his life. When he sleeps it is Kaliyuga, when he gapes it is his Dwapara Yuga when he is active then he come in the status of Satayuga. While moving he gains tasteful fruit. Look at the labour of sun, who while moving never gets fatigued. Hence go on walking and take this as a secret advice of life.

किं कुलेन विशालेन शीलमेवात्र कारणम्।
कृमयः किं न जायन्ते कुसुमेषु सुगन्धिषु॥ ५५॥

(सुभाषित)

किसी व्यक्ति की विशाल कुल में जन्म लेने से क्या प्रयोजन? विशाल कुल के साथ भी शील (सच्चरित्रता) का ही कारण होता है। यदि सच्चरित्रता नहीं है तो विशाल कुल भी दुश्चरित्रता के कारण दूषित हो जाता है। जैसे- सुगंधित पुष्पों में क्या कीड़े नहीं होते हैं?

Someone's birth in a high family is not a reason for greatness. Modesty and good character is the reason for the greatness of a family or tribe. It is observed that there are also worms in fragrant flowers. Similarly the high families are also, sometimes, defiled due to misconduct.

साम्नैव यत्र सिद्धिर्न तत्र बुधेन विनियोज्यः।
पित्तं यदि शर्करया शाम्यति कोऽर्थः परोलेन॥ ५६॥

(सुभाषित)

जहाँ शान्ति से ही कार्य में सफलता मिल जाय वहाँ बुद्धिमान व्यक्ति को दण्ड विधि का प्रयोग नहीं करना चाहिए। यदि पित्त शर्करा (चीनी) से शान्त हो जाता है तो परवल (ककड़ी की जाति का फल) से क्या प्रयोजन।

Where the success is acquired by peaceful means then wisemen should not apply the method of punishment. If the bile becomes mild by sugar, then what is the purpose of cucumber.

न दातुं नोपभोक्तुं च शक्नोति कृपणः श्रियम्।
किं तु स्पृशति हस्तेन नपुंसक इव स्त्रियम्॥ ५७॥

(सुभाषितरत्नभाण्डागार)

कृपण (कंजूस) व्यक्ति अपने धन का न तो उपभोग कर सकता है और न दान देता है। किन्तु हाथ से छूता है और सन्तोष कर लेता है। जैसे नपुंसक व्यक्ति अपनी (सुन्दरी) स्त्री को केवल स्पर्श, दर्शन से ही सन्तोष कर लेता है और उसका उपभोग नहीं कर सकता।

A miser can neither enjoy nor donate his wealth himself, but he touches it with his hands as an impotent person touches only his wife and is unable to enjoy her.

यदि सन्ति गुणाः पुंसां विकसन्त्येव ते स्वयम्।
नहि कस्तूरिकामोदः शपथेन विभाव्यते॥ ५८॥

(सुभाषित)

यदि मनुष्यों में गुण हैं तो वे स्वयम् लोगों में विकसित ही होते हैं। जैसे कस्तूरी की सुगंध स्वयं प्रकट होती है न कि कोई शपथ खाकर उसका आभास कराता है।

If a person has qualities, these will be blown themselves. The fragrance of musk is not experienced by an oath.

राज्ञि धर्मिणि धर्मिष्ठाः पापे पापाः समे समाः।
लोकास्तमनुवर्तन्ते यथा राजा तथा प्रजाः॥ ५९॥

(सुभाषित)

राजा के धर्मात्मा होने पर प्रजा भी (नीति) धर्म का आचरण करती है और राजा के पापाचारी होने पर जनता भी पाप में प्रवृत्त होती है। राजा के समस्थिति होने पर प्रजा भी सम आचरण वाली होती है।

अतः जैसा राजा आचरण करता है वैसा ही नागरिक भी उसका अनुकरण करते हैं। जैसा राजा वैसी प्रजा।

If the king (administrator) is religious (follower of right path) the subjects are also religious. If the king is a sinner (follower of the path of dishonesty) the subjects (public) are also sinner. Public is the follower of administrator. It is reghtly said as there is king same is the subject.

प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः।
तस्मात्तदेव वक्तव्यं वचने का दरिद्रता॥ ६०॥

(सुभाषित)

प्रिय वचन बोलने से सभी प्राणी प्रसन्न होते हैं। अतः प्रिय वचन ही बोलने चाहिए। प्रिय वचन बोलने में दरिद्रता (कमी) क्यों व्यक्त की जाय।

All the humanbeings become glad on hearing the sweet words. Therefore one should utter the sweet words, why to show poorness in speaking such words.

यान्ति न्यायप्रवृत्तस्य तिर्यञ्चोऽपि सहायताम्।
अपन्थानं तु गच्छन्तं सोदरोऽपि विमुञ्चति॥ ६१॥

(सुभाषित)

न्याय मार्ग पर चलने वाले के पशुपक्षी भी सहायक हो जाते हैं। अनीति के मार्ग पर चलने वाले का साथ सहोदर भाई भी छोड़ देता है।

Cattles and birds also become their helper who follow the path of justice. Those who follow the path of unjustice are ignored and avoided by real brother also.

धनधान्यप्रयोगेषु विद्यासंग्रहणेषु च।
आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत्॥ ६२॥

धनधान्य संचय करने में, विद्याग्रहण में, भोजन में और लोक व्यवहार में जो संकोच नहीं करता, वह सुखी रहता है।

The person who does not hesitate in acquisiton of wealth, knowledge, meals and behaviour (dealing, remains always happy.

विद्वत्त्वं च नृपत्त्वं च नैव तुल्यं कदाचन।
स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते॥ ६३॥

(सुभाषित)

विद्वत्ता और नृपता में कभी बराबरी नहीं की जा सकती है। राजा अपने शासन क्षेत्र (राज्य) में सम्मानित होता है किन्तु विद्वान् सर्वत्र सम्मानित होता है।

The wise (Scholar) and king can never be compared together. The king is honoured in his kingdom (territory) and the scholar is honoured everywhere.

अस्ति यद्यपि सर्वत्र नीरं नीरजमण्डितम्।
रमते न मरालस्य मानसं, मानसं विना॥ ६४॥ (सुभाषित)

यद्यपि कमलों से सुशोभित जल अनेक जलाशयों में रहता है किन्तु हंस का मन, मानसरोवर के अलावा किसी सरोवर में नही लगता।

Though the water decorated with lotus, is available in many lakes, but a swan enjoys in Manas lake only.

अकीर्तिर्निन्द्यते देवैः, कीर्तिर्लोकेषु पूज्यते।
कीर्त्यर्थं तु समारम्भः, सर्वेषां सुमहात्मनाम्॥ ६५॥
(वा.रामा.)

विद्वान् लोग अपयश को बुरा मानते हैं। लोग यशस्वी की पूजा करते हैं और सभी महान् लोग अपनी कीर्ति के लिए ही उत्तम-से-उत्तम कार्य करते हैं।

Even the gods deplore one's defamation; It is fame alone that is adored in the world. Hence the actions of all virtuous people are aimed at getting fame.

अकृत्वा पौरुषं या श्रीः, किं तयाऽपि सुभोग्यया।
जरद्गवः समश्नाति, दैवादुपगतं तृणम्॥ ६६॥
(पञ्चतंत्र)

बिना पुरुषार्थ किए पाई हुई सम्पत्ति चाहे सब प्रकार के योग्य पदार्थ देती हो, तो भी उससे आत्म-तृप्ति नहीं हो सकती। यों तो बूढ़ा बैल भी भाग्य से प्राप्त तिनके चर लेता है। भाव यह है कि पुरुषार्थ से कमाए धन से प्राप्त जो सुख है, वह बिना परिश्रम किए प्राप्त धन से नहीं हो सकता।

What is the use of enjoying such riches as has not been earned by hard work. Even an old bull by luck can get sufficient grass to eat.

अग्निं स्तोकमिवात्मानं संधुक्षयति यो नरः।
स वर्धमानं ग्रसते, महान्तमपि संचयम्॥ ६७॥
(महाभारत)

जैसे थोड़ी सी आग तीव्र प्रदीप्त हो जाने पर बड़े ढेर को भी जला देती है, उसी प्रकार जो व्यक्ति छोटा होता हुआ भी बढ़ने की चेष्टा करता रहता है, वह बढ़कर महान् ऐश्वर्य को भी पा लेता है।

Just as a small spark bursting into flames can burn down mounds of goods, similarly a small man attempting to go up can one-day reach the greatest of the heights.

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्,
आ राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायताम्,
दोग्ध्री धेनुर्वोढाऽनड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा
जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्यवीरोजायताम्।
निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु,
फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्ताम्
योगक्षेमो नः कल्पताम्॥ 68॥

(यजुर्वेद)

हे परमेश्वर! हमारे राष्ट्र में ज्ञानी और तेजस्वी ब्राह्मण हों, युद्ध में निपुण शूरवीर क्षत्रिय भी हमारे राष्ट्र में हों, दूध देने वाली गौएँ, भार ढोने में समर्थ बैल और तीव्र गति वाले अश्वादिक यात्रा-साधन हों। यहाँ की नारियाँ गृहकार्य में कुशल हों और यहाँ के युवक सभ्य, विजयशील तथा पराक्रमी हों। प्रभो! हमारे देश में आवश्यकता के अनुसार बादल बरसें और अन्न तथा फलफूल पर्याप्त हों तथा देश में सुख-साधनों के भण्डार पूर्ण हों और हम उन्हें बढ़ाने का प्रयास करें।

O God! May our country be blessed with knowledgeable Brahmanas, and brave Kshatriyas who are clever in warfare, milky cows, and strong bulls to carry heavy loads, and means of rapid transport like speedy horses Let our women folk be clever in household work and the youth civilized, brave and victory-prone! O God! Let there be rains according to our need and let our godowns be full with luxury goods, food grains and fruits

etc., everything necessary for comfortable life Let us make efforts to increase all these benefits and comforts!

कटु क्वणन्तो मलदायकाः खलाः,
तुदन्त्यलं बन्धनशृंखला इव।
मनस्तु साधुध्वनिभिः पदे-पदे,
हरन्ति सन्तो मणिनूपुरा इव॥ ६९॥ (कादम्बरी)

निन्दा करने वाले दुष्ट लोग तो कटु वचन बोलते हुए पाँवों में पड़ी बेड़ियों के समान पीड़ा पहुँचाते हैं, परन्तु सज्जन लोग स्थान-स्थान पर उत्तम और मधुर वचनों द्वारा मन को ऐसे प्रसन्न कर देते हैं, जैसे रत्नजड़ित नूपुर पैरों के साथ ध्वनि करते हुए हृदय को खींच लेते हैं।

The wicked with their bitter speech in backbiting cause as much pain as the clamping of iron-chains on the feet do, but the gentle at various place with their quality, sweet words please the heart so much as the gem-studded jingle of ornaments in the ladies feet attract one's attention.

काचो मणिर्मणिः काचो, येषां तेऽन्ये हि देहिनः।
सन्ति ते सुधियो येषां, काचः काचो मणिर्मणि॥ ७०॥

(भल्लट-शतकं)

जो लोग काँच को मणि और मणि को काँच समझ बैठते हैं, उन-सा विवेकहीन भला कौन हो सकता है? विवेकशील व्यक्ति तो काँच को काँच ही बताते हैं और मणि को मणि ही कहते हैं। भाव यह है कि गुणों के परीक्षक विरले लोग ही होते हैं।

Those who mistake a piece of glass for a men and a gem for a piece of glass, who would be more stupid than them A discriminating person would know the difference between both of them.

कात्यायनी चैव मैत्रेयी गार्गी वाचक्नवी तथा।
एवमाद्या विदुर्ब्रह्म, तस्मात्स्त्री ब्रह्मविद्भवेत्॥ ७१॥

(विष्णुरहस्य)

कात्यायनी, मैत्रेयी, मार्गी-वाचक्नवी आदि नारियों ने ब्रह्म का ज्ञान प्राप्त किया था। अतः नारियाँ भी ब्रह्मज्ञान तथा वेद-ज्ञान की अधिकारिणी हैं।

Katyayani, Maitraiyi, Gargi and Vachaknavi all women acquired the knowledge of Brahma. So women too have a right to get knowledge of Vedas.

किं तया क्रियते धेन्वा या न दोग्ध्री न गर्भिणी।
कोऽर्थः पुत्रेण जातेन, यो न विद्वान्न भक्तिमान्॥ ७२॥

(चाण.नीति)

उस गौ का क्या लाभ है, जो न दूध देती है और न गर्भ धारण कर सकती है? इसी प्रकार उस पुत्र का क्या लाभ है, जो न तो विद्वान् है और न भक्तिमान् है। अर्थात् उसके जन्म से कोई लाभ नहीं है।

What is the use of a cow which neither gives milk, nor can it conceive. Just like what is the use of a son who is neither a scholar nor does he bear any devotion?

तन्तुं तन्वन् रजसो भानुमन्विहि,
ज्योतिष्मतः पथो रक्ष धिया कृतान्।
अनुल्वणां वयत जोगुवामपो,
मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्॥ ७३॥ (ऋग्वेद)

हे प्रिय शिष्यो! जैसे सूर्य प्रकाश द्वारा अन्धकार को नष्ट कर देता है, ऐसे ही तुम ज्ञान के तत्त्वों का विस्तार करते हुए अपने अज्ञान को नष्ट कर दो। अपनी बुद्धि और कर्म द्वारा तुम उन ज्ञानमय परम्पराओं की रक्षा करो, जिन्हें पूर्वज स्थापित कर गए हैं। ईश्वरभक्तों के कार्यों का तानाबाना सरल रूप से बुनते रहो। तुम स्वयं सच्चे मानव बनो और लोगों में मानवता का प्रचार कर उन्हें सन्मार्ग दिखाओ।

O my beloved students! Destroy ignorance in your life like the sun that with its bright rays destroys darkness. Through your actions and wisdom protect and

preserve those intellectual traditions which your ancestors established. Continue weaving that wrap and woof of the pious. Be good human beings yourself and pave the way for its propagation for humanity to follow.

तृणानां शालयः श्रेष्ठाः, पादपानां च चन्दनाः।
उपलानां च रत्नानि, भवानां मानुषो भवः॥ ७४॥

(पद्मपुराण)

तिनकों में से धान सर्वश्रेष्ठ होते हैं, पेड़ों में चन्दन के पेड़ सर्वोत्तम माने जाते हैं, पाषाणों में रत्न और प्राणियों में मानव-देह सब से श्रेष्ठ माने गये हैं।

Rice-straws is superior to other straws, Sandal tree is the best among all trees, among rocks gems are regarded the best and among the living beings humans are considered the best.

त्रीण्याहुरतिदानानि, गावः, पृथ्वी, सरस्वती।
नरकादुद्धरन्त्येते, विद्यादानं ततोऽधिकम्॥ ७५॥

(बृहन्नारदीयपुराण)

तीन ही दान सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण हैं- गौओं का, भूमि का और विद्या का। ये सभी दान नरक से मनुष्य का उद्धार करते हैं, परन्तु इनमें भी विद्या का दान सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

Only three charities have been regarded as the most important: the gift of cows, giving away of land and the gift of education. All these charities are capable of doing good to the donor but of these the charity of education is the best.

न बान्धवाः न च वित्तं न कौल्यम्,
न च श्रुतं न मन्त्रा न वीर्यम्।
दुःखात् त्रातुं सर्व एवोत्सहन्ते,
परत्र शीलेन तु यान्ति शान्तिम्॥ ७६॥

(महाभा./शान्ति)

संसार में रिश्तेदार, धन, कुलीनता, ज्ञान, मन्त्र और शक्ति ये सब मिलकर भी मनुष्य को संकट से नहीं बचा सकते, परन्तु शील (उत्तम स्वभाव) ही एक ऐसा तत्त्व है जो सच्ची शान्ति दे सकता है।

Neither relatives, money, pedigree, knowledge, mantra nor power can save one from crisis but it is only good character that can save him.

न ब्रह्मचार्यधीयीत, कल्याणी गौर्न दुह्यते।
न कन्योद्वहनं गच्छेद्, यदि दण्डो न पालयेत्॥ ७७॥

(महाभा./शांति.)

यदि दण्ड का भय न हो, तो ब्रह्मचारी शिक्षा प्राप्त नहीं करे, दुधारू गाय दूध नहीं दे और कन्या भी विवाह के बन्धन में न बँधे। ये सब कार्य दण्ड के भय से ही होते हैं।

If there were no fear of punishment, students will stop reading, cows shun giving milk and the daughters refuse marriages. All of them perform their appointed tasks only due to the fear of punishment.

—o—

सूक्ति-अनुक्रमणिका

ज्ञान खण्डः

क्र.सं.		सू.सं.	क्र.सं.		सू.सं.
१.	अनेकसंशयोच्छेदि	४	२२.	अनवाप्य च शोकेन	१३१
२.	अन्तः सार	१८	२३.	असम्यगुपयुक्तं	१४६
३.	अज्ञः सूख	१९	२४.	अनारंभो मनुष्याणां	१५२
४.	अपि मानुष्यकं	२३	२५.	अद्भिर्गात्राणि	१५३
५.	अजरामरवत्	२७	२६.	अधीयानः पण्डितं	१५४
६.	अज्येष्ठासो	४१	२७.	अभिप्रस्थाता	१५५
७.	अभिवादन	५३	२८.	अवशेन्द्रियचित्तानां	१५६
८.	असतो मा	५४	२९.	अविद्याऽभ्यास	१५७
९.	अविद्यायाम्	५६	३०.	अशेष विद्या	१५८
१०.	अधर्मोपार्जितैः	६२	३१.	अहश्च कृष्ण	१५९
११.	अभयं मित्रादमयं	७५	३२.	अहिंसा सत्यवचनं	१६०
१२.	अदीनाः स्याम	७८	३३.	आ भारती	१०६
१३.	अनुव्रतः पितुः	८४	३४.	आनो भद्राः	११८
१४.	अहिंसा सत्य	८९	३५.	आकूतिं देवी	१६१
१५.	अद्रोहः सर्वभूतेषु	९१	३६.	आचार्य उपनयमानो	१६२
१६.	अयं निजः	९७	३७.	आ धूर्ष्वस्मै	१६३
१७.	अहो दुर्जनसंसर्गः	१००	३८.	आपत्कालोपयुक्तासु	१६४
१८.	अक्रोधेन जयेत्	१०१	३९.	आपश्चिदस्मै	१६५
१९.	अनुबंधं च संप्रेक्ष्य	१०८	४०.	आयुर्हिताहितं	१६६
२०.	अग्निदाहादपि	११३	४१.	आहारशुद्धौ	१६७
२१.	अनवसरे	११४	४२.	आहैव स	१६८

क्र.सं.		सू.सं.	क्र.सं.		सू.सं.
४३.	इन्द्रं मित्रं	७७	६९.	तयोर्नित्यं प्रियं	४३
४४.	ईशावास्यमिदं	३५	७०.	तस्मात् पुत्रमनुशिष्टं	११२
४५.	उद्वयं तमसस्	२५	७१.	दुःखस्य मूलमज्ञानं	७
४६.	उद्यन्तु शतमादित्या	२९	७२.	दातारः संविभक्तार	९२
४७.	उत्तिष्ठ जाग्रत	३८	७३.	दुर्जनेन समंसख्यं	९९
४८.	उपकारिषुयः साधुः	१०५	७४.	दण्डः शास्ति	१३६
४९.	उद्यमेनैवसिध्यन्ति	१२४	७५.	नान्यः पन्थाः	३१
५०.	उद्योगिनं पुरुषसिंह	१२९	७६.	न तथैतानि	५२
५१.	उपाध्यायात् दशाचार्यः	१३५	७७.	न वै श्रुतमवि	६०
५२.	उदेति सविता ताम्रः	१४०	७८.	नाप्राप्यमभि	६६
५३.	उदस्य शुष्माद्	१६९	७९.	न च फलति	१२८
५४.	एकस्य कर्म	८४	८०.	न देवा दण्डमादाय	१३४
५५.	किं कुलेन	१३	८१.	नास्ति लोभसमो	१४४
५६.	कुर्वन्नेवेह	५५	८२.	पाठकः पाठकश्चैव	१६
५७.	कामक्रोधौ वशे	९०	८३.	पुस्तकस्था तु या	२०
५८.	कन्दुको भित्तिनिक्षिप्तः	९५	८४.	पूजयेदशनं नित्यं	४५
५९.	किं दातुरखिलै	११६	८५.	पराञ्चि खानि	६९
६०.	गतेऽपि वयसि	२५	८६.	पश्यन्तो अन्धं	७३
६१.	गोध्ने चैव	९६	८७.	पश्येम शरदः	८०
६२.	गुरुणा वैरनिर्बन्धो	१२१	८८.	प्रजायतिर्जनयति	१०३
६३.	चोदितो गुरुणा	४४	८९.	प्रत्यहं प्रत्यवे	१३३
६४.	चिन्तनीया हि	१२३	९०.	प्रारभ्यते न खलु	१०९
६५.	छिन्नेऽपि	१३०	९१.	परोपकृतिशून्यस्य	११७
६६.	जिह्वाया अग्रे	७४	९२.	पश्य कर्मवशात् प्राप्तं	१२५
६७.	जायमानोवै	११०	९३.	बुद्धिश्चहीयते	१११
६८.	जन्मना जायते	१२६	९४.	भद्रं कर्णेभिः	३६

क्र.सं.		सू.सं.	क्र.सं.		सू.सं.
९५.	भद्रं नो	७६	१२१.	वाग् वै समुद्रः	१४७
९६.	मातेव रक्षति	९	१२२.	वाचमिरतीता	१४८
९७.	माता शत्रुः	९२	१२३.	विद्या ददाति	१४९
९८.	महाजनस्य संसर्गः	६३	१२४.	विद्या तु	१५०
९९.	मनसि वचसि	६७	१२५.	विषादप्यमृतं	२
१००.	मधुवाता	८३	१२६.	विप्राणां भूषणं	६
१०१.	माम्राता	८८	१२७.	विद्या नाम	८
१०२.	यस्य नास्ति	१७	१२८.	विद्वान् ऋजुमि	३०
१०३.	येषां न विद्या	१७	१२९.	वेदाम्यासस्ततो	४७
१०४.	यज्जाग्रतो दूरमुदैति	३३	१३०.	विद्यांचाविद्या	५७
१०५.	यथा नद्यस्स्यन्दमानाः	३४	१३१.	वदनं प्रसादसदनं	६८
१०६.	यं मातापितरौ	४२	१३२.	वेदमनूच्या	१५१
१०७.	यत्र नार्यस्तु	४६	१३३.	श्रियः प्रदुग्धे	१०
१०८.	योबन्धनबध	५०	१३४.	शास्त्रण्यधीत्यापि	१५
१०९.	यस्तु सर्वाणि	५६	१३५.	शास्त्र प्रयोजनं	२२
११०.	यत्प्रज्ञानमुत	७१	१३६.	शान्ता द्यौः	३९
१११.	यदीच्छसिवशे	११५	१३७.	शीलं प्रधानं	६१
११२.	ये हि संस्पर्शजा	१२०	१३८.	श्रुतं प्रज्ञानुगं	६४
११३.	यस्य नास्ति स्वयं	१२७	१३९.	शंनो मित्रः	८१
११४.	यथा ह्यनुदका	१३८	१४०.	शंसरस्वती	८२
११५.	यथा वृष्टिः	१३९	१४१.	शन्नो वातः	८६
११६.	यदग्ने पतसा	१७०	१४२.	शुभाशुभाम्यां	१३२
११७.	रिपौबंधौ	१०२	१४३.	सुमाषितेन	१
११८.	राज्ञो हि रक्षा	१३७	१४४.	संसारकटुवृक्षस्य	३
११९.	विदा मधवन्	७२	१४५.	सद्विद्या यदि	५
१२०.	विश्वानि देव	११९	१४६.	संयोजययति विद्यैव	११

क्र.सं.		सू.सं.	क्र.सं.		सू.सं.
१४७.	सत्यं ज्ञानमहिंसता	१४	१५९.	सहृदयं सांमनस्यं	८७
१४८.	सा विद्या यदि	२६	१६०.	सर्वे भवन्तु	९२
१४९.	संपूर्णकुंभो न	२८	१६१.	सूजनो न याति वैरं	९८
१५०.	स्वस्ति पन्था	३२	१६२.	सत्यं वृहद्	१०४
१५१.	सहनाववतु	३७	१६३.	सहसाविदधीत	१०९
१५२.	संगच्छध्वं	४०	१६४.	समाकुलेषु ज्ञानेषु	१२२
१५३.	सर्वेषामपि चेतेषां	४८	१६५.	सर्वेषामेव शोचानां	१४२
१५४.	सम्यग् दर्शनसंपन्नः	४९	१६६.	सुंदरोऽपि सुशीलोऽपि	१४३
१५५.	सत्यं ब्रूयात्	५१	१६७.	हिरण्येन पात्रेण	५८
१५६.	सत्यमेवजयते	७०	१६८.	हीनांगान् अतिरिक्तागान्	१४१
१५७.	सरसो विपरीत	७९	१६९.	क्षिप्रं विजानानि	६५
१५८.	स्वस्ति गोभ्यः	८५	१७०.	ज्ञानं तृतीयं	१५४

सूक्ति-अनुक्रमणिका

आचार्य खण्डः

क्र.सं.		सू.सं.	क्र.सं.		सू.सं.
१.	अग्निर्वृत्राणि	१९	२०.	त्वं देवि	३२
२.	अग्ने भव	२०	२१.	त्वयेदिन्द्र	३३
३.	अभि वो	२१	२२.	दधाति रत्नम्	३१
४.	आचार्यदेवो	१	२३.	न किष्ट एतव्रता	३४
५.	आचार्यो मृत्युः	२	२४.	न तेन वृदधो	११
६.	आचोर्या वेदसंपन्नो	६	२५.	पुत्रो न जाते	३५
७.	आयुष्यं वर्चस्यं	२२	२६.	प्रवृत्तवाक्	१४
८.	इन्द्रं कुत्सो	२३	२७.	बुद्धिः स्फूर्तिमती	१७
९.	इमे हि ते	२४	२८.	मुनीनां दशसाहस्रं	३६
१०.	उपनीय तु यः	१८	२९.	मेधां मे वरुणो	३७
११.	उतो हि त्वां	२५	३०.	यस्य देवे परा	५
१२.	उदीरतामवर	२६	३१.	यावज्जीवमधीते	१२
१३.	उपत्वा सादयो	२७	३२.	यथा घटप्रतिच्छन्ना	१६
१४.	एकमेवाक्षरं	३	३३.	विद्यार्थी सेवकः	४
१५.	कुलं च जातिः	२८	३४.	वृद्धा ह्यलोलुपाश्चैव	१०
१६.	गकारो ज्ञानसंपत्तौ	७	३५.	वितरति गुरुः	१३
१७.	गुशब्दस्त्वंधकारः	८	३६.	शिष्टा क्रिया	१५
१८.	गुरुर्नेत्रं गुरुर्दीपः	२९	३७.	स आवृणोत्यमृतं	९
१९.	ग्रावाण उपरेष्वा	३०			

शिक्षानीतिखण्डः

क्र.सं.		सू.सं.	क्र.सं.		सू.सं.
१.	असूयैकपदं मृत्युः	२	२४.	ऋषीषूत्क्रामत्सु	४४
२.	अशुश्रूषा त्वरा	८	२५.	एवं वर्णा प्रयोक्तव्या	९
३.	अनिर्वेदी श्रियो	१३	२६.	एते शिष्यगुणाः	४५
४.	अंजनस्य क्षयं	२४	२७.	किं तस्यज्ञानपसा	४६
५.	अन्नव्यञ्जनयोः	२६	२८.	गूरूणां पुरतो राज्ञो	७
६.	अहेरिव गणाद्भीतः	२८	२९.	गुरुशुश्रूषया विद्या	२१
७.	अदिवास्वापी	३१	३०.	गीर्भिर्गुरूणां	४७
८.	अच्छागिरो	३३	३१.	गूरूं शिष्यो नित्य	४८
९.	अतः संस्कारकरणे	३४	३२.	गुरुभ्य आसनं	४९
१०.	अन्यैव कापि	३५	३३.	गुारोर्यत्र परीवादो	५०
११.	आलस्यं मदमोहौ	३	३४.	चीयते वालिशस्यापि	५१
१२.	आचार्योपासनात्	१४	३५.	जलमभ्यासयोगेन	२२
१३.	आलस्यान्मूर्खसंयोगात्	१५	३६.	तद्ब्रूयात् तत्परं	५२
१४.	आत्मप्रशंसां परगर्हाम्	३२	३७.	तरणिरित् सिषासति	५३
१५.	आचार्यपुत्रः	३६	३८.	दण्डा इवेद्गो	५४
१६.	आचार्यश्च पिताचैव	३७	३९.	द्यूतं पुस्तकवाद्यञ्च	६
१७.	आचार्यस्य प्रियं	३८	४०.	धर्मशास्त्राणि वेदाश्च	५५
१८.	आचार्यस्य तज्जाड्यं	३९	४१.	न शठाः	५
१९.	आलस्येन हता	४०	४२.	न भोजनविलंबी	२९
२०.	ईशे ह्यग्निरमृतस्य	४१	४३.	न ते गिरो मृष्ये	५६
२१.	ऊर्ध्वं सहस्रादाम्नातं	१७	४४.	नयस्य विनयो	५७
२२.	ऊर्ध्वं प्राणा ह्युत्क्रामन्ति	४२	४५.	न स्तूयादात्मना	५८
२३.	ऋषियज्ञं देवयज्ञं	४३	४६.	पञ्च विद्यां न	४

क्र.सं.		सू.सं.	क्र.सं.		सू.सं.
४७.	पुस्तके प्रज्ञया	१९	५५.	लालयेत् पंचवर्षाणि	१
४८.	प्रतिश्रवणसंभाषे	५९	५६.	शनैर्विद्यां शनैः	१६
४९.	बुद्ध्या युक्त्या	६०	५७.	शुश्रूषारहिता विद्या	२०
५०.	यथाखरश्चन्दनभारवाही	१८	५८.	स्थाणुरयं	१०
५१.	यथा पिपीलिकाभिश्च	२३	५९.	सर्वतो	११
५२.	यथा खनन् खनित्रेण	२७	६०.	सर्वेषामनूत्सर्गो	३०
५३.	यः पठति लिखति	६१	६१.	हस्तौ सुसंयतौ	१२
५४.	यथा हि कनकं	६२	६२.	हयानामिव जात्यानाम्	२५

प्रकीर्णखण्डः

क्र.सं.		सू.सं.	क्र.सं.		सू.सं.
१.	अर्थनाशंमनस्तापं	२	२४.	चलत्येकेन पादेन	३४
२.	अवशेन्द्रियचित्तानां	४	२५.	जनिता चोपनेता	४८
३.	असंतुष्टा द्विजा	२४	२६.	जलबिंदुनिपातेन	४९
४.	अस्ति यद्यपि	६४	२७.	जले तैलं खले	५०
५.	अकीर्तिर्निन्द्यते	६५	२८.	जानन्ति पशवो	५१
६.	अकृत्वा पौरुषं या	६६	२९.	तृणान्ति नोन्मूलयति	१९
७.	अग्निं स्तोकमिवात्मानं	६७	३०.	त्यजेत् क्षुधार्त्ता	२९
८.	आत्मानं रथिनं विद्धि	१	३१.	त्यजेदेकं कुलस्यार्थे	४५
९.	आदानस्य प्रदानस्य	२२	३२.	तन्तुं तन्वन् रजसो	७३
१०.	आरभन्ते	३०	३३.	तृणानां शालयः	४५
११.	आब्रह्मन् ब्राह्मणो	६८	३४.	त्रीण्याहुरतिदानानि	७५
१२.	उदीरितोऽर्थः	४०	३५.	दुर्जन् प्रियवादी च	१५
१३.	एकः स्वादु न	४६	३६.	दुर्जनो नार्जवं	१८
१४.	कुसुमस्तबकस्येव	३५	३७.	दशकूपसमा	३८
१५.	कलिः शयानो	५४	३८.	धिक्तस्य	६
१६.	किं कुलेन विशालेन	५५	३९.	धन्यास्तेभारते	८
१७.	कटुक्वणन्तो	६९	४०.	धनेन किं यो न	२६
१८.	काचोमणिर्मणिः	७०	४१.	धर्मार्थं यस्य	२७
१९.	कात्यायनी चैव	७१	४२.	धनधान्यप्रयोगेषु	६२
२०.	किं तया क्रियते	७२	४३.	न सा सभा	२५
२१.	गर्भक्लेशः स्त्रियो	५	४४.	न साहसैकान्त	३१
२२.	चक्षुःपूतं न्यसेत् पादं	३२	४५.	न दातुं नोपभोक्तुं	५७
२३.	चलं चित्तं चलं क्तिं	३३	४६.	न बान्धवाः न च	७४

क्र.सं.		सू.सं.	क्र.सं.		सू.सं.
४७.	न ब्रह्मचार्यधीयीत	७७	६३.	यात्त्न्यायप्रवृत्तस्य	६१
४८.	नाभिषेको न संस्कारः	१०	६४.	राज्ञि धर्मिणि	५९
४९.	नारिकेलसमाकाराः	४४	६५.	लाङ्गूलचालनमधः	४१
५०.	पयः पानं भुजंगानां	१३	६६.	लुब्धमर्थेन गृह्णीयात्	२०
५१.	परोपदेशे पाण्डित्यं	४३	६७.	विपदि धैर्यमथा	१६
५२.	प्रियं ब्रूयादकृपणः	२३	६८.	विज्ञैः स्निग्धैः	१७
५३.	प्रियवाक्यप्रदानेन	६०	६९.	वृत्तं यत्नेन संरक्षेत्	५३
५४.	पृष्ठतः सेवयेदर्कं	९	७०.	विद्वत्त्वंच नृपत्त्वंच	६३
५५.	बालो वा यदिवा	४२	७१.	षट्कर्णो भिद्यते	११
५६.	भीतेभ्यश्चाभयंदेयं	५२	७२.	सुजीर्णभन्नं सुविचक्षणः	३
५७.	मनस्वी म्रियते	३६	७३.	स्नेहच्छेदेऽपि	२४
५८.	मात्रा स्वस्त्रा	३६	७४.	सुखमापतितं सेव्यं	२८
५९.	मातागुरुतरा	४७	७५.	साम्नैव यत्र सिद्धिन	५६
६०.	मुधाजातिविकल्पोऽयं	७	७६.	हीनसेवा न कर्त्तव्या	१२
६१.	यद्यप्युयायश्चत्वारो	२१	७७.	ज्ञाने कर्मष्यपगते	३९
६२.	यदि सन्ति गुणाः	५८			